Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI No. DLHIN/2012/483
वर्ष 13 । अंक 24
नई दिल्ली, बुधवार, 27 नवम्बर 2024
पृष्ठ 12 ₹ मूल्य 3
नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

स्पोर्ट्स 12

संघर्षों ने हर हालात का सामना करने का आत्मविश्वास दिया

संविधान मार्गदर्शक प्रकाश: प्रधानमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

संविधान को एक 'जीवित धारा' बताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि 'राष्ट्र प्रथम' की भावना संविधान को आने वाली सदियों तक जीवित रखेगी। 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा को दिए अपने समापन भाषण में राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद के शब्दों को याद करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उन्होंने कहा था कि भारत को ईमानदार लोगों के एक समूह से ज्यादा कुछ नहीं चाहिए जो देश के हितों को अपने हितों से ऊपर रखेंगे। सुप्रीम कोर्ट में संविधान दिवस समारोह को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि संविधान अब जम्मू-कश्मीर में पूरी तरह से लागू हो गया है और वहां पहली बार संविधान दिवस मनाया गया। मोदी ने कहा, 'हमारे संविधान निर्माता जानते थे कि भारत की आकांक्षाएं, भारत के सपने समय के साथ नई ऊंचाइयों पर पहुंचेंगे। वे जानते थे कि स्वतंत्र भारत और उसके नागरिकों की जरूरतें बदल जाएंगी, चुनौतियां बदल जाएंगी। इसीलिए उन्होंने हमारे संविधान को महज कानूनों की किताब बनाकर नहीं छोड़ा। बल्कि, उन्होंने इसे जीवंत, निरंतर बहने वाली धारा बना दिया।' उन्होंने कहा कि संविधान ऐसे समय में मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में काम कर रहा है, जब भारत परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। उन्होंने कहा, आज देश के हर नागरिक का एक ही लक्ष्य है, एक विकसित भारत का निर्माण करना। इस कार्यक्रम में कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और सुप्रीम

नई दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट में संविधान दिवस समारोह में बोलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

कोर्ट बार एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष कपिल सिब्बल समेत अन्य लोग मौजूद थे। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है और ऐसे महत्वपूर्ण समय में, यह भारत का संविधान है जो हमें रास्ता दिखा रहा है और हमारे लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश है। भारतीयों को त्वरित न्याय मिलना चाहिए, इस पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इसके लिए एक नई न्यायिक संहिता लागू की गई है। उन्होंने कहा, दंड आधारित प्रणाली अब न्याय आधारित प्रणाली में बदल गई है। अपने संबोधन के समापन पर हल्के-फुल्के अंदाज में बोलते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, मैंने संविधान द्वारा मुझे सौंपे गए कार्य की सीमाओं के भीतर रहने की कोशिश की है। मैंने कोई अतिक्रमण करने की कोशिश नहीं की है। मैंने सीमाओं के भीतर अपने विचार रखने की कोशिश की है। यहां केवल एक संकेत ही काफी है, ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है। भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने न्यायपालिका में लंबित मामलों, देरी, मुकदमेबाजी की लागत, न्याय तक पहुंच और व्यवस्था में विश्वास की कमी सहित चिंताओं को विस्तार से बताया। उन्होंने इनमें से कुछ मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की और उन्हें दूर करने के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने चेक बाउंसिंग के लंबित मामलों पर प्रकाश डाला, जो ट्रायल कोर्ट में लंबित मामलों का नौ प्रतिशत है। उन्होंने विधायी हस्तक्षेप की आवश्यकता वाले क्षेत्र के रूप में दलील सौदेबाजी, समझौता और परिवीक्षा की सीमित सफलता पर भी प्रकाश डाला।

सीजेआई खन्ना ने कहा, हमारे जिला न्यायालयों में चेक बाउंसिंग के लंबित मामलों की संख्या खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है - ट्रायल कोर्ट में लंबित मामलों का लगभग नौ प्रतिशत। डेटा से यह भी पता चलता है कि दलील सौदेबाजी एक गैर-शुरुआत रही है। समझौता और परिवीक्षा को स्वीकृति नहीं मिली है। शायद इनमें विधायी हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

सीजेआई ने न्यायिक कार्यबल और जेल की आबादी के बीच असमानता की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। जिला स्तर पर लगभग 20,000 न्यायाधीशों और 750 उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के साथ, न्यायपालिका 5.23 लाख की जेल की आबादी को संभालती है। उन्होंने कहा कि इस असमानता के बावजूद, डेटा कुशल केस हैंडलिंग को दर्शाता है। अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने कहा कि लोगों के अधिकारों और स्वतंत्रताओं के खिलाफ़ दमन या भेदभाव करने वाले प्रतिबंध एक 'स्थायी' संविधान के लिए अभिशाप हैं। वेंकटरमणी ने कहा, 'हम भारत के लोगों का यह कर्तव्य है कि हम यह सुनिश्चित करें कि संविधान कायम रहे और केवल एक स्थायी संविधान ही व्यवस्थित स्वतंत्रता की पटकथा लिख सकता है।' उन्होंने कहा, अधिकारों और स्वतंत्रताओं की अवधारणा या अधिकारों और स्वतंत्रताओं पर प्रतिबंध, जो दमन या भेदभाव करते हैं, एक स्थायी संविधान के लिए अभिशाप हैं। संविधान दिवस को समीक्षा का दिन और भविष्य की रूपरेखा पर विचार-विमर्श का अवसर बताते हुए वेंकटरमणि ने कहा कि सभी नागरिक 'भारत के महान और शाश्वत मूल्यों के संरक्षक होने के नाते' संविधान के भी संरक्षक हैं। उन्होंने कहा, 'हालांकि, सवाल हमेशा यही रहेगा कि हम संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका में कितने वफादार हैं? (शेष पृष्ठ 9)

बांग्लादेश में इस्कॉन भिक्षु की गिरफ्तारी पर भारत चिंतित

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली/कोलकाता

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हमलों पर कड़ी आपत्ति जताते हुए भारत ने मंगलवार को वहां हिंदू नेता चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी और जमानत न दिए जाने पर 'गहरी चिंता' व्यक्त की और वहां के अधिकारियों से हिंदुओं और सभी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह किया। बांग्लादेश पुलिस ने सोमवार को हिंदू समूह सम्मिलिता सनातनी जोत के नेता दास को ढाका के हजरत शाहजलाल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के इलाके से गिरफ्तार किया।

विदेश मंत्रालय (एमईए) ने एक बयान में कहा कि उसने दास की गिरफ्तारी और जमानत न दिए जाने पर 'गहरी चिंता' व्यक्त की है, जो बांग्लादेश सम्मिलिता सनातनी जोते के प्रवक्ता भी हैं। मंत्रालय ने कहा, 'यह घटना बांग्लादेश में चरमपंथी तत्वों द्वारा हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर कई हमलों के बाद हुई है।' विदेश मंत्रालय ने कहा कि अल्पसंख्यकों के घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में आगजनी और लूटपाट के साथ-साथ चोरी और तोड़फोड़ तथा देवताओं और मंदिरों को अपवित्र करने के मामले हैं। बयान में कहा गया है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन घटनाओं के अपराधी अभी भी फरार हैं, जबकि शांतिपूर्ण सभाओं के माध्यम से वैध मांगें प्रस्तुत करने वाले धार्मिक नेता के खिलाफ आरोप लगाए जाने चाहिए।

विदेश मंत्रालय ने दास की गिरफ्तारी के खिलाफ शांतिपूर्ण तरीके से विरोध कर रहे अल्पसंख्यकों पर हमलों पर भी चिंता व्यक्त की। इसमें कहा गया है, 'हम बांग्लादेश के अधिकारियों से हिंदुओं और सभी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह करते हैं, जिसमें शांतिपूर्ण सभा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उनका अधिकार भी शामिल है।' दास को कथित तौर पर देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया था और चटगांव मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट कोर्ट ने उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी। अदालत ने यह देखते हुए कि पुलिस ने दास की रिमांड का अनुरोध नहीं किया था, उन्हें न्यायिक हिरासत में स्थानांतरित करने का आदेश दिया। इसने यह भी निर्देश दिया कि हिरासत के दौरान उन्हें सभी धार्मिक विशेषाधिकार दिए जाएं।बांग्लादेशी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, चिन्मय दास को अक्टूबर में एक रैली के दौरान बांग्लादेशी झंडे का अपमान करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं ने इस्कॉन के चिन्मय दास को जमानत नहीं मिलने पर विरोध प्रदर्शन करने और पेट्रापोल सीमा को अवरुद्ध करने की योजना की घोषणा की है। इस्कॉन ने भारत सरकार से सीमा के बांग्लादेश के साथ इस मुद्दे को उठाने की अपील की है ताकि साधु की जल्द से जल्द रिहाई सुनिश्चित की जा सके। एक्स पर कड़े शब्दों में लिखे गए पोस्ट में वैष्णव संप्रदाय ने लिखा, हमें परेशान करने वाली खबरें मिली हैं कि इस्कॉन के प्रमुख नेताओं में से एक श्री चिन्मय कृष्ण दास को ढाका पुलिस ने हिरासत में लिया है... यह बेबुनियाद आरोप लगाना अपमानजनक है कि इस्कॉन का दुनिया में कहीं भी आतंकवाद से कोई लेना-देना है। (शेष पृष्ठ 9)

इस्कॉन भिक्षु कृष्ण दास प्रभु को दक्षिण-पूर्वी बांग्लादेश के चटगाँव में अदालत द्वारा आगे की कार्यवाही तक हिरासत में रखने के आदेश के बाद पुलिस वैन में ले जाया जा रहा है

महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा सौंपते शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे।

शिंदे का इस्तीफा, मुख्यमंत्री पर अभी फैसला नहीं

टीएन रघुनाथ। मुंबई

शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे ने मंगलवार को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया, जबकि राज्य विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के तीन दिन बाद भी उनके उत्तराधिकारी के बारे में सस्पेंस बना हुआ है। दिल्ली में केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने कहा कि भाजपा नेतृत्व ने तीसरी बार देवेंद्र फडणवीस को मुख्यमंत्री बनाने का फैसला किया है, लेकिन भाजपा की ओर से इस पर कोई पुष्टि नहीं की गई है। 26/11 आतंकी हमले के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए मुंबई पुलिस आयुक्त कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में मंगलवार सुबह शिंदे और फडणवीस एक साथ थे, लेकिन दोनों के बीच एक शब्द का भी आदान-प्रदान नहीं हुआ। शिंदे का इस्तीफा ऐसे समय में आया है जब शिवसेना के भीतर से ही यह मांग उठ रही है कि वे अपने पद पर बने रहें, क्योंकि विधानसभा चुनाव उनके नेतृत्व में लड़े गए और जीते गए। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार के साथ शिंदे ने मुख्यमंत्री पद से (शेष पृष्ठ 9)

अनियंत्रित हवाई यात्रियों से निपटने को रचनात्मक तरीके अपनाएं: सुप्रीम कोर्ट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को अनियंत्रित हवाई यात्रियों से निपटने के लिए रचनात्मक तरीके अपनाने को कहा, साथ ही केंद्र और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) को अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार अनियंत्रित हवाई यात्रियों को नियंत्रित करने के लिए अधिक व्यापक दिशा-निर्देश तैयार करने का निर्देश दिया। साथ ही कहा कि 'कुछ रचनात्मक' किया जाना चाहिए। जस्टिस बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की पीठ 73 वर्षीय एक महिला द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिस पर नवंबर, 2022 में एयर इंडिया की फ्लाइट में सवार एक पुरुष सह-यात्री ने कथित तौर पर नशे की हालत में पेशाब किया था। दिलचस्प बात यह है कि सुनवाई के दौरान जस्टिस विश्वनाथन ने एक अन्य सुप्रीम कोर्ट जज जस्टिस सूर्यकांत के साथ यात्रा करते समय एक फ्लाइट में नशे में धुत यात्रियों से जुड़ी एक घटना को याद किया। न्यायाधीश ने बताया, 'हवाई यात्रा के दौरान हाल ही में हमारे साथ एक अनुभव हुआ। दो पुरुष यात्री पूरी तरह से नशे में थे। एक वॉशरूम में जाकर सो गया। दूसरा, जो बाहर था उसके पास उल्टी करने के लिए एक बैग था। (शेष पृष्ठ 9)

हार पर ईवीएम में छेड़छाड़ जीते तो ठीक: सुप्रीम कोर्ट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को संकेत दिया कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के बारे में आलोचना में एक हद तक पाखंड जुड़ा हुआ है, उन्होंने कहा कि 'ईवीएम में तब छेड़छाड़ होती है जब आप हारते हैं और जीतते हैं तो सब ठीक।' यह मौखिक टिप्पणी जस्टिस विक्रम नाथ ने प्रचारक केए पॉल द्वारा दायर याचिका को खारिज करने से पहले की, जिन्होंने पेपर बैलेट पर वापस लौटने के लिए न्यायिक आदेश की मांग की थी। जब याचिकाकर्ता ने बताया कि चंद्रबाबू नायडू और वाईएस जगन मोहन रेड्डी जैसे प्रमुख नेताओं ने भी ईवीएम से छेड़छाड़ के बारे में चिंता जताई थी, तो सुप्रीम कोर्ट बेंच ने टिप्पणी की, 'जब चंद्रबाबू नायडू या श्री रेड्डी हार गए, तो उन्होंने कहा कि ईवीएम से छेड़छाड़ की गई थी और जब वे जीते, तो उन्होंने कुछ नहीं कहा। हम इसे कैसे देख सकते हैं? हम इसे खारिज कर रहे हैं। यह वह जगह नहीं है जहां आप इस सब पर बहस करें।' याचिकाकर्ता केए पॉल ने एलन मस्क की टिप्पणियों का संदर्भ दिया जिन्होंने सुझाव दिया था कि ईवीएम से छेड़छाड़ की जा सकती है। मतपत्र पर मतदान के अलावा, याचिका में कई दिशा-निर्देश मांगे गए हैं, जिसमें चुनाव आयोग को निर्देश देना शामिल है कि यदि कोई उम्मीदवार चुनाव के दौरान मतदाताओं को पैसे, शराब या अन्य भौतिक प्रलोभन बांटने का दोषी पाया जाता है, तो उसे कम से कम पांच साल के लिए अयोग्य घोषित किया जाए। जब याचिकाकर्ता केए पॉल ने कहा कि उन्होंने जनहित याचिका दायर की है, तो पीठ ने कहा, आपके पास दिलचस्प जनहित याचिकाएँ हैं। आपको ये शानदार विचार कैसे मिले? याचिकाकर्ता ने कहा कि वह एक ऐसे संगठन के अध्यक्ष हैं, जिसने तीन लाख से अधिक अनाथों और 40 लाख विधवाओं को बचाया है। पीठ ने कहा, 'आप इस राजनीतिक क्षेत्र में क्यों आ रहे हैं? आपका कार्य क्षेत्र बहुत अलग है।' पॉल द्वारा यह बताए जाने के बाद कि वह 150 से अधिक देशों में जा चुके हैं, पीठ ने उनसे पूछा कि क्या प्रत्येक देश में मतपत्र पर मतदान होता है या इलेक्ट्रॉनिक मतदान होता है। याचिकाकर्ता ने कहा कि विदेशी देशों ने मतपत्र पर मतदान को अपनाया है और भारत को भी ऐसा ही करना चाहिए। पीठ ने पूछा, 'आप बाकी दुनिया से अलग क्यों नहीं होना चाहते?' पॉल ने जवाब दिया कि भ्रष्टाचार था और जून 2024 में चुनाव आयोग ने घोषणा की कि उन्होंने 9,000 करोड़ रुपये जब्त किए हैं। लेकिन इससे आपकी राहत कैसे प्रासंगिक हो जाती है जिसका आप यहाँ दावा कर रहे हैं? पीठ ने पूछा, यदि आप भौतिक मतपत्र पर वापस जाते हैं, तो क्या कोई भ्रष्टाचार नहीं होगा? पॉल ने दावा किया कि टेस्ला के सीईओ और (शेष पृष्ठ 9)

जमीन पर बिखरे खिड़की के टूटे हुए शीशे।

रैपर बादशाह के बार के बाहर विस्फोट

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

चंडीगढ़ के सेक्टर 26 इलाके में मंगलवार सुबह दो बार-सह-लाउंज के बाहर कम तीव्रता वाले दो विस्फोट हुए, जिनमें से एक रैपर बादशाह का है। इनमें किसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। ये विस्फोट डि ओरा और सेविले के बाहर हुए। सेविले कथित तौर पर रैपर बादशाह के स्वामित्व में है। सूत्रों ने बताया कि विस्फोट से डि ओरा की खिड़कियों के शीशे क्षतिग्रस्त हो गए। क्षेत्र में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज में एक अज्ञात व्यक्ति बार-सह-लाउंज की ओर कुछ फेंकते हुए दिखाई दे रहा है तथा उसके बाद धुएं का गुबार उठता नजर आ रहा है। सूत्रों ने बताया कि दो संदिग्ध मोटरसाइकिल पर आए थे। पुलिस ने बताया कि उन्हें तड़के लगभग साढ़े तीन बजे इलाके से तेज आवाज आने की सूचना मिली। उसने बताया कि पुलिस दल ने घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद जूट की रस्सी के टुकड़े बरामद किए। पुलिस ने बताया कि केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला के एक दल ने नमूने एकत्र किए हैं और मामले की जांच जारी है। चंडीगढ़ के पुलिस उपाधीक्षक दिलबाग सिंह धालीवाल ने संवाददाताओं को बताया कि कॉल पर प्रतिक्रिया देने वाले जांच अधिकारी को घटनास्थल पर टूटे हुए शीशे मिले। धालीवाल ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और जांच जारी है। एक क्लब के कर्मचारी पूरन ने बताया कि हालांकि क्लब बंद था लेकिन घटना के समय क्लब के अंदर सात से आठ कर्मचारी मौजूद थे।

ड्यूटी पर डॉक्टर अब भी सुरक्षित नहीं

सौम्या शुक्ला। नई दिल्ली

सफदरजंग अस्पताल सहित दिल्ली सरकार के दो अस्पतालों में रेजिडेंट डॉक्टरों को उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जहां एक वरिष्ठ भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) अधिकारी ने कथित तौर पर अपनी पत्नी के इलाज को लेकर ड्यूटी पर मौजूद एक डॉक्टर के साथ मौखिक रूप से दुर्व्यवहार किया।हालांकि, दोनों मामलों में कोई पुलिस मामला दर्ज नहीं किया गया है, जबकि केंद्र सरकार ने कोलकाता में हुए आरजी कर बलात्कार और हत्या मामले के मद्देनजर देश के सभी सरकारी अस्पतालों के प्रमुखों को ड्यूटी पर मौजूद किसी भी स्वास्थ्यकर्मी के खिलाफ हिंसा की घटना के छह घंटे के भीतर संस्थागत एफआईआर दर्ज करने को कहा था। पहले मामले में, इस घटना के कारण आपातकालीन वार्ड में ऑपरेशन अस्थायी रूप से रोक दिए गए थे। पुडुचेरी में सशस्त्र पुलिस और प्रशिक्षण के उप महानिरीक्षक (डीआईजी) बृजेंद्र कुमार यादव की पत्नी को अस्पताल के स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर (एसआईसी) में सर्जरी के बाद पोस्टऑपरेटिव देखभाल के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

घटना को दिखाने वाले एक सीसीटीवी वीडियो में कथित तौर पर एक व्यक्ति - कथित तौर पर आईपीएस अधिकारी - गुस्से में डॉक्टर को इशारा करते हुए और उंगली से इशारा करते हुए दिखाई दे रहा है। हालांकि वीडियो में कोई आवाज़ नहीं थी, लेकिन उस व्यक्ति के हाव-भाव से स्पष्ट रूप से शत्रुता झलक रही थी। बाद में, सफ़दरजंग अस्पताल के रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन के आधिकारिक एक्स हैंडल ने घटना का एक ऑडियो क्लिप साझा किया। क्लिप में, एक व्यक्ति को यह कहते हुए सुना जा सकता है, 'मैंने आपसे दोगुना अध्ययन किया है, इसलिए आपको ऐसा मत समझिए कि आप अपरिहार्य हैं।' फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया मेडिकल एसोसिएशन (एफएआईएम) ने भी एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की, जिसमें सफ़दरजंग अस्पताल दिल्ली के जनरल सर्जरी पोस्टग्रेजुएट रेजिडेंट द्वारा ड्यूटी पर सामना किए गए मौखिक उत्पीड़न और धमकाने की घटना की

कड़ी निंदा की गई। संबंधित व्यक्ति, बृजेंद्र कुमार यादव (आईपीएस अधिकारी) बैच 2010 कैडर और मरीज अनीता रॉय (बिल्डिंग की सातवीं मंजिल पर भर्ती) के पति, ने ऐसा व्यवहार किया जो अपमानजनक और अस्वीकार्य दोनों था। इस तरह की हरकतें, विशेष रूप से एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी द्वारा, अत्यधिक निंदनीय हैं और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की गरिमा का उल्लंघन करती हैं जो मरीजों की सेवा करने के लिए अथक प्रयास करते हैं। उन्होंने यादव से माफ़ी की मांग करते हुए यह बात कही। जीटीबी अस्पताल में हुई एक अन्य घटना में, कथित तौर पर नशे में धुत एक पुरुष मरीज ने इलाज के दौरान न्यूरोसर्जरी विभाग में हंगामा किया, सामान तोड़ दिया और ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टरों को धमकाया। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज (यूसीएमएस) और जीटीबी अस्पताल के रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन के एक बयान के अनुसार, सोमवार शाम को एक मरीज जांच के दौरान हिंसक हो गया, उसने डॉक्टरों, नर्सों और ड्यूटी पर मौजूद कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार किया और उन पर हमला करने का प्रयास किया। इसमें कहा गया है कि मरीज ने केबिन के विभाजन को भी तोड़ दिया और कांच के फिक्स्चर को तोड़ दिया। आरडीए के अध्यक्ष रजत शर्मा ने कहा, न्यूरोसर्जरी विभाग में मौखिक दुर्व्यवहार की घटना हुई, जहां एक मरीज ने न केवल ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर के साथ दुर्व्यवहार (शेष पृष्ठ 9)

नोएडा की फैक्टरी में आग, तीन जिंदा जले

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा के थाना बीटा 2 क्षेत्र में स्थित साइट 4 की एक सोफा बनाने वाली फैक्ट्री में सुबह भीषण आग लग गई, जिसमें तीन कर्मचारियों की झुलसकर मौत हो गई। यह हादसा फैक्ट्री नंबर 4जी में हुआ, जब कर्मचारी सो रहे थे। मृतकों की पहचान 23 वर्षीय गुलफाम (निवासी मथुरा), 29 वर्षीय मजहर आलम (निवासी कटिहार, बिहार), और 24 वर्षीय दिलशाद (निवासी अररिया, बिहार) के रूप में हुई है। आग लगने की सूचना पर स्थानीय पुलिस और दमकल विभाग की टीम तुरंत मौके पर पहुंची। दमकल कर्मियों ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। एडीसीपी ग्रेटर नोएडा (शेष पृष्ठ 9)

मेवाड़ राजवंश के वंशजों के बीच अजब जंग

राजेश कुमार। नई दिल्ली/जयपुर

राजपूत शासक महाराणा प्रताप के वंशजों, जिन्होंने लगभग 450 साल पहले शक्तिशाली मुगल सम्राट अकबर के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, को अब उदयपुर में 'सिंहासन' पर बैठने की रस्में पूरी करने के लिए एक परिवार से निपटना पड़ रहा है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ को उनके चाचा अरविंद सिंह मेवाड़ और उनके बेटे लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने चुनौती दी, जिन्होंने कथित तौर पर उन्हें महल परिसर में धूनी (पवित्र अग्नि) मंदिर और फिर एकलिंगनाथ जी मंदिर में अनुष्ठान पूरा करने के लिए प्रवेश करने से मना कर दिया।

इसके कारण सोमवार रात को तीखी झड़प हुई, क्योंकि मेवाड़ के पूर्व शाही परिवार के दो गुटों के बीच तनाव बढ़ गया, जिसके परिणामस्वरूप पथराव हुआ, जिसमें कई लोग घायल हो गए और ऐतिहासिक सिटी पैलेस में गतिरोध हुआ। यह झड़प उस दिन चित्तौड़गढ़ किले में भाजपा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ के मेवाड़ के 77वें महाराणा के रूप में राज्याभिषेक के बाद हुई। मंगलवार को उदयपुर के जिला प्रशासन ने सिटी पैलेस के विवादित क्षेत्र के प्रबंधन के लिए रिसीवर नियुक्त किया। मामला अभी तक सुलझा नहीं है। हालांकि, जिला अधिकारियों ने बताया कि स्थिति नियंत्रण में है।

इस पूरे प्रकरण के मूल में संपत्ति विवाद है, जो जाहिर तौर पर वर्चस्व की लड़ाई में बदल गया है। सिटी पैलेस और एकलिंगनाथजी मंदिर अरविंद सिंह के नियंत्रण में हैं। ऐतिहासिक सिटी पैलेस के गेट पर विश्वराज सिंह और उनके चचेरे भाई डॉ. लक्ष्य राज सिंह मेवाड़ के बीच गतिरोध तब हुआ, जब विश्वराज सिंह मेवाड़ को महल में प्रवेश करने से मना कर दिया गया। महल अब उनके चचेरे भाई और चाचा श्रीजी अरविंद सिंह मेवाड़ द्वारा प्रबंधित ट्रस्ट द्वारा संचालित है। दिन चढ़ने के साथ ही विवाद बढ़ता गया। रात 10 बजे के बाद विधायक के समर्थकों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी और महल के गेट पर धावा बोलने की कोशिश की। अन्य लोग महल के अंदर से जवाबी कार्रवाई कर रहे हैं। (शेष पृष्ठ 9)

शहीदों को नमन

पुलिस अधिकारी अपने श्वानों के साथ 26/11 मुंबई आतंकवादी हमले की बरसी पर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए।

नमो भारत की पल-पल जानकारी ले सकेंगे यात्री

● आरआरटीएस कनेक्ट' ऐप पर लाइव ट्रेन ट्रैकिंग और पार्किंग की जानकारी का लाभ उठा सकते है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

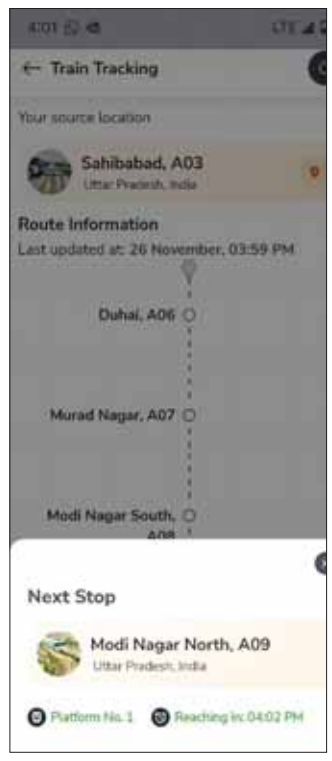

एनसीआरटीसी ने यात्री-सुविधा और यात्रा कुशलता को बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए, 'आरआरटीएस कनेक्ट' ऐप पर दो अग्रणी फीचर लॉन्च किए हैं। इस ऐप के माध्यम से नमो यात्री ट्रेन की पल-पल की जानकारी ले सकेंगे। नमो भारत ट्रेनों के यात्री अब लाइव ट्रेन ट्रैकिंग और लाइव पार्किंग स्टेटस का लाभ उठा सकते हैं, जो उन्हें नमो भारत ट्रेन की वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करेगा, जो उनके यात्रा अनुभव को आसान और अधिक कुशल बना देगा।

लाइव ट्रेन ट्रैकिंग फीचर यात्रियों को ट्रेन के आगमन की पल-पल अपडेट प्रदान करता है, जो नमो भारत ट्रेनों की सटीक स्थिति और स्थान भी दिखाता है। यह यात्रियों को अपनी यात्रा की योजना सटीकता से बनाने में सक्षम बनाता है, जिससे उन्हें पता चलता है कि अगली ट्रेन उनके स्टेशन पर कब आएगी।

ट्रेन के आगमन के समय के अलावा, यह सुविधा अगले स्टेशन के साथ-साथ दूरी और अनुमानित आगमन समय के बारे में भी जानकारी प्रदान करती है, जो यात्रियों की यात्रा सरल और अधिक कुशल बनाने में सहायक होंगी। लाइव पार्किंग स्टेटस सुविधा स्टेशनों पर पार्किंग स्थान की उपलब्धता पर वास्तविक समय में अपडेट प्रदान करेगी, जो यात्रियों के लिए पहली बार है।

यात्री अब पार्किंग स्थानों की वर्तमान व्यस्तता देख सकते हैं, जिससे उन्हें अपने वाहनों को कहाँ पार्क करना है, इस बारे में पहले से ही निर्णय लेने में मदद मिलती है। यह वास्तविक समय की दृश्यता उन लोगों के लिए एक गेम-चेंजर है जो स्टेशनों पर पार्किंग सुविधाओं पर निर्भर हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे बिना किसी अनावश्यक देरी के अपनी यात्रा की योजना बना सकते हैं।

दिल्ली से मेरठ तक नमो स्टेशनों पर 8,000 से अधिक वाहनों को समायोजित करने के लिए व्यापक पार्किंग सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। ये नई सुविधाएं 'आरआरटीएस कनेक्ट' ऐप में पहले से मौजूद फीचर्स, जैसे टिकट बुकिंग, स्टेशन नेविगेशन और लास्ट-माइल कनेक्टिविटी विकल्पों को और अधिक प्रभावी बनाती हैं।

ऐप पर फीडर बस सेवा, बाइक, ऑटो और कैब बुकिंग जैसे विकल्प भी उपलब्ध हैं, जो यात्रियों के लिए लास्ट-माइल कनेक्टिविटी की सुविधा सुनिश्चित करते हैं। इसके अतिरिक्त, स्टेशन सुविधाएँ सुविधा यात्रियों को स्टेशन की सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है, जिसमें पीने का पानी, शौचालय, लिफ्ट और एस्केलेटर शामिल हैं, साथ ही नेविगेशन में सहायता के लिए स्टेशन लेआउट भी शामिल है। ऐप किसी भी सहायता के लिए फ़ोन या व्हाट्सएप के माध्यम से स्टेशन नियंत्रण कक्ष से सीधे संचार की सुविधा भी देता है और इसमें खोई हुई वस्तुओं को वापस पाने में मदद करने के लिए खोया और पाया सुविधा भी शामिल है।

भारत में पहली बार लाइव ट्रेन ट्रैकिंग और पार्किंग स्थिति की शुरुआत करके न केवल सार्वजनिक परिवहन के लिए एक नया मानक स्थापित कर रहा है, बल्कि नमो भारत ट्रेन यात्रियों के लिए यात्रा के अनुभव को भी महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा रहा है।

ये सुविधाएँ आवागमन को आसान और अधिक पूर्वानुमानित बनाने के लिए डिजाइन की गई हैं, जो यात्रियों को एक ऐसा स्तर प्रदान करती हैं जो पहले कभी उपलब्ध नहीं था। वर्तमान में कॉरिडोर का 42 किलोमीटर हिस्सा यात्रियों के लिए परिचालित है, जिसमें नौ स्टेशन हैं- साहिबाबाद, गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई, दुहाई डिपो, मुराद नगर, मोदी नगर साउथ, मोदी नगर नॉर्थ और मेरठ साउथ।

न्यू अशोक नगर से साहिबाबाद तक के दिल्ली सेक्शन पर ट्रायल रन निर्बाध रूप से चल रहे हैं। एक बार यह सेक्शन चालू हो जाने के बाद, कॉरिडोर की कुल परिचालन लंबाई बढ़कर 54 किलोमीटर हो जाएगी। यह विस्तार आनंद विहार और न्यू अशोक नगर जैसे प्रमुख स्टेशनों को जोड़ेगा, जिससे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में यात्रियों के लिए पारगमन विकल्प काफी हद तक बढ़ जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

3 एस क्रिकेट अकादमी ने जीता खिताब

गाजियाबाद। एनपी शर्मा मेमोरियल कप का फाइनल वीवीआईपी स्टेडियम नेहरु नगर में संपन्न हुआ। फाइनल मैच में 3 एस क्रिकेट अकादमी ने जीता। फाइनल मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए इंस्पेर्शन अकादमी ने 33 ओवर मे 136 रन बनाये, जिसमें विशेष ने 33 शुभम ने 31 शशांक ने 20 रन बनाये। अंकुर ने 3, शारित, गौरव सिंह ने 2 / 2 विकेट लिए। जवाब में तीन एस क्रिकेट टीम ने 19 ओवर में 2 विकेट पर 139 रन बनाकर 8 विकेट से फाइनल जीता। अंकुर मैन आफ द मैच बने अक्ष मैन आफ द सीरीज बने। शारित यादव बेस्ट बॉलर परम बेस्ट बल्लेबाज बने। फाइनल मैच में श्याम सुंदर शर्मा, योगेश त्यागी ने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाया। मौके पर नमन शर्मा गौरव सिंह, दीपक त्यागी, शशांक त्यागी, मोनू त्यागी मौजूद रहे।

कंपनी की जांच की लिए ईओडब्ल्यू से अनुरोध

नोएडा। प्राधिकरण ने वित्तीय अनियमितता को देखते हुए मैसर्स लॉजिक्स सिटी डेवलपर्स प्राालि के खिलाफ बड़ा एक्शन लिया है। प्राधिकरण ने उक्त ग्रुप हाउसिंग भूखंड संख्या जीएच-2, सेक्टर-143, नोएडा ब्लासम जेस्ट और इसके मूल आवंटी प्रमोटर्स देवेन्द्र मोहन सक्सेना, शक्ति नाथ, विकम नाथ एवं मीना नाथ है। इन लोगों के खिलाफ आर्थिक अपराध शाखा दिल्ली को पत्र लिखकर कार्रवाई करने के लिए अनुरोध किया है। प्राधिकरण ने बताया कि प्रमोटर्स को 100080.98 वर्गमीटर प्लाट का आवंटन 08 अप्रैल 2011 को किया गया था। लीज डीड करते हुए 14 जून 2011 को आंवटी को कब्जा दिया गया। आवंटी द्वारा भूखंड के सापेक्ष बकाया धनराशि जमा नहीं कराई। इस सम्बन्ध में समय-समय पर आवंटी को धनराशि जमा कराने के लिए नोटिस जारी किए गए। लेकिन फिर भी आवंटी द्वारा भूखंड की लागत को जमा नहीं किया गया। और न ही निर्माण कार्य किया गया। यही नहीं उक्त परियोजना के फ्लैट बेचकर तृतीय पक्षीय अधिकार सृजित किए गए। परियोजना से प्राप्त धनराशि को प्राधिकरण में जमा न कराते हुए अन्यत्र प्रयोग किया गया। जिसके कारण फ्लैट बायर्स को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही प्राधिकरण को भी वित्तीय नुकसान पहुंचाया गया। इन सभी विसंगतियों के कारण प्राधिकरण द्वारा सोमवार को इनके विरूद्ध अपराध शाखा, दिल्ली के समक्ष शिकायत दर्ज कराते हुए इनके विरूद्ध जांच कराने का अनुरोध किया गया है।

बुजुर्ग ने स्टेज-4 कैंसर को दी मात

गाजियबाद। गाजीपुर के रहने वाले बुजुर्ग सरदार सिंह यादव स्टेज-4 कैंसर को मात देकर उन कैंसर रोगियों के लिए उम्मीद की कारण जगाई है। सरदार सिंह बोन बोन मैरो में हॉजकिन लिम्फोमा कैंसर से जूझ रहे थे। सही जांच और इलाज के बाद अब वह पूरी तरह से स्वस्थ हैं। फोर्टिस ग्रेटर नोएडा में एसोसिएट कंसल्टेंट ऑन्कोलॉजी, डॉ. अभिषेक श्रीवास्तव ने कहा, स्टेज-4 में बोन मैरो के कैंसर के साथ हॉजकिन लिम्फोमा बहुत आम है, लेकिन यादव के केस में यह असामान्य और आक्रामक रूप में मौजूद था। मेडिकल ऑन्कोलॉजी कंसल्टेंट, डॉ. सरिका बंसल ने बताया कि यादव ने कहा कि जांच के नतीजों के बाद, मेडिकल ऑन्कोलॉजी टीम ने एक उपचार के लिए एक विस्तृत योजना बनाई। मार्च में यादव की पहली कीमोथेरेपी शुरू की गई। सीईओ, डॉ. प्रवीण कुमार ने बताया, हम उन्नत चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

खड़े छह वाहनों में लगी आग, शार्ट सर्किट से हादसे की आशंका

नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में रात में आग का तांडव देखने को मिला, जहां पार्किंग में खड़ी हुई एक गाड़ी में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई और उसके बाद यह आग लगातार बढ़ती चली गई और वहां पर खड़ी हुई अन्य गाड़ियां भी इसकी चपेट में आ गईं। इस दौरान आधा दर्जन वाहन जलकर राख हो गए। सूचना के बाद दमकल विभाग की गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया गया। बिसरख थाना क्षेत्र के अंतर्गत मयूर गोल्ड अपार्टमेंट बालाजी एनक्लेव में रात में अचानक ग्राउंड फ्लोर पर खड़ी हुई गाड़ी में आग लग गई। यह आग रात में करीब 1 बजे लगी। इस दौरान सभी लोग सोए हुए थे जैसे ही आग लगी अफरा तफरी का माहौल हो गया और लोग उस आग को बुझाने की कोशिश करने लगे। आग तेजी से लगातार बढ़ती चली गई और उसने पास में खड़ी हुई एक अन्य कार, दो मोटरसाइकिल और एक स्कूटी को भी अपनी आगोश में ले लिया। दमकल विभाग की गाड़ी और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया गया लेकिन तब तक इस आग में दो कार ,दो मोटरसाइकिल, एक स्कूटी और एक स्कूटर पूरी तरह जलकर राख हो गए।

रेलवे अधिकारी से साइबर ठगी

● शेयर बाजार में निवेश करने का झांसा देकर तीस लाख ठगे

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

साइबर ठगों ने ग्रेटर नोएडा वेस्ट की एक सोसाइटी में रहने वाले रेलवे अधिकारी से 30 लाख रुपए की ठगी कर ली। शेयर बाजार में निवेश कर मोटा मुनाफा के झांसे में आकर पीड़ित एक माह पहले ठगों के संपर्क में आए थे। पीड़ति ने साइबर क्राइम थाने में पहुंचकर शिकायत दी।

पुलिस ठगों की पहचान और तलाश में जुटी है। रेलवे अधिकारी ने साइबर क्राइम थाने में दी शिकायत में बताया कि करीब एक महीने पहले उनके मोबाइल के वॉट्सऐप पर एक मैसेज आया था। मैसेज में शेयर बाजार में निवेश संबंधी जानकारी थी। उन्होंने दिये मोबाइल नंबर पर संपर्क किया तो ठगों ने शेयर बाजार के एक्सपर्ट से प्रशिक्षण दिलाकर मोटा मुनाफा कमाने का लाभ दिलाने के बारे में बताया। उनका नंबर एक वॉट्सऐप ग्रुप पर जोड़ दिया। ऑनलाइन क्लास देकर प्रशिक्षण देना शुरू किया। ग्रुप में लोगों के रिव्यू भी स्क्रीन शाट के माध्यम से साझा किये। रोजाना 10-20 ब्र तक लाभ होने पर यकीन होने लगा। कंपनी की एप पर खाता भी खोल दिया गया। प्रशिक्षण देकर छोटा-छोटा निवेश कराना शुरू किया। शुरुआत में एप से रुपए अपने खाते में ट्रांसफर किये तो पूरी धनराशि बैंक खाते में आ गई। इससे कंपनी पर विश्वास होने गया। रेलवे अधिकारी ने कभी एक लाख तो कभी पांच लाख रुपए तक निवेश करना शुरू किया। इस तरह से 30 लाख रुपए निवेश कर दिये। रुपया की जरूरत होने पर कुछ धनराशि निकालनी चाही लेकिन निकासी के लिए टैक्स के रूप में अतिरिक्त धनराशि की मांग की गई। रेलवे अधिकारी को अपने साथ ठगी होने का एहसास हुआ तो ठगों ने संपर्क बंद कर लिया। उन्होंने तत्काल साइबर हैल्प डेस्क नंबर पर शिकायत की और सोमवार को साइबर क्राइम थाने पहुंचकर लिखित में शिकायत की। पीड़ति ने बताया कि उन्होंने ठगों के बताए बैंक खातों में धनराशि भेजी। उन्होंने 30 लाख रुपए की धनराशि 20 बार में ठगों के बताए खातों में डाली।

चाइल्ड पीजीआई में हड़ताल पर अस्थाई कर्मी

● कंपनी ने पिछले छह साल से नहीं बढ़ाया था वेतन, चल रहे थे नाराज

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा के चाइल्ड पीजीआई में 150 सौ स्वास्थ्य कर्मी वेतन में बढ़ोतरी और अन्य मांगो को लेकर हड़ताल पर चले गए है। हालांकि आपातकालीन सेवाएं इससे प्रभावित नहीं है। आपातकालीन सेवा निरंतर जारी है।

चाइल्ड पीजीआई के सामने धरने पर बैठे स्वास्थ्यकर्मी का कहना है कि पिछले करीब 6 साल से उनका वेतन नहीं बढ़ाया गया है। हड़ताल के चलते पीजीआई की स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित हो रही है। जिससे आने वाले मरीजों को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। चाइल्ड पीजीआई में धरने पर बैठे स्वास्थ्य कर्मी को कंपनी के जरिए 6 साल पहले काम पर रखा गया था। कर्मचारियों का कहना है कि एजेंसी ने कहा था कि हर साल 5 प्रतिशत वेतन में बढ़ोतरी की जाएगी। इसके लिए अस्पताल प्रबंधन को पत्र भी लिखा गया था। छह साल बीत जाने के बाद भी उन्हे बढ़ा हुआ वेतन नहीं मिला है और न ही ज्वाइनिंग लेटर दिया गया। इस संबंध में एजेंसी और अस्पताल प्रबंधन को कई बार पत्र लिखा गया और आश्वासन भी मिला। लेकिन अब तक कोई कार्यवाही हुई, मजबूरन हमें हड़ताल करनी पड़ रही है।

चाइल्ड पीजीआई में फार्मासिस्ट पद पर तैनात सुमित कहते है कि हमारी मांगे पूरी नहीं हो रही है। हमसे कहा गया था कि हर साल सैलरी 5ब्र बढ़ेगी, लेकिन छह साल से नहीं बढ़ी है। न हमारा पीएफ कटता है ना ही जॉइनिंग लेटर दिया जा रहा है।

जॉइनिंग लेटर देंगे तो पता चलेगा हमारी सैलरी कितनी है। बता दे चाइल्ड पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टिट्यूट में इस समय एजेंसी के माध्यम से 140 टेक्नीशियन, नर्सिंग स्टाफ, वार्ड ब्वॉय आदि कार्यरत हैं। संविदा पर कार्यरत कर्मचारियों के अलावा अस्पताल में 60 से अधिक स्थायी कर्मचारी भी कार्यरत हैं।

गाजियाबाद में मंदिर की दीवार तोड़ने पर हंगामा

गाजियाबाद। मोदीनगर -हापुड़ मार्ग स्थित मंगल विहार कॉलोनी में रास्ता बनाने के लिए मंदिर की दीवार तोड़ने को लेकर हंगामा हो गया। कॉलोनी के लोगों ने हंगामा कर कॉलोनीनाइजर के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। उपजिलाधिकारी ने मौके पर पहुंचकर जांच कराने का आदेश दिए हैं।

मोदीनगर- हापुड़ मार्ग पर मंगल विहार स्थित है। बताया जा रहा है कि कॉलोनी के पीछे एक अन्य कॉलोनी भी काटी जा रही है। आरोप है कि कॉलोनी नाइजर मंगल विहार कॉलोनी से अपनी कॉलोनी के लिए रास्ता बनाने का प्रयास कर रहे हैं। आरोप है कि देर रात कॉलोनी मंदिर की दीवार तोड़ दी।

गाजियाबाद व नोएडा में संविधान दिवस मनाया

● डीएम इंद्र विक्रम सिंह व अन्य कर्मचारियों ने डॉ.भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

संविधान दिवस के अवसर पर पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने पुलिसकर्मियों को संविधान की शपथ दिलाई ।

गाजियाबाद में महात्मा गांधी सभागार में मंगलवार को संविधान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान संविधान दिवस के अवसर पर संविधान की उद्देशिका पाठन कार्यक्रम लोक भवन सभागार, लखनऊ में सीएम योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में पूरा हुआ। जिसका लाइव प्रसारण कार्यक्रम जिलाधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार गाजियाबाद में देखा गया। इस अवसर पर सभी अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

इस मौके पर सबसे पहले डीएम इंद्र विक्रम सिंह व फिर अन्य कर्मचारियों द्वारा डॉ.भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गयी। इसके बाद जिलाधिकारी महोदय द्वारा संविधान की उद्देशिका पाठन किया गया जिसमें उन्होने कहा कि हम, भारत के लोग, भारत को एक (सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य) बनाने के लिए। तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और (राष्ट्र की एकता और अखंडता) सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर आत्म समर्पित करते हैं। डीएम ने सभी को शपथ दिलाई गयी, जिसमें शपथ ली कि हम सत्य निष्ठा से प्रतिज्ञान करते हैं कि भारत के संविधान में दिए गए मूल कर्तव्यों का पालन करेंगे। संवैधानिक आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज व राष्ट्रीय प्रतीकों का आदर करेंगे। देश की संप्रभुता अखंडता की रक्षा करेंगे।

महिलाओं का सम्मान करेंगे। हिंसा से दूर रहकर बंधुता बढ़ाएगें। सामाजिक संस्कृति का संवर्द्धन व पर्यावरण का संरक्षण करेंगे। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करेंगे। सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करेंगे। व्यक्तिगत व सामूहिक गतिविधि में उत्कृष्टता बढ़ाएगें। सबको शिक्षा के अवसर प्रदान करेंगे एवं स्वतंत्रता आन्दोलन के आदर्शों को बढ़ावा देंगे। एडीएम रणविजय सिंह ने संविधान को बनाने के समय पर प्रकाश डालते हुए अनेक जानकारी दी कि किस प्रकार व कितनी गम्भीर परिस्थितयां होने पर भी डॉ.भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता व समिति के सदस्यों द्वारा श्रेष्ठ, स्वतंत्र, निष्पक्ष संविधान को बनाने का कार्य किया गया। कार्यक्रम में एडीएम सौरभ भट्ट, सिटी मजिस्ट्रेट डॉ. संतोष कुमार उपाध्याय, एआईजी स्टाम्प पुष्पेन्द्र, एसडीएम चंद्रेश चन्द्रेश, अमित कुमार, वाईपी सिंह व अन्य रहे।

छात्रों-शिक्षकों ने पढ़ा संविधान की उद्देशिका के पाठ

नोएडा। सेक्टर-62 स्थित आईएमएस नोएडा में संविधान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। संस्थान द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बीए.एलएलबी, बीकॉम. एलएलबी, एलएलबी, एमबीए एवं एमसीए के छात्रों ने हिस्सा लिया। आईएमएस लॉ कॉलेज ने नेतृत्व में आज के कार्यक्रम में बतौर अतिथि उच्चतम न्यायालय के एडवोकेट ऑन रिकार्ड मोहम्मद शाहिद अनवर ने अपने विचार प्रकट किए। वहीं कार्यक्रम के दौरान आईएमएस नोएडा के महानिदेशक प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन के साथ संस्थान के शिक्षक एवं छात्रों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम की शुरुआत संविधान की उद्देशिका के पाठ से हुई, जिसे छात्रों और शिक्षकों ने मिलकर पढ़ा। इसके बाद आईएमएस नोएडा के महानिदेशक प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन ने अपने संबोधन में भारतीय संविधान के महत्व और इसके सार्वभौमिक मूल्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह दुनिया का सबसे बड़ा और व्यापक संविधान है, जो सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय प्रदान करता है। हम सभी को भारतीय संविधान के महत्व को समझना और इसके मूल्यों को अपने जीवन में उतारना आवश्यक है। मुख्य वक्ता अनवर ने छात्रों को संबोधित करते हुए भारतीय संविधान की जटिलताओं और इसके महत्व पर चर्चा की। उन्होंने पंजाब राज्य और अन्य बनाम दविंदर सिंह और अन्य सिविल अपील संख्या 2317 का जिक्र करते हुए आरक्षण लाभ के लिए अनुसूचित जाति के भीतर उप-वर्गीकरण की भी चर्चा की।

वकील बोले- आंदोलन अभी खत्म नहीं हुआ

गाजियाबाद। गाजियाबाद में वकीलों का प्रदर्शन अभी जारी रहेगा, एक दिन पहले बार ने हड़ताल खत्म करने का निर्णय लिया। लेकिन वकील बार के खिलाफ आक्रोशित हो गए। जिसमें वकीलों ने कहा कि हमारी मांग जब तक पूरी नहीं होती तब तक हमारा आंदोलन जारी रहेगा। जो भी हमारी मांग हैं जब तक वह पूरी नहीं होती हम अपने आंदोलन को लेकर आगे बढ़ाते रहेंगे। वकीलों ने कहा कि जब तक जिला जज अनिल कुमार नहीं हटाए जाएंगे हम धरना प्रदर्शन व आंदोलन करते रहेंगे। जिला जज के निलंबन की भी मां गकी। वकीलों ने अपनी मांगों को लेकर बैनर लगा दिए। दूसरी मांग लाठीचार्ज करने वाले पुलिसकर्मियों पर निलंबन की कार्रवाई की मांग रखी।

दुनिया की फार्मेसी में भारत के बढ़ते कदम

● ग्रेटर नोएडा में शुरू हुआ फार्मा उद्योग से जुड़ा एक्सपो

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

दवाओं के क्षेत्र में भारत विश्व शक्ति की ओर तेजी से बढ़ रहा है। फार्मा क्षेत्र में निरंतर हो रही वृद्धि के प्रमुख कारणों में भारतीय फार्मा कंपनियों द्वारा एक मजबूत वैश्विक छवि गढ़ना है। ग्रेटर नोएडा एक्सपो सेंटर में इन्फोर्मा मार्केट्स इंडिया द्वारा आयोजित सीपीएचआई और पी-मेक इंडिया के 17वें संस्करण में इन्फोर्मा मार्केट्स इंडिया के प्रबंध निदेशक योगेश मुद्रास ने एक संवाददाता सम्मेलन में दी। उन्होंने बताया कि अमेरिका, यूएई, दक्षिण कोरिया, जापान और यूनाइटेड किंगडम सहित 120 से अधिक देशों के 2,000 से अधिक प्रदर्शकों और 50,000 से अधिक विजिटर्स को एक साथ लाते हुए, यह एक्सपो नवाचार और सहयोग के लिए एक गतिशील केंद्र के रूप में कार्य करता है। फार्मा मशीनरी, पैकेजिंग, विश्लेषणात्मक उपकरण, प्रयोगशाला प्रौद्योगिकियों, सामग्री और अन्य से लेकर, यह हितधारकों को परिवर्तनकारी बातचीत में शामिल होने और रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करता है। इस मौके पर मौजूद फार्मेक्सिल के महानिदेशक के.राजा भानु ने बताया कि बताया कि विश्व में फार्मा क्षेत्र में नियम कायदे का पालन बहुत होता है। इस अवसर पर हरीश के. जैन, अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ फार्मा उद्यमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरीश के जैन, फार्मेक्सिल के उपाध्यक्ष नमित जोशी आदि भी मौजूद रहे।

प्राधिकरण ने लगाई प्रॉपर्टी डीलरों की धांधली पर रोक

● प्रॉपर्टी ट्रांसफर निलंबित कराने पर जब्त होगी पूरी रकम, पहले सिर्फ काटते थे प्रोसेसिंग फीस

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में प्रॉपर्टी ट्रांसफर (टीएम) कराने के नियमों में बदलाव किया गया है। अब तक टीएम कैंसिल कराने पर टीएम चार्ज का 2.5 प्रतिशत पैसा काटकर आवेदक को पूरा पैसा वापस कर दिया जाता था। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

टीएम कैंसिल कराने पर आवेदक का पूरा टीएम चार्ज प्राधिकरण जब्त कर लेगा। नियमों में बदलाव प्रॉपर्टी डीलरों की धांधली को बंद करने के लिए किया गया। नोएडा की जमीन बेश कीमती है।

यहां हर कोई आशियाना बनान चाहते है। प्राधिकरण के इस लूप होल का फायदा प्रॉपर्टी डीलर जमकर उठा रहे थे। दरअसल प्रॉपर्टी डीलर बाजार में किसी जरूरत मंद से सस्ती दरों पर जमीन या फ्लैट खरीदते है। एक बार फ्लैट या जमीन खरीदने पर डीलर को प्रॉपर्टी अपने नाम ट्रांसफर करानी होती है। इसे ही प्रॉपर्टी का टीएम यानी ट्रांसफर ऑफ मैमोरैंडम कहते है। इसके लिए टीएम कराने वाले आवेदक को प्राधिकरण में खरीदी गई कुल प्रॉपर्टी की लागत का 2.5 प्रतिशत देकर टीएम कराना होता है। नियम ये कहता है कि एक बार टीएम होने के बाद 60 दिन के अंदर रजिस्ट्री करवानी होती है। यानी दो महीने का समय प्रॉपर्टी डीलर के पास रहता है। इसका फायदा प्रॉपर्टी डीलर उठाते है। इस दौरान वह किसी अन्य ग्राहक को प्रॉपर्टी बेच देते है। इसके बाद प्राधिकरण में टीएम कैंसिल करने का आवेदन करते है। प्राधिकरण टीएम के रूप में जमा की गई राशि में से 2.5 प्रतिशत प्रोसेसिंग चार्ज काट कर डीलर को पूरा पैसा वापस कर देता है। जिससे डीलर को डबल फायदा होता है। एक तो उसने सस्ती जमीन महंगे दामों में बेची दूसरा उनका टीएम चार्ज भी बच गया। अब डीलर ऐसा नहीं कर सकेंगे। मसलन यदि बिना रजिस्ट्री कराए डीलर टीएम कैंसिल कराने के लिए आवेदन करता है तो उसका पूरा टीएम चार्ज जब्त कर लिया जाएगा। बता दे नोएडा में रोजाना करीब 15 से 20 टीम होते है।

प्राधिकरण की कमाई का एक ज़रिया भी यही है। साथ ही डीलरों ने इस लूप होल को अपने लिए कमाई का ज़रिया बना लिया था। प्राधिकरण अधिकारी ने बताया कि नए नियम से भ्रष्टाचार में कमी आएगी।

एलजी ने नशे के खिलाफ किया जंग का ऐलान

राजधानी को 3 साल में नशा मुक्त बनाने का लक्ष्य, 1 दिसंबर, से एक महीने तक चलेगा नशा विरोधी अभियान

कॉलेजों, दवा की दुकानों और रेस्तरां, बस स्टॉप, रेलवे स्टेशनों, आईएसबीटी की गहन जांच के दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

नशे के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए राष्ट्रीय राजधानी में नशे के खिलाफ मुहिम चलेगी। दिल्ली को 3 साल में नशा मुक्त बनाने का लक्ष्य तय किया गया है। इस दौरान नशीले पदार्थों की रोकथाम के लिए एक दिसंबर से विशेष मुहिम चलाई जाएगी। जिसके तहत उपराज्यपाल ने स्कूलों, कॉलेजों, दवाओं और पान की दुकानों, शेल्टर होम्स, बार और रेस्तरां, बस स्टॉप, रेलवे स्टेशनों, सभी आईएसबीटी और दूसरे सार्वजनिक स्थलों की गहन जांच करने और इन्हें साफ-सुथरा रखने का निर्देश दिया है।

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने मुहिम का ऐलन करते हुए कहा कि शैक्षणिक परिसारों को नशा मुक्त वातावरण सुनिश्चित करने के लिए सभी शैक्षणिक संस्थान एक नोडल अधिकारी नियुक्त करेंगे और होस्टल्स के वार्डन्स को इसके लिए निजी तौर पर जवाबदेह ठहराया जाएगा। उपराज्यपाल कार्यालय के एक अधिकारी ने कहा कि नशीली दवाओं के दुरुपयोग के लगातार बढ़ते खतरे से निपटने के लिए, एलजी सक्सेना ने, राजधानी में व्यापक तौर पर एक महीने के लिए नशा विरोधी अभियान चलाने की घोषणा की है, जिसकी शुरुआत 1 दिसंबर से होगी। उनके द्वारा की गई यह आक्रामक पहल, अगले तीन वर्षों के भीतर दिल्ली को नशा मुक्त बनाने की एक बड़ी योजना का हिस्सा है, जो देश को नशा मुक्त बनाने के निर्धारित लक्ष्य से काफी आगे है। सक्सेना ने, राज्य स्तरीय समिति नार्को कोऑर्डिनेशन सेंटर की 9वीं समीक्षा बैठक के दौरान इस बात पर जोर दिया कि इसका एक सामाजिक पहलू युवाओं के स्वास्थ्य पर पड़ता प्रतिकूल प्रभाव है और साथ ही एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय पहलू भी है। नशीली दवाओं का उपयोग रणनीतिक रूप से भारत के युवाओं और देश को कमजोर करने के लिए किया जा रहा है। दिल्ली पुलिस को अन्य संबंधित एजेंसियों के साथ मिलकर, मादक पदार्थों की तस्करी और खपत पर अंकुश लगाने के अपने प्रयासों को तेज करने का निर्देश दिया।

इस अभियान में बहु-आयामी दृष्टिकोण शामिल होंगे।उपराज्यपाल ने दिल्ली पुलिस और दूसरी सभी संबंधित एजेंसियों को इस एक महीने के अभियान के दौरान लगभग 200 होस्टलों, 50 कॉलेजों, 200 स्कूलों, 200 दवाओं की दुकानों, 500 पान की दुकानों, सभी शेल्टर होम्स, 200 बार और रेस्तरां, सभी रेलवे स्टेशनों, सभी आईएसबीटी और दूसरे सार्वजनिक स्थलों की गहनता से जांच करने और उन्हें साफ-सुथ रारखने का भी निर्देश दिया है। इसके अलावा कैंपस में नशा मुक्त वातावरण सुनिश्चित करने के लिए नोडल अधिकारी नामित किए जाएंगे और शैक्षणिक संस्थानों में होस्टल्स को नशा मुक्त सुनिश्चित करने के लिए वार्डन को जवाबदेह बनाया जाएगा।

एलजी ने समाज कल्याण विभाग को शामिल कर शिक्षकों और अभिभावकों को परामर्श भेजने के निर्देश दिए हैं। समाज कल्याण विभाग स्कूलों और अभिभावकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़कर उन्हें नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खतरों के बारे में शिक्षित करेगा और उन्हें अपने बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

एसएफएल एक महीने में जांच करेगी पूरी

फोरेंसिक साइंस लैब दिल्ली के निदेशक को लंबित मामलों के निपटारे में तेजी लाने का निर्देश दिया गया है, जो नशीली दवाओं से संबंधित अपराधों में अभियोजन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे। एफएसएल, जिसके पास पिछले 9-12 महीनों से 1260 मामले लंबित थे, उपराज्यपाल के हस्तक्षेप से मामलों को घटाकर 290 तक लाने में सक्षम हुआ है। एलजी ने सोमवार को एफएसएल को निर्देश दिया कि शेष 290 मामलों में विश्लेषण पूरा किया जाए और एक महीने के भीतर इनका निपटान कर शून्य लंबितता सुनिश्चित की जाए। इन कड़े उपायों को लागू करने का मकसद नशीली दवाओं के नेटवर्क को खत्म करना है।

शहर भर में बसों, पोस्टर व बैनर प्रमुखता से किए जाएंगे प्रदर्शित

उपराज्यपाल ने दिल्ली पुलिस से मुखबिरों की पहचान को गोपनीय रखते हुए, बड़े पैमाने पर युवाओं को जागरूक करने और उनके लिए आकर्षक पुरस्कारों की घोषणा करने को कहा है। उन्होंने यह भी निर्देश दिया किन शीली दवाओं और नशीले पदार्थों के उपयोग के हानिकारक प्रभावों के खिलाफ पूरी दिल्ली में, डीटीसी बसों में, ऑटो-रिक्शा और टैक्सियों पर नारे, पोस्टर और बैनर को प्रमुखता से लगाया जाएगा। दिल्ली को नशा मुक्त बनाने के लिए टेलीविजन, रेडियो, सोशल मीडिया और आउटडोर विज्ञापन सहित विभिन्न चैनलों के माध्यम से जन जागरूकता अभियान शुरू किए जाएंगे। नशीली दवाओं के दुरुपयोग के हानिकारक प्रभावों के बारे में जनता को जागरूक करने के लिए शहर भर में और डीटीसी बसों और अन्य सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों में नारे, पोस्टर और बैनर प्रमुखता से प्रदर्शित किए जाएंगे।

संविधान किसी भी सफल लोकतंत्र का वाहक है: रामनिवास गोयल

विस अध्यक्ष ने अधिकारियों और कर्मचारियों को दिलाई संविधान की शपथ

संविधान की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर शपथ दिलाते विस अध्यक्ष व अन्य।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत के संविधान की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर विधानसभा और दिल्ली विश्वविद्यालय में संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने विस के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को संविधान की शपथ भी दिलाई। डीयू के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि यह भारतीय संविधान की ताकत ही है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा और प्रभावी लोकतन्त्र बना है। संविधान ने सदा देश की एकता और अखंडता को कायम रखा है।

राम निवास गोयल ने लोकतंत्र में संविधान की उपयोगिता का जिक्र करते हुए कहा की संविधान हमारे लोकतंत्र की आत्मा और नागरिकों के अधिकारों का रक्षक है। भारत का संविधान सबसे बड़ा लिखित संविधान है जो हमारी शासन व्यवस्था की आधारभूत संरचना और सिद्धान्तों का मार्गदर्शन करता है। संविधान दिवस का उद्देश्य लोगों को संविधान की मूल बातें और इसके महत्व के बारे में जागरूक करना है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि हम एक लोकतांत्रिक देश में रहते हैं, जहां सभी नागरिकों को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त हैं।

गोयल ने कहा की वर्ष 1949 में भारत के संविधान को अपनाने के सम्मान में 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया जाता है। यह न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों पर जोर देता है, डॉ बीआर अंबेडकर के योगदान को मान्यता देता है और एक लोकतांत्रिक और समावेशी समाज के निर्माण में नागरिक भागीदारी की वकालत करता है। संविधान दिवस पूरे देश की जनता का पर्व है। देश के हर नागरिक के लिए यह गर्व का दिन है। देश के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सब का यह कर्तव्य है कि हम लोग इस उत्सव को पूरे जोश, समपर्ण और निष्ठा के साथ मनाये। योगेश सिंह ने कहा कि जब संविधान की रचना हुई, वह कोई शांतिकाल नहीं था। देश जहां विभाजन की विभीषिका झेल रहा था वहीं अनेकों संघर्षों का भी सामना कर रहा था। जब देश में अफरा तफरी का माहौल व्याप्त था, ऐसे समय में इतना अच्छा संविधान बनाना कोई छोटा काम नहीं था। डॉ भीम राव अंबेडकर को संविधान लिखने का जो काम मिला, वह उतना आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने सामूहिक निर्णयों से इसे वर्तमान प्रारूप दिया।

संविधान सभा के कुछ सदस्य भारत में ग्राम आधारित राजनीतिक व्यवस्था के पक्षधर थी, जबकि बीआर अंबेडकर ने केंद्रीय व्यवस्था को मंजूर करवाया। यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी। अंबेडकर भारत के मन को समझते थे। उन्होंने भविष्य की स्थिति को समझते हुए देश में फेडरेशन ऑफ स्टेट्स की बजाए यूनियन ऑफ स्टेट्स के लोकतंत्र को चुना। यही कारण है कि इस मजबूत केंद्रीय व्यवस्था से भारत की एकता मजबूत हुई है। आजादी एक बाद इतनी समस्याओं से यह देश गुजारा है, लेकिन फिर भी संविधान ने इसे संभाले रखा, यही संविधान की उपलब्धि है।

मुख्यमंत्री आतिशी ने केंद्र पर मतदाता सूची में छेड़छाड़ का लगाया आरोप

सीएम का दावा, एक डीएम ने अधिकारियों को 20,000 मतदाताओं के नामों को सूची से हटाने का निर्देश दिया था

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मुख्यमंत्री आतिशी ने मंगलवार को आरोप लगाया कि केंद्र सरकार मतदाता सूचियों से आम आदमी पार्टी (आप) के समर्थकों के नाम हटाकर चुनाव प्रक्रिया में छेड़छाड़ का प्रयास कर रही है क्योंकि भारतीय जनता पार्टी को आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में हार का डर है।

आतिशी ने मंगलवार को संवाददाता सम्मेलन में दावा किया, केंद्र सरकार गलत तरीकों से दिल्ली चुनाव जीतने की कोशिश कर रही है। वे मतदाता सूची से मतदाताओं को हटाने की साजिश रच रहे हैं, खास तौर पर आप से जुड़े लोगों को। इस आरोप पर भाजपा की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। आप के वरिष्ठ नेता ने दिल्ली के उपराज्यपाल द्वारा 28 अक्टूबर को 29 उप संभागीय मजिस्ट्रेट (एसडीएम) के तबादले के आदेश का हवाला दिया और इसे कथित साजिश में पहला कदम बताया। आतिशी ने दावा किया कि सात विधानसभा क्षेत्रों की देखरेख करने वाले डीएम ने अधिकारियों को 20,000 मतदाताओं के नामों को सूची से हटाने का निर्देश दिया था। बूथ स्तर के अधिकारियों से ऐसी कार्वाइयों का विरोध करने की अपील करते हुए उन्होंने उनसे किसी भी अनुचित दबाव को रिकॉर्ड करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, अगर कोई आपको मतदाताओं के नाम काटने के लिए मजबूर करने की कोशिश करता है, तो इसे रिकॉर्ड करें।

सीएम के शब्द में हताशा : वीरेंद्र सचदेवा

चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल खड़े कर जनता का ध्यान भटकाने में लगी आप

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि इंडिया गुट के अधिकांश सदस्य लगातार मिल रही चुनावी हार से हताश एवं निराश हैं।

अभी तक कांग्रेस, शिव सेना (उद्धव गुट), राष्ट्रवादी कांग्रेस (शरद गुट), आरजेडी जैसी गठबंधन की पार्टियों को चुनाव हारते ही चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर एवं ई.वी.एम. पर सवाल उठाते देखा था। आज दिल्ली विधानसभा के आगामी चुनाव में हार की सम्भावना से भयभीत आम आदमी पार्टी भी इंडिया गुट के अन्य दलों की भाषा बोलने लगी है जो खेदजनक है। सचदेवा ने कहा है की पहले कांग्रेस और अब दस साल से आम आदमी पार्टी भी फर्जी डुप्लीकेट वोटरों एवं बुर्का वोटरों के सहारे दिल्ली में जीतती रही है पर हरियाणा एवं महाराष्ट्र के चुनाव में और उत्तर प्रदेश, बिहार एवं राजस्थान उपचुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत से डरी कांग्रेस एवं आप जैसे विपक्षी दल अब चुनाव प्रक्रिया पर एवं चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल खड़े कर अपनी चुनावी हार से जनता का ध्यान भटकाने में लगी हैं। इसी डर भय के बीच वोट काटने को लेकर आतिशी द्वारा संवाददाता सम्मेलन में बोले हर शब्द में उनका हार का डर साफ झलक रहा था। आतिशी को उनकी पार्टी का आंतिरक सर्वे बता चुका है

की दिल्ली से टीम केजरीवाल की विदाई तय है और ऐसे में वह फर्जी एवं बुर्का वोटरों के वोट कटने को लेकर भ्रम फैला रही हैं।

भाजपा अध्यक्ष ने टीम केजरीवाल को चुनौती दी कि दिल्ली मतदाता सूची सुधार पर राजनीतिक ब्यानबाजी करने की जगह निर्वाचन आयोग को शिकायत दें या फिर संतुष्टि पाने के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकती हैं।

डीयू में ली संविधान की शपथ

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारतीय संविधान की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि यह भारतीय संविधान की ताकत ही है कि भारत दुनिया का सबसे बढ़ा और प्रभावी लोकतन्त्र बना है। उन्होंने कहा कि संविधान ने सदा देश की एकता और अखंडता को कायम रखा है। कार्यक्रम के आरंभ में कुलसचिव ड्रॉ. विकास गुप्ता के निर्देशन में उपस्थित सभी अधिकारियों ने संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठन किया और शपथ ली। इस अवसर पर डीन अकादमिक प्रो. के. रत्नाबली ने संविधान पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि जब संविधान की रचना हुई, वह कोई शांतिकाल नहीं था। देश जहां विभाजन की विभीषिका झेल रहा था वहीं अनेकों संघर्षों का भी सामना कर रहा था। जब देश में अफरा तफरी का माहौल व्याप्त था, ऐसे समय में इतना अच्छा संविधान बनाना कोई छोटा काम नहीं था। कुलपति ने कहा कि डॉ भीम राव अंबेडकर को संविधान लिखने का जो काम मिला, वह उतना आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने सामूहिक निर्णयों से इसे वर्तमान प्रारूप दिया। सिंह ने कहा कि संविधान सभा के कुछ सदस्य भारत में ग्राम आधारित राजनीतिक व्यवस्था के पक्षधर थी, जबकि बीआर अंबेडकर ने केंद्रीय व्यवस्था को मंजूर करवाया।

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली मेट्रो की मूवी आईएफएफआई गोवा में प्रदर्शित

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन की फिल्म पिलर्स ऑफ प्रोग्रेस द एपिक स्टोरी ऑफ दिल्ली मेट्रो को गोवा में चल रहे 55वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित किया गया है। डीएमआरसी देश में शहरी परिवहन परिदृश्य में क्रांति लाने वाले और इंजीनियरिंग चुनौतियों पर अपनी फिल्मों के लिए दो रष्ट्रीय पुरस्कारों का विजेता भी है। इस दौरान डीएमआरसी को मंगलवार को एक और फिल्म मिल गई। पिलर्स ऑफ प्रोग्रेस, द एपिक स्टोरी ऑफ दिल्ली मेट्रो 30 मिनट की फिल्म है। इसे गैर-फीचर फिल्म श्रेणी के तहत प्रतिष्ठित भारतीय पैनोरमा में प्रदर्शित किया गया है। पिलर्स ऑफ प्रोग्रेस दिल्ली मेट्रो के निर्माण की प्रेरक कहानी है, जो दृढ़ संकल्प और नवाचार का प्रमाण है। वर्ष 1980 के दशक के उत्तरार्ध से फिल्म कई चुनौतियों पर काबू पाने वाली टीम की यात्रा का अनुसरण करती है, जो दिल्ली के विविध ताने-बाने को दर्शाती है। सभी बाधाओं के बावजूद मेट्रो प्रणाली मानवीय दृढ़ता और प्रगति का प्रतीक है। यह कहानी आशा की किरण है, जो एक उज्जवल भविष्य को आकार देने में एकता और दूरदर्शिता की शक्ति का जश्न मनाती है।

रेलवायर ब्रॉडबैंड पर 'फ्रीडम प्लान' लॉन्च

नई दिल्ली। प्रसार भारती, रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया और प्लेबॉक्स टीवी ने रेलवायर के 'फ्रीडम प्लान' का अनावरण किया है। फ्रीडम प्लान, रेलवायर द्वारा एक ओटीटी बंडल होम इंटरनेट प्लान है। रेलटेल की रिटेल होम इंटरनेट सेवा जो आम जनता को किफ़ायती किमत पर हाई स्पीड इंटरनेट उपलब्ध कराती है। प्लेबॉक्स टीवी के संस्थापक और सीईओ आमिर मुलानी ने कहा कि भारत के प्रमुख मनोरंजन और इन्फोटेनमेंट हब, प्रसार भारती द्वारा अपना खुद का ओटीटी प्लेटफॉर्म वेव्स लॉन्च करना काफी गर्व की बात हैं। रेलटेल के अध्यक्ष संजय कुमार ने कहा कि होम इंटरनेट सेवा रेलवायर का उद्देश्य देश के वंचित क्षेत्रों में किफायती इंटरनेट उपलब्ध कराना है। प्रसार भारती के सीईओ गौरव द्विवेदी ने कहा कि वेव्स ओटीटी प्लेटफॉर्म प्रसार भारती के लिए एक परिवर्तनकारी प्रतिनिधित्व करता है।

दुकानदार को लूटने के आरोप में 6 गिरफ्तार

नई दिल्ली। हाल ही में जेल से रिहा हुए छह लोगों ने पहाड़ों की सैर पर जाने के लिए पैसे जुटाने के वास्ते दिल्ली के द्वारका इलाके में डकैती डालने का फैसला किया। उनकी साजिश हालांकि धरी की धरी रह गई क्योंकि वे अपने पहले शिकार को निशाना बनाने के कुछ ही देर बाद पुलिस के हत्थे चढ़ गए। बिंदापुर की जेजे कॉलोनी निवासी अपराधियों के गिरोह ने 12 नवंबर की शाम दक्षिण-पश्चिम इलाके में बंदूक के बल पर एक दुकानदार को लूट लिया था।पुलिस उपायुक्त (द्वारका) अंकित सिंह ने कहा, मुकेश नाम का एक किराना दुकानदार अपने स्कूटर से घर लौट रहा था, तभी बिंदापुर में डीडीए फ्लैट्स के पास उसे रोका गया। मोटरसाइकिल पर सवार तीन लोगों ने उसे रोका और बंदूक के बल पर 50,000 रुपए लूट लिए। आरोपियों की पहचान साजिद, शोएब और राशिद के रूप में हुई।

विस सत्र में जनहित, भ्रष्टाचार के मुद्दे पर विपक्ष सरकार को घेरेगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विधानसभा सत्र में भाजपा जनहित, भ्रष्टाचार, के मुद्दे पर दिल्ली सरकार को घेरेगी। नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता की अध्यक्षता में मंगलवार को भाजपा विधायक दल की बैठक हुई जिसमें प्रस्ताव पारित कर यह निर्णय लिया गया कि 29 नवम्बर से बुलाये जा रहे सत्र में विपक्ष जनहित और विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सरकार का घेराव कर जवाब देने की मांग करेगा।

इसके अलावा सत्र में प्रश्न काल रखने की मांग भी की जायेगी। नेता प्रतिपक्ष के विधानसभा स्थित कार्यालय में आयोजित विधायक दल की बैठक में विधायक ओम प्रकाश शर्मा द्वारा रोहिंग्याओं को दिल्ली सरकार द्वारा वोटर कार्ड जारी करने के मुद्दे पर सरकार का विरोध करने के लिये प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जिसका सभी विधायकों ने सर्वसम्मति से समर्थन किया और इसे पारित कर दिया। विपक्षी विधायकों ने निर्णय लिया कि रोहिंग्या समेत अन्य ज्वलंत मुद्दों के आधार पर सत्र में आक्रामक रवैया अपनाते हुए आम आदमी पार्टी से उसका जवाब मांगा जायेगा। विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि कैग की 12 रिपोर्ट्स को सदन में प्रस्तुत करने के लिए सरकार पर दबाव बनाया जाएगा।

आप ने देश को मॉडल ऑफ गवर्नेंस दिया : केजरीवाल

आप के संयोजक ने पार्टी के स्थापना दिवस पर कार्यकर्ताओं को किया संबोधित

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आप की स्थापना दिवस पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते अरविंद केजरीवाल।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने आप के स्थापना दिवस पर मंगलवार को कहा कि पार्टी अपनी ईमानदारी और लोगों के प्यार के कारण मजबूत हुई है तथा संविधान और लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि आप की स्थापना संविधान दिवस पर हुई है। आप संयोजक ने कहा कि यह महज संयोग नहीं हो सकता कि हमारी पार्टी का गठन संविधान दिवस पर हुआ। ईश्वर जानते हैं कि संविधान खतरे में पड़ने वाला है। पार्टी के शासन के मॉडल की सराहना करते हुए कहा कि यह आम आदमी पर केंद्रित है। केजरीवाल ने कहा, आप की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि हमने शासन का एक ईमानदार मॉडल दिया है। हमने दिल्ली के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाते हुए लोगों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाएं दी हैं। उन्होंने कहा, कुछ लोग दिखावे के लिए झुग्गी बस्तियों में आते हैं लेकिन बाद में वहां घरों को ढहाने के लिए बुलडोजर भेज देते हैं। लोगों को इस तरह के पाखंड के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

मुख्यमंत्री आतिशी ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया और आप की विकासोन्मुखी राजनीति पर पार्टी के जोर देने का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, हमारी पार्टी ने 2020 में प्रदर्शित किया कि चुनाव विकास कार्य और ईमानदार शासन के बूते जीते जा सकते हैं। वर्ष 2015 से पहले, सरकारी स्कूलों के बंद करने की बात कही जा रही थी। आज, हमारे काम ने देश के अन्य राज्यों को भी शिक्षा प्रणाली को बेहतर करने के लिए प्रेरित किया है। यह दिल्ली मॉडल है।

एनसीसी के शूटिंग रेंज से निकलेंगे ओलंपिक खिलाड़ी

नई दिल्ली। रोहिणी सेक्टर-19 स्थिति एनसीसी कैडेट्स की शूटिंग रेंज से ओलंपिक खिलाड़ी निकलेंगे। प्रशिक्षण के लिए यह भूमिगत निशानेबाजी रेंज सातों दिन और पूरे साल खुला रहेगा। यहां 25 मीटर रेंज का ये फायरिंग रेंज बुलेट प्रूपु सीलिंग, 6 फायरिंग लेन सहित तमाम अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है। मुख्यमंत्री आतिशी ने एनसीसी कैडेट्स के लिए देश के पहले अंडरग्राउंड शूटिंग रेंज का उद्घाटन किया। आतिशी ने कहा कि, शूटिंग महंगा स्पोर्ट्स है, लेकिन पैसे खिलाड़ियों की प्रतिभा के आड़े न आए इसलिए उनकी सरकार ने इस अत्याधुनिक शूटिंग रेंज की शुरुआत की है। युवाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है, उन्हें उम्मीद है कि,अगला ओलंपिक गोल्ड इस शूटिंग रेंज से ट्रेनिंग लिए खिलाड़ी लेकर आयेंगे।

ट्रेड फेयर से चोरी पांच करोड़ साल पुरानी कलाकृति बरामद

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के स्टॉल से गैस्ट्रोपॉड जीवाश्म को ऊंचे दामों पर बेचने के इरादे से किया था चोरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस ने भारत मंडपम में चले रहे अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले से 50 मिलियन वर्ष पुरानी कलाकृति चोरी का पर्दाफाश करते हुए एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के स्टॉल से गैस्ट्रोपॉड जीवाश्म चोरी किया था। जांच टीम ने घटनास्थल और आसपास के स्टॉल में लगे करीब 100 से अधिक सीसीटीवी फुटेज की जांच कर आरोपी की पहचान की और उसे नोएडा से धर दबोचा। पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी कलाकृति बरामद किया है। जब्त गैस्ट्रोपॉड जीवाश्म का वजन 1 किलोग्राम है,जिसकी लंबाई-14 सेमी, चौड़ाई-10 सेमी और ऊँचाई-12 सेमी है। पुलिस उपायुक्त सुमित कुमार झा ने बताया कि भारत मंडपम के हॉल नबर-4 में खान मंत्रालय के भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण का स्टॉल लगा है जहां पुरातन महत्व की दुर्लभ वस्तुओं का प्रदर्शन किया है। गत दिनों मंत्रालय के कर्मचारियों ने आईआईटीएफ पुलिस स्टेशन में 50 मिलियन वर्ष पुराने गैस्ट्रोपॉड जीवाश्म की चोरी की शिकायत दर्ज कराई थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने धारा 303(2) बीएनएस के तहत प्राथमिकी दर्ज कर छानबीन शुरू की। इंस्पेक्टर राजेश कुमार, एसआई विपिन त्यागी, एसआई गुलाब, एचसी जय प्रकाश, एचसी अजय, कांस्टेबल दिनेश और कांस्टेबल सूर्या की टीम मामले की जांच के लिए गठित की गई थी।

जांच टीम ने घटनास्थल और आस-पास के स्टॉल, भारत मंडप, हॉल में लगे 100 से अधिक सीसीटीवी फुटेज की जांच की और तकनीकी विश्लेषण का उपयोग करते हुए, उन्होंने आरोपी की पहचान की और उसे नोएडा सेक्टर-22 में छापेमारी कर मनोज कुमार मिश्रा को गिरफ्तार किया।

पूछताछ करने पर, आरोपी ने चोरी की बात कबूल कर ली और उसके कब्जे से गैस्ट्रोपॉड जीवाश्म बरामद किया गया। साथ ही, उसके कब्जे से 21 नवंबर का टिकट भी जब्त किया गया, जिसका इस्तेमाल उसने ट्रेड फेयर में प्रवेश के लिए किया था। पूछताछ में मिश्रा ने बताया कि वह निजी कंपनी में काम करता है। उसकी विभिन्न कला में गहरी रुचि है। इसी के चलते वह व्यापार मेले में नियमित रूप से आता है। 21 नवंबर को उसने भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के स्टॉल से गैस्ट्रोपॉड जीवाश्म को ऊंचे दामों पर बेचने के इरादे से चुराया था। जांच में यह भी पता चला है कि उसका आपराधिक रिकार्ड नहीं है। पूछताछ करने पर पता चला कि वह क्राउन प्लाजा, नोएडा का कर्मचारी है और विभिन्न कला रूपों में गहरी रुचि रखने वाले व्यापार मेले में नियमित रूप से आता है। गैस्ट्रोपॉड जीवाश्म को बेचने के इरादे से चुराया था।

मंत्री राव नरबीर ने दिलाई संविधान की शपथ

संविधान दिवस के उपलक्ष्य में गुरुग्राम विवि में हुआ कार्यक्रम, पॉलीथीन के उपयोग को बंद करने को भी कहा

गुरुग्राम विश्वविद्यालय में संविधान दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन करते उद्योग मंत्री राव नरबीर सिंह।

गुरुग्राम नगर निगम में संविधान दिवस पर शपथ दिलाते निगमायुक्त।

- कहा- पर्यावरण संरक्षण के लिए निमंत्रण कार्ड की बजाय मोबाइल से संदेश भेजें

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य तथा पर्यावरण मंत्री राव नरबीर सिंह ने सोमवार को गुरुग्राम विश्वविद्यालय में युवाओं को संविधान की शपथ दिलाई। साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा के दृष्टिगत अपने आसपास के वातावरण को साफ-सुथरा रखने व पॉलीथिन का उपयोग न करने की शपथ दिलाई। इस दौरान उन्होंने पॉलीथिन से पर्यावरण व हमारी आने वाली पीढ़ियों को होने वाले नुकसान के बारे में भी बताया। कैबिनेट मंत्री संविधान को अपनाने के 75 वर्ष पूरे होने पर विवि में जिला स्तरीय कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कार्यक्रम में गुरुग्राम के विधायक मुकेश शर्मा बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद रहे। विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित संविधान दिवस कार्यक्रम में मुख्यातिथि व विशिष्ट अतिथि का डीसी अजय कुमार व वीसी डॉ. दिनेश कुमार ने मोमेंटो व शॉल भेंट कर उनका स्वागत किया। उन्होंने युवाओं से कहा कि वे किसी भी प्रकार के आयोजन में निमंत्रण कार्ड के बजाय मोबाइल से संदेश भेजें, ताकि कागज, समय व ईंधन की बचत कर पेड़ों को भी सुरक्षित रखा जा सके।

कैबिनेट मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि भारत का संविधान भारत के लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और समतावादी ढांचे को परिभाषित करने वाला आधारभूत दस्तावेज है। पिछले सात दशकों में, इसने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के माध्यम से राष्ट्र का मार्गदर्शन किया है, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सुनिश्चित किया है-जो कि भारत के शासन के मूल सिद्धांत हैं। इन मूल्यों को प्रत्येक साल संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संविधान दिवस हर साल 26 नवम्बर को भारतीय संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। नागरिकों के बीच संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 19 नवम्बर 2015 को घोषणा की कि भारत सरकार हर वर्ष 26 नवम्बर को संविधान दिवस के रूप में मनाएगी। इसका पालन राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले लोकतांत्रिक सिद्धांतों की याद दिलाता है।

संविधान दिवस थीम पर हुई कई गतिविधियां

कार्यक्रम के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय व जिला के स्कूलों में संविधान दिवस की थीम पर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। जिसमें रिट पिटीशन प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के कानून विषय के छात्र अजय शर्मा व आशीष, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में लीना व दीक्षा को प्रथम व द्वितीय, जिला स्तरीय क्विज कॉम्पिटीशन में राजकीय विद्यालय भोंडसी के छात्र भारत, आयुषी व आरव को मुख्यातिथि ने पुरुस्कृत भी किया। कार्यक्रम में सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग हरियाणा की ओर संविधान विषय पर आधारित प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

नगर निगम कार्यालय में मनाया गया संविधान दिवस

- आयुक्त, अधिकारियों व कर्मचारियों ने ली संविधान की रक्षा और उसकी पालना की शपथ

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

मंगलवार को संविधान दिवस के अवसर पर नगर निगम कार्यालय में निगमायुक्त अशोक कुमार गर्ग सहित अधिकारियों व कर्मचारियों ने भारतीय संविधान की रक्षा और उसकी पालना की शपथ ली।

इस मौके पर निगमायुक्त ने कहा कि संविधान दिवस हर वर्ष 26 नवंबर को भारतीय संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। संविधान का पालन राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले लोकतांत्रिक सिद्धांतों की याद दिलाता है। निगमायुक्त के साथ अधिकारियों व कर्मचारियों ने संविधान की प्रस्तावना पढ़ी। निगमायुक्त ने कहा कि संविधान की प्रस्तावना इसकी आत्मा है। प्रस्तावना से मतलब है कि भारतीय संविधान के जो मूल आदर्श हैं, उन्हें प्रस्तावना के माध्यम से संविधान में समाहित किया गया है। इसमें नागरिकों के लिए राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक न्याय के साथ स्वतंत्रता के सभी रूप शामिल हैं। प्रस्तावना नागरिकों को आपसी भाईचारा व बंधुत्व के माध्यम से व्यक्ति के सम्मान तथा देश की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने का संदेश देती है। बंधुत्व का उद्देश्य सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, जातिवाद तथा भाषावाद जैसी बाधाओं को दूर करना है। इस मौके पर एडिशनल म्युनिसिपल कमिश्नर वाईएस गुप्ता, डीटीपी सिद्धार्थ खंडेलवाल, कार्यकारी अभियंता प्रवीण दलाल, सहायक अभियंता कृष्ण कुमार, जोनल टैक्सेशन अधिकारी बीएस छौक्कर व वरिष्ठ सफाई निरीक्षक देवेन्द्र बिश्नोई सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

संविधान दिवस पर फरीदाबाद में भी कार्यक्रम

फरीदाबाद। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए), फरीदाबाद ने संविधान दिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अजरोंदा, फरीदाबाद में किया। यह कार्यक्रम जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, डीएलएसए फरीदाबाद, संदीप गर्ग के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रितु यादव, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट-सह-सचिव, डीएलएसए ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती पूनम तनेजा द्वारा मुख्य अतिथि के स्वागत से हुई।

संविधान एकता और अखंडता का प्रतीक: शर्मा

फरीदाबाद। संविधान दिवस समारोह में भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष गोपाल शर्मा ने मुख्य वक्ता के तौर पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि संविधान हमारी एकता और अखंडता का प्रतीक है। भाजपा की केन्द्र और प्रदेश सरकार संविधान की मूल भावना के अनुरूप सामाजिक और आर्थिक नीतियों को लागू कर देश की जनता को सशक्त करने का कार्य कर रही है। जब से नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं सही मायनों में तभी से संविधान का अनुशरण करते हुए लोकतन्त्र को मजबूत करने का कार्य भाजपा सरकार द्वारा ही हुआ है वर्ना 2014 से पहले तो कांगेस द्वारा संविधान का हनन कर लोकतंत्र की हत्या करने का कार्य किया गया।

ग्रैप नियम तोड़ने वाले 705 लोगों के किए गए चालान

- नगर निगम ने 3 लाख 10 हजार 500 रुपए का जुर्माना लगाया

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

केन्द्रीय वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) द्वारा लागू ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) की पालना सुनिश्चित करने के लिए नगर निगम द्वारा गंभीरता से कार्य किया जा रहा है। इसके तहत क्षेत्र में लगातार निगरानी करते हुए नियमों की अवहेलना करने वाले 705 उल्लंघनकर्ताओं के चालान करते हुए उन पर 3 लाख 10 हजार 500 रुपए का जुर्माना लगाया गया है।

नगर निगम आयुक्त अशोक कुमार गर्ग ने बताया कि ग्रेप के तहत प्रदूषण बढ़ाने वाली सभी प्रकार की गतिविधियों को प्रतिबंधित किया हुआ है। इसके तहत तंदूर में कोयला या लकड़ी जलाने, निर्माण एवं तोडफ़ोड़ करने, बिना ढके निर्माण सामग्री या मलबा डालने व परिवहन करने, सार्वजनिक स्थान पर मलबा या कचरा फैंकने तथा कचरे में आग जलाना दंडनीय अपराध है। उल्लंघनकर्ताओं पर नगर निगम की टीमें लगातार निगरानी बनाए हुए हैं। निगमायुक्त ने बताया कि नगर निगम द्वारा प्रदूषण के स्तर को कम व नियंत्रित करने के लिए सड़कों व पेड़ों पर एसटीपी शोधित पानी का छिड़काव किया जा रहा है। इसके लिए नगर निगम द्वारा 10 एंटी स्मॉग गन तथा 18 वाटर टैंकर लगाए हुए हैं। इसके अलावा, निगम क्षेत्र में अलग-अलग बिल्डर्स द्वारा भी विभिन्न स्थानों पर प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए एंटी स्मॉग गन का उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मुख्य सड़कों की सफाई के लिए 16 मैकेनाइज्ड स्वीपिंग मशीन अलग-अलग रूटों पर कार्य कर रही हैं।

इस तरह हुई कार्रवाई

नगर निगम आयुक्त ने बताया कि टीमों द्वारा 15 अक्टूबर से अब तक लगातार कार्रवाई करते हुए 705 उल्लंघनकर्ताओं पर 3010500 रूपए का जुर्माना लगाया गया है। इनमें कचरा जलाने के मामले में 20 चालान, कोयला या लकड़ी जलाने के मामले में 27 चालान, निर्माण एवं तोडफ़ोड़ गतिविधियों के मामले में 128 चालान, अवैध रूप से सीएंडडी वेस्ट फैंकने के मामले में 22 चालान, अवैध रूप से कचरा फैंकने के मामले में 290 चालान तथा सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने के मामले में 218 चालान शामिल हैं।

संविधान में गरीब-अमीर सब एक समान: कमल

- मूल भावनाओं के अनुसार हर वर्ग का विकास कर रही सरकार

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव।

भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव ने कहा कि हमारे संविधान में सभी गरीब और अमीर एक समान है। आज ही के दिन 26 नवंबर 1949 में संसद में भारतीय संविधान को सर्वसम्मति से पारित किया गया था। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद और प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर संविधान निर्माण की यात्रा का मार्गदर्शन किया।

संविधान दिवस पर भाजपा कार्यालय गुरुकमल में आयोजित कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष कमल यादव ने कहा कि भाजपा सरकार संविधान की मूल भावनाओं के अनुसार काम करते हुए हर वर्ग का बिना भेदभाव किए उत्थान कर रही है। जिला अध्यक्ष ने 75वें संविधान दिवस की सभी प्रदेशवासियों और जिला वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी। कमल यादव ने कहा कि हमारे संविधान ने राष्ट्र का मार्गदर्शन करते हुए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सुनिश्चित किया है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब ने सभी वर्गों को एक समान समाज में रहने का अधिकार दिया है। संविधान में सभी को समान अधिकार मिले हैं। संविधान के द्वारा सभी को न्याय मिलता है।

संविधान लोकतंत्र की ताकत है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब के बने संविधान में गरीब अमीर सब एक समान है। पीएम मोदी ने बाबा साहब के पंच तीर्थ स्थल बनकर डॉक्टर अंबेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि देने का काम किया।

इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष अजीत यादव, अर्जुन शर्मा, जिला महामंत्री रामबीर भाटी, महेश यादव, सतीश नागर, जिला मीडिया प्रमुख पवन यादव, जिला सचिव निधि कोटिया, कार्यालय सचिव यादराम जोया, जिला कार्यकारिणी, मंडल अध्यक्ष, प्रकोष्ठ, सभी मोर्चे के पदाधिकारी, शक्ति केंद्र और भाजपा के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कमल यादव ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बिना भेदभाव किए हर वर्ग का विकास कर रहे हैं। हरियाणा में सभी वर्गों के हितों के लिए कल्याणकारी योजनाएं चला रही है जिसका लाभ हर वर्ग के लोगों को मिल रहा है। कार्यक्रम में महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष उषा प्रियदर्शी, अधिवक्ता प्रकोष्ठ संयोजक प्रवीण आहूजा, अधिवक्ता पूनम भटनागर, लीगल सेल सोहना संयोजक सुनील भूकल, कार्यालय भवन संयोजक हरविंद कोहली, अधिवक्ता परिषद सदस्य सुरेश शर्मा, एससी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष सत्यप्रकाश जरावता ने भी कार्यक्रम में अपने विचार रखे।

सी एंड डी वेस्ट निस्तारण के लिए 4 नए प्लांट लगाएं: नरबीर

- पर्यावरण मंत्री ने गुरुग्राम में अभियान चलाकर कार्रवाई करने के दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने मंगलवार को पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में गुरूग्राम के विकास से जुड़े 40 विभिन्न बिंदुओं के संबंध में पुलिस विभाग, गुरूग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए), नगर निगम गुरुग्राम व मानेसर, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण व एचएसआईआईडीसी की समन्वय बैठक ली।

बैठक में जीएमडीए के सीईओ ए. श्रीनिवास, डीसी अजय कुमार व निगमायुक्त अशोक गर्ग ने गुरुग्राम से जुड़ी मौजूदा विकास परियोजनाओं और उनकी प्रगति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कैबिनेट मंत्री ने संबंधित अधिकारियों से शहर में जलभराव, पेयजल की समस्या, सी एंड डी वेस्ट, कूड़े के निस्तारण, प्रमुख चौक चौराहों व मार्गों पर जाम की समस्या, अवैध पार्किंग जैसे अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

अधिकारियों को गुरुग्राम की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए आपसी समन्वय व कार्य गुणवत्ता को मंत्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कैबिनेट मंत्री ने बैठक में कहा कि ऐसा संज्ञान में आया है कि गुरुग्राम में करीब 132 मिक्सचर प्लांट्स संचालित किए जा रहे है। जिसमें से केवल 65 के पास ही वैध लाइसेंस है। उन्होंने कहा कि इन मिक्सचर प्लांट्स में डम्पर के आवगमन से सड़कों का नुकसान हो रहा है।

कुशल चुनाव प्रबंधक हैं बिप्लब देब: यादव

- सरपंच सुंदर लाल ने साथियों के साथ सांसद को दी जन्मदिन की बधाई

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

बिप्लब कुमार देब को जन्मदिन की शुभकामना देते सरपंच सुंदर लाल यादव व साथी।

त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री, हरियाणा के पूर्व प्रभारी, हरियाणा विधानसभा चुनाव के सह-प्रभारी और त्रिपुरा पश्चिम से सांसद बिप्लब कुमार देब को पंचायती राज प्रकोष्ठ भाजपा के प्रदेश सह-संयोजक सरपंच सुंदर लाल यादव ने जन्मदिन की शुभकामनाएं दी।

इस दौरान सरपंच सुंदर लाल यादव के साथ पर्यावरण प्रमुख के प्रदेश संयोजक मनोज शर्मा, एनआरआई सेल के प्रदेश सह-संयोजक संजय यादव, मैपस्को कासा बेला सोसायटी के प्रधान धर्मबीर यादव, संदीप राघव भोंडसी, प्रिय यादव सहित पार्टी के अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभी ने बिप्लब कुमार देब की लंबी उम्र की कामना की। सरपंच सुंदर लाल यादव ने कहा कि सांसद बिप्लब कुमार देब मजबूत एवं सफल राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ कुशल चुनाव प्रबंधक भी हैं। उन्होंने हरियाणा में प्रभारी रहते हुए और चुनाव सह-प्रभारी रहते हुए ना केवल संगठन को मजबूत बनाया, बल्कि संगठन से प्रदेश की जनता को जोडऩे का भी काम किया। संगठन की नीतियों को मजबूती से जनता तक पहुंचाया।

ऐसे सफलता राजनेता की नीतियों से ही हरियाणा में तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी सरकार बनी है। सुंदर लाल यादव ने कहा कि उन्हें उनके चुनाव प्रचार में जाने का अवसर मिला था।

संक्षिप्त समाचार

गुरुग्राम में 14 दिसंबर को लगेगी राष्ट्रीय लोक अदालत

गुरुग्राम। अदालत में लंबित मुकदमों के शीघ्र निस्तारण के लिए राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से 14 दिसंबर को जिला में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। वादकारी लोक अदालत में सुलह समझौते के लिए स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से अपने केसों का निस्तारण करा सकते हैं। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की सचिव रमेश चंद्र ने बताया कि न्यायालय में लंबित मामलों को परस्पर सहयोग व सौहार्दपूर्ण माध्यम से निपटाने के लिए राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से 14 दिसंबर को जिला में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यदि किसी व्यक्ति का कोई प्रकरण न्यायालय में लंबित है तो वह लोक अदालत के माध्यम से उसका निस्तारण करा सकता है। लोक अदालत में दोनों पक्षों की आपसी सहमति व राजीनामे से सौहार्दपूर्ण वातावरण में पक्षकारों की रजामंदी से विवाद निपटाया जाता है। इससे शीघ्र व सुलभ न्याय, कोई अपील नहीं, अंतिम रूप से निपटारा, समय की बचत जैसे लाभ मिलते हैं। राष्ट्रीय लोक अदालत में बैंक लोन से संबंधित मामले, मोटर एक्सीडेंट, एनआईएक्ट, फौजदारी, रेवेन्यू, वैवाहिक विवाद का निपटारा किया जाएगा।

सरदार गंभीर सिंह बांगा को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

फरीदाबाद। दक्ष फाउंडेशन, हरियाणा पुलिस सोसाइटी, हरियाणा प्रोग्रेसिव स्कूल कांफ्रेंस, रोटरी क्लब ईस्ट एवं एनएचपीसी द्वारा संयुक्त रूप से ख्याल बुजुर्गों का नाम से सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रो के उत्कृष्ट योगदान देने वाले लोगों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। विक्टोरा ग्रुप के संस्थापक सरदार गंभीर सिंह बांगा को उद्योग जगत में अतुलनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। दक्ष की टीम ने सेक्टर 58 स्थित विक्टोरा इंडस्ट्रीज के कॉर्पोरेट ऑफिस में गंभीर सिंह बांगा को प्रशस्ति पत्र, शॉल और पौधा भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर फाउंडेशन के संस्थापक व् कम्युनिटी पुलिसिंग के कोऑर्डिनेटर सब इंस्पेक्टर सुरेंद्र दहिया ने समाजहित में किये जा रहे है कार्य को विस्तार से बताया। उन्होंने बताया की फरीदाबाद पुलिस विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम से सामाज में जागरूकता व सामंजस्यता स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहती है. दक्ष फाउंडेशन के एडवाइजर विंग कमांडर एच सी मान ने बताया की सरदार गंभीर सिंह बांगा फरीदाबाद उद्योग जगत की बड़ी शख्सियत हैं।

52 बीडब्ल्यूजी को जारी किए गए नोटिस

गुरुग्राम। नगर निगम के चारों जोन के लिए गठित बीडब्ल्यूजी मॉनिटरिंग सेल ने पिछले एक सप्ताह में अपनी कार्रवाई को तेज करते हुए ठोस कचरा प्रबंधन नियमों की पालना नहीं करने वाले 52 बीडब्ल्यूजी को नोटिस जारी किए गए हैं। नगर निगम के अतिरिक्त आयुक्त डा. बलप्रीत सिंह ने बताया कि नगर निगम सीमा में स्थित सभी बल्क वेस्ट जनरेटरों को उनके यहां से उत्पन्न होने वाले कचरे का अपने परिसर के अंदर ही खुद के स्तर पर निस्तारण करना अनिवार्य है।

फर्रूखनगर-हेलीमंडी रूट पर चलेगी मिनी बस

- बिजली व हरियाणा रोडवेज के अधिकारियों ने सुनी समस्याएं

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

कैबिनेट मंत्री राव नरबीर सिंह के फर्रूखनगर में धन्यवादी दौरे के दौरान लोगों ने बिजली विभाग और हरियाणा रोडवेज विभाग से संबंधित समस्याएं रखीं। इस समस्याओं समाधान के लिए मंत्री ने मौके पर ही अधिकारियों को समाधान शिविर लगाकर लोगों की समस्या का समाधान करने के आदेश दिए थे।

लोगों ने गुरुग्राम से फर्रूखनगर तक सिटी बस सेवा बहाल करने के लिए, फर्रूखनगर से वाया खेड़ा-खुर्रमपुर, मुशेदपुर, बिरेहडा मोड़, महचाना होते हुए बस सेवा शुरू करने के लिए अपनी बात रखी। जिस पर हरियाणा रोडवेज के ट्रांसपोर्ट इंचार्ज ने एक सप्ताह में सिटी बस सेवा और फर्रूखनगर से हेलीमंडी रूट पर मिनी बस सेवा शुरू करने के का आश्वासन दिया।

भाजपा किसान मोर्चा हरियाणा के प्रदेश महामंत्री एवं पूर्व चेयरमैन विरेन्द्र यादव ने बताया कि मंत्री के आदेश पर बिजली विभाग के चीफ इंजीनियर श्यामबीर सैनी, एसडीओ अवनीत कुमार, हरियाणा रोडवेज डिपो के ट्रांसपोर्ट इंचार्ज के साथ सतपाल यादव मुख्य सलाहकार राव मंत्री नरबीर सिंह, पूर्व चेयरमैन विरेन्द्र यादव ने समस्या सुनीं।

मंगलवार को आयोजित समाधान शिविर में बिजली विभाग से सम्बंधित 25 शिकायत आई। ज्यादातर शिकायतों का मौके पर ही समाधान कर दिया गया।

डीटीपी भाठ अतिक्रमण हटवाने के लिए बनाए नोडल अधिकारी

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नगर योजनाकार विभाग की ओर से गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण के डीटीपी आर.एस. भाठ को शहर में जीएमडीए, एमसीजी और एचएसवीपी की सार्वजनिक भूमि से अतिक्रमण हटवाने के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। हरियाणा के राज्यपाल की ओर से जारी किए गए उनके नियुक्ति पत्र में कहा गया है कि डीटीपी आर.एस. भाठ को गुरुग्राम शहर में सड़कों, ग्रीन बेल्ट और बाजारों से सरकारी जमीन पर किए गए अवैध रूप से अतिक्रमण हटवाने के लिए बतौर नोडल अधिकारी अधिकृत किया गया है। अतिक्रमण हटाने की प्रक्रिया के लिए बनाई गई इन्फोर्समेंट विंग में जीएमडीए, एमसीजी और एचएसवीपी के अधिकारी आरएस भाठ का सहयोग करेंगे।

आज चार फैक्ट्रियों की मालकिन हैं फुटपाथ पर सब्जी बेचने वाली कृष्णा

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला

- अकेले सफर शुरू करने वाली कृष्णा बनीं 1000 से अधिक परिवारों का सहारा
- सैकड़ों महिलाओं को बनाया हुनरमंद, डॉक्टरेक्ट की उपाधि से भी नवाजा जा चुका

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

फुटपाथ पर सब्जी बेचकर परिवार का गुजारा करने वाली गुरुग्राम की कृष्णा यादव अचार का बिजनेस करके 1000 से अधिक परिवारों का सहारा बन चुकी हैं। अपने पुरुषार्थ और बुलंद हौंसलों से कृष्णा ने मजबूती से कदम आगे बढ़ाए। दिल्ली में चल रहे 43वें अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में श्री कृष्णा पिकल्स इस हरियाणवी महिला की सफलता की कहानी कह रहा है। रोज लाखों लोग इसके गवाह बन रहे हैं।

गुरुग्राम के बजघेड़ा में कृष्णा यादव ने अपनी मेहनत और लगन के दम पर चार फैक्ट्री लगाई हैं। साथ ही ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने का भी वे काम कर रही हैं। व्यापार मेले के हरियाणा मंडपम में राज्य की समृद्ध विरासत की झलक देखने को मिल रही है। हरियाणा के लघु और कुटीर उद्योग व उनसे जुड़े उत्पाद लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। कृष्णा यादव बताती है कि एक समय वह

दिल्ली स्थित अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला-2024 में गुरुग्राम की कृष्णा यादव की अचार की स्टॉल तथा फैक्ट्री में अचार की पैकिंग करती कृष्णा यादव।

फुटपाथ पर सब्जी बेचकर परिवार का गुजारा करती थीं। सब्जी बच जाती थी तो नुकसान हो जाता था। उसने बची हुई सब्जी का अचार बनाना शुरू किया। सब्जी के साथ ही अचार बनाकर बेचना शुरू किया। उसे पता चला कि पूसा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान और कृषि विज्ञान केंद्र उजवा नई दिल्ली में अचार बनाने की ट्रेनिंग दी जा रही है। वह वहां से अचार, मुरब्बे, जूस आदि बनाने की ट्रेनिंग लेकर आई। लोगों को अचार पसंद आने लगा।

अचार की मांग बढ़ने से अब अकेले इतना अचार बनाना मुश्किल होने लगा तो आस-पास की महिलाओं को भी इस काम में शामिल किया। समाज में कृष्णा के बहुमूल्य योगदान के लिए इन्हें वैल्यू एडिशन (मूल्य संवर्धन) के क्षेत्र में केंद्रीय कृषि मंत्री संजीव बाल्यान द्वारा पीएचडी की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। कृष्णा को एनजी रंगा कृषि सम्मान, पंडित दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय पुरस्कार, नारी शक्ति सम्मान पुरस्कार, महिला किसान चैंपियन अवार्ड, कृषि नवाचार अवार्ड, खेती-किसानी नवाचार अवार्ड जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

अचार से हुई शुरुआत अब 152 प्रोडक्ट तक पहुंची

कृष्णा यादव के मुताबिक सामान की मांग इतनी बढ़ गई कि घर छोटा पड़ने लगा। तब गुरुग्राम में एक छोटी फैक्ट्री शुरू की। अचार से शुरू हुई ये कहानी आज 152 तरह के प्रोडक्ट जैसे अचार, मुरब्बे के साथ-साथ जूस, जेली, चटनी और जैम तक जा पहुंची है। मात्र 500 रुपये से अचार के कारोबार की शुरुआत करने वाली कृष्णा आज चार फैक्टरी की मालकिन है। वह बताती है कि वह पढ़ी लिखी नहीं है , लेकिन अपने बच्चों की पढ़ाई हर हाल में जारी रखी। खाली समय में उन्होंने अपने बच्चों से हिसाब किताब करना सीखा। फैक्ट्री में प्रोडक्शन का सारा काम वे खुद ही संभालती हैं। उनके पति ऑफिस का काम और बेटे दुकान, मेले और प्रदर्शनी का काम देखते है। सफलता के इस सफर की शुरुआत कृष्णा ने भले ही अकेले की हो, लेकिन आज वह 1000 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को अपने साथ जोड़ चुकी हैं।

हरियाणा में पांच डॉक्टरों का पंजीकरण रद्द

- एफआईआर के आदेश, मध्य प्रदेश की फर्जी एनओसी के सहारे कर रहे थे प्रैक्टिस
- दो अन्य चिकित्सकों का रजिस्ट्रेशन रद्द करने की प्रक्रिया शुरू

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

फर्जी दस्तावेजों के आधार पर रजिस्ट्रेशन करवाने वाले डाक्टरों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए हरियाणा मेडिकल कांउसिल ने पांच डॉक्टरों का पंजीकरण रद्द कर दिया है जबकि दो अन्य की रजिस्ट्रेशन रद्द करने के लिए प्रक्रिया शुरू कर दी है। सभी सात आरोपी डाक्टरों के विरूद्ध एफआईआर दर्ज करवाने के निर्देश भी जारी कर दिए गए हैं। हरियाणा मेडिकल कांउसिल की तरफ से मंगलवार को इस संबंध में स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. मनीष बंसल और डा. कुलदीप को भी पत्र लिखकर जानकारी मुहैया करवा दी गई है।

हरियाणा मेडिकल काउंसिल ने यह जांच स्वास्थ्य मंत्री आरती राव के निर्देश पर शुरू की है। जांच के दौरान काउंसिल के पास रजिस्ट्रेशन के लिए पहुंचने वाली हर एनओसी की सत्यता का पता लगाया जाता है, जिसके बाद ही चिकित्सकों को रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र जारी किया जाता है।

हरियाणा मेडिकल काउंसिल के रजिस्ट्रार मनदीप सचदेवा ने बताया कि जिन पांच डॉक्टरों ने फर्जी एनओसी के बल पर रजिस्ट्रेशन के लिए काउंसिल के पास आवेदन किया था। उनका रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिया गया है। इनमें डॉ. प्रवेश कुमार ने फर्जी एनओसी दी थी, जिसकी मध्य प्रदेश से सत्यता पता लगाई गई। मध्य प्रदेश ने यह एनओसी फर्जी होने की बात कही। इसी तरह से डॉ. अंकित त्यागी की फर्जी एनओसी को पता लगाने के लिए एमएमयू मुलाना भेजा गया था। जहां से उसके फर्जी होने का पता चला।

डॉ. शत्रुघन यादव की एनओसी को मध्य प्रदेश ने फर्जी बताया है। डॉ. प्रदीप कुमार जयसवाल की एनओसी को एमएमयू मुलाना ने फर्जी बताया है। इसके अलावा डॉ. कुणाल की एनओसी को भी उड़ीसा ने फर्जी बताया है।

मामले में कांउसिल से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि अगर किसी की एनओसी फर्जी पाई जाती है तो एक तरह से वह फर्जी डॉक्टर ही होता है। कांउसिल आगे इस निष्कर्ष तक भी पहुंचने का प्रयास करेगी कि आखिर ऐसे गलत लोगों को फर्जी एनओसी कौन जारी करता और इसमें कौन लोग शामिल हैं। जांच के बाद ही रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र जारी किया जाता है।

संविधान की मूल भावना के अनुरूप आगे बढ़ रहा राज्यः सीएम

कुवि में संविधान दिवस पर आयोजित राज्यस्तरीय अमृत महोत्सव समारोह में बोले नायब

- कहा- संविधान की प्रस्तावना में लिखित वी द पीपल भारत की एकता, अखण्डता और गणतंत्र में जन-जन के विश्वास की अभिव्यक्ति

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित संविधान दिवस समारोह के दौरान मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि राज्य सरकार संविधान की मूल भावना के अनुरूप अपनी प्रतिशील सामाजिक और आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से प्रजातांत्रिक सिद्धांतों को निरंतर आगे बढ़ाने का काम कर रही है। हरियाणा सरकार सबका साथ-सबका विकास, सबका प्रयास और सबका विश्वास की धारणा पर चलते हुए आधुनिक भारत के महान दार्शनिक और राजनीतिज्ञ पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन एवं अंत्योदय के विजन को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री मंगलवार को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित संविधान दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले मुख्यमंत्री ने सूचना जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने सभी देशवासियों को संविधान दिवस व संविधान के अमृत महोत्सव की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज हम सबके लिए विशेष गर्व और गौरव का दिन है। पूरे देश में आज संविधान का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। 26 नवम्बर, 1949 के दिन देश की संविधान सभा ने संविधान को अपनाया था। यही वह दिन है जब संविधान बनकर तैयार हुआ था। संविधान दिवस का मतलब देश के नागरिकों में संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ाना है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि आधुनिक भारत का सपना देखने वाले बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर सहित संविधान बनाने वाले सभी महानुभावों को नमन करते हुए कहा कि आज से अगले पूरे एक वर्ष हम संविधान का अमृत महोत्सव मना रहे होंगे। यह वर्ष हमें सदियों से लोकतंत्र में भारतीयों के विश्वास की याद दिलाएगा। उन्होंने कहा कि हमारे संविधान की प्रस्तावना में जो वी द पीपल लिखा है, यह सिर्फ तीन शब्द मात्र नहीं हैं। यह वाक्य पूरे भारत के जनगण का प्रतिनिधित्व करता है। यह एकता की अपील है, अखण्डता की प्रतिज्ञा है और गणतंत्र में जन-जन के विश्वास की अभिव्यक्ति है, जिसे मदर ऑफ डेमोक्रेसी कहा जाता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने धारा-370 व 35-ए हटाकर अखण्ड भारत के सपने को पूरा किया: मुख्यमंत्री ने कहा कि आज देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मदर ऑफ डेमोक्रेसी के रूप में अपने प्राचीन आदर्शों और संविधान की भावना को लगातार मजबूत कर रहा है। आज खेल हो या स्टार्टअप, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी हो या डिजिटल पेमेंट्स, भारत के विकास के हर आयाम में युवा शक्ति अपना परचम लहरा रही है। हमारे संविधान और संस्थाओं के भविष्य की जिम्मेदारी भी हमारे युवाओं के कंधों पर ही है। आज के युवाओं में संविधान की समझ और बढ़े, इसके लिए जरूरी है कि वे संवैधानिक विषयों पर चर्चा का हिस्सा बनें। इससे युवाओं में कर्तव्य, समानता और अधिकार जैसे विषयों को समझने का विजन पैदा होगा।

लाडवा को विकसित करने के लिए सरकार तैयार कर रही योजनाः सैनी

- लाडवा और मथाना में मुख्यमंत्री ने जताया लोगों का आभार
- विकास कार्यों के लिए 21 लाख रुपए देने की घोषणा की

पायनियर समाचार सेवा। लाडवा

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि लाडवा हल्का को मॉडल विधानसभा के रूप में विकसित करने के लिए सरकार योजना बना रही है और इस योजना के अनुसार धीरे-धीरे लाडवा को विकसित करने का काम किया जाएगा। इस हल्का के हर गांव और वार्डो का लोगों के सुझावों के अनुसार विकास किया जाएगा और इस हल्के के नागरिकों की सभी सामूहिक मांगों को सबसे पहले पूरा किया जाएगा।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मंगलवार को देर सायं गांव मथाना के सामुदायिक केन्द्र व लाडवा में लाल सड़क पर आयोजित धन्यवाद कार्यक्रमों में बोल रहे थे। इससे पहले मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का गांव मथाना पहुंचने पर ग्राम पंचायत सरपंच प्रतिनिधि रवि मथाना की तरफ से स्वागत किया गया और लाडवा में नगरपालिका की अध्यक्षा साक्षी खुराना व नागरिकों की तरफ से आयोजित कार्यक्रमों में भव्य और जोरदार स्वागत किया। इस दौरान मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गांव मथाना के विकास के लिए 21 लाख रुपए देने की घोषणा के साथ-साथ और लाडवा व मथाना की सभी मांगों को पूरा किया जाएगा। इस हल्का की कोई भी मांग लम्बित नहीं रहेगी और धीरे-धीरे सभी मांगों को पूरा किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लाडवा हल्का के नागरिकों के आशीर्वाद से प्रदेश के लोगों की सेवा करने की उन्हें दूसरी बार और प्रदेश सरकार को तीसरी बार सेवा करने का अवसर मिला है। अब सरकार नॉन स्टॉप गति से लाडवा का विकास करेगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हरियाणा प्रदेश को विकसित प्रदेश बनाने का काम किया जाएगा और इस प्रदेश के हर नागरिक को मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाई जाएगी।

इस सरकार ने पिछले 10 सालों में समाज के अंतिम व्यक्ति की जरूरतों को जहन में रखकर योजनाएं बनाने का काम किया है। इस सरकार ने मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत 30-30 गज के 15430 प्लाट देने का काम किया है और अन्य योग्य प्रार्थियों को भी जल्द प्लाट की सौगात दी जाएगी।

पूर्व न्यायाधीश बतरा बने मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष

- हरियाणा सरकार ने नेता प्रतिपक्ष के बगैर लिया फैसला
- अब 14 माह बाद आयोग में शुरू होगा कामकाज
- सरकार गुरुवार को देगी हाईकोर्ट में जवाब

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट की फटकार के बाद सरकार ने हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश ललित बतरा को हरियाणा राज्य मानव अधिकार आयोग का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया है। हरियाणा में करीब 14 माह बाद अध्यक्ष तथा दो सदस्यों की नियुक्ति हुई है। अब हरियाणा सरकार इस संबंध में हाईकोर्ट में सकारात्मक जवाब दाखिल करेगी।

हरियाणा में मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों के पद पिछले 14 माह से खाली पड़े हुए थे। कैथल के एक व्यक्ति द्वारा याचिका दायर किए जाने पर पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने इस संबंध में सरकार को फटकार लगाते हुए अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति के निर्देश जारी किए थे। इस बीच हरियाणा में पहले लोकसभा और फिर विधानसभा चुनाव आ गए। जिसके चलते यह नियुक्तियां सिरे नहीं चढ़ सकी। हाईकोर्ट ने प्रदेश सरकार को 28 नवंबर तक का समय दिया हुआ है।

सरकार द्वारा पिछले सप्ताह की गई सर्च कमेटी की बैठक में नेता प्रतिपक्ष के तौर पर कोई भी शामिल नहीं हुआ। जिसके चलते यह मामला और गहरा हो गया। सर्च कमेटी की बैठक में हरियाणा के मुख्यमंत्री, विधानसभा स्पीकर तथा गृह सचिव शामिल हुए। कांग्रेस ने इस बैठक में शामिल होने के लिए किसी भी विधायक को नामित नहीं किया।

हाईकोर्ट में जवाब दाखिल करने के दबाव के चलते सरकार विशेष अधिकार का इस्तेमाल करते हुए राज्यपाल के पास अध्यक्ष तथा सदस्यों के नाम का पैनल बनाकर भेज दिया।

राज्यपाल की स्वीकृति के बाद मंगलवार को गृह सचिव अनुराग रस्तोगी ने एक अधिसूचना जारी करके पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश ललित बतरा को हरियाणा राज्य मानव अधिकार आयोग का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। इसके अलावा सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश कुलदीप जैन तथा एडवोकेट दीप भाटिया को मानव अधिकार आयोग का सदस्य नियुक्त किया है।

दीप भाटिया पहले भी आयोग के सदस्य रह चुके हैं। अब हरियाणा सरकार के वकील इस अधिसूचना के आधार पर हाईकोर्ट में अपनी रिपोर्ट दाखिल करेंगे।

आज से फिर खुलेंगे स्कूल, उपायुक्तों से छुट्टी का अधिकार लिया वापस

चंडीगढ़। हरियाणा में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में सुधार के चलते आज बुधवार से सभी स्कूल फिर खुल जाएंगे। सभी सरकारी और निजी स्कूलों में पहली से बारहवीं तक आफलाइन कक्षाएं लगाने के निर्देश दिए गए हैं। माध्यमिक शिक्षा निदेशक विनीत गर्ग ने इस संबंध में सभी उपायुक्तों को निर्देश जारी कर दिए हैं। साथ ही 16 नवंबर और 18 नवंबर को जारी उन आदेशों को भी वापस ले लिया गया है, जिसके तहत उपायुक्तों को स्थानीय स्तर पर वायु प्रदूषण को देखते हुए छुट्टी का अधिकार दिया गया था। वहीं, हिंदी विषय के प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (टीजीटी) के रूप में पदोन्नत 703 शिक्षकों को स्कूल अलाट कर दिए गए हैं। शेष हरियाणा काडर के इन शिक्षकों को अस्थाई आधार पर स्कूल आवंटित किए गए हैं।

बिरसा मुंडा जैसे वीरों से लें प्रेरणाः डॉ. मिश्र

- हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ में मनाया जनजातीय गौरव सप्ताह

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ, बघौला, में 15 से 26 नवंबर तक जनजातीय समाज के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जाति और धर्म के रक्षक भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में जनजातीय गौरव सप्ताह मनाया गया।

कार्यक्रम के दौरान 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया गया तथा फिट इंडिया कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं गायन प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता व कविता पाठ का आयोजन किया गया। जिनमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और शानदार प्रस्तुति दी। विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ पशुपतिनाथ मिश्र तथा अन्य वरिष्ठ प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं, डॉ ऊषा पंडित, डॉ रंजना गुप्ता, डॉ छोटू कुमार मिश्र, डा राजकुमार मिश्र, डॉ राधावल्लभ शर्मा ने अपने विचार प्रकट किये।

प्राचार्य जी ने विश्व के सबसे लंबे लिखित भारतीय संविधान का महत्व बताते हुए यह भी कहा कि हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति का विधान भी नहीं भूलना चाहिए। भगवान बिरसा मुंडा जैसे वीरों से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए तथा स्वस्थ जीवन के लिए सात्विक भोजन, ध्यान और प्राणायाम पर बल देना चाहिए। गायन प्रतियोगिता में कु. अंजली, भाषण प्रतियोगिता में कु. सुंनृता एवं जितेंद्र कुमार, कविता पाठ में कु. सुधा तथा योग में कु. भारती ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गीता रन में दौड़ेंगे 7 देशों के विवि में पढ़ने वाले विद्यार्थी

- गीता रन का शुभारंभ कल करेंगे कैबिनेट मंत्री कृष्ण कुमार बेदी,
- खेल विभाग के पास एक हजार से ज्यादा खिलाड़ियों ने कराया पंजीकरण
- महिला व पुरुष वर्ग में 10-10 विजेताओं को दिया जाएगा पुरस्कार

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव मेला प्राधिकरण के सदस्य सौरभ चौधरी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव 2024 की गीता रन में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी भी शिरकत करेंगे। इस गीता रन का शुभारंभ 28 नवंबर को सुबहके समय ब्रह्मसरोवर पुरुषोत्तमपुरा बाग से हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी करेंगे।

प्राधिकरण के सदस्य सौरभ चौधरी ने आज यहां बातचीत करते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव 2024 में गीता रन का आयोजन 28 नवंबर को सुबह 6 बजेपुरुषोत्तमपुरा बाग ब्रह्मसरोवर से किया जाएगा। इस गीता रन का शुभारंभ कैबिनेट मंत्री कृष्ण कुमार बेदी करेंगे। इस गीता रन मैराथन में महिला और पुरुष के 2 वर्ग बनाए गए है, पुरुष वर्ग की 10 किलोमीटर और महिला वर्ग के लिए 5 किलोमीटर की दौड़ होगी। इसमें महिला और पुरुष वर्ग में 10-10 विजेताओं को नगद पुरस्कार दिए जाएंगे। इसमें प्रथम को 31 हजार, द्वितीय को 21 हजार, तृतीय को 11 हजार और 7 विजेताओं को 2100-2100 का नगद पुरस्कार दिया जाएगा।

सदस्यों को जोड़ने का बनाएंगे रिकॉर्डः भूरा

- गांव-गांव उत्सव की तरह मनाया जा रहा है भाजपा का सदस्यता अभियान

पायनियर समाचार सेवा। बल्लभगढ़

भाजपा के सदस्यता अभियान के तहत गांव चांदपुर से सरपंच एसोसिएशन के प्रधान सूरजपाल भूरा ने अपनी सदस्यता का नवीनीकरण किया और सभी ग्राम पंचायतों के सरपंचों से भाजपा के सदस्यता अभियान में लोगों को जोड़ने की अपील करते हुए कहा कि पिछले दस वर्षों में देश और प्रदेश में भाजपा की सरकार द्वारा नई नई योजनाओं के माध्यम से जनता को सशक्त करने का काम किया जा रहा है। प्रदेश में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश में युवाओं को बिना पर्ची और बिना खर्ची के नौकरियां मिल रही है।

मुख्यमंत्री बिना थके, बिना रूके प्रदेश की जनता की सेवा कर रहे हैं और प्रदेश की जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने का कार्य कर रहे हैं। भाजपा की केंद्र और प्रदेश सरकार ने पिछले 10 सालों में युवाओं, गरीबों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं का विकास कर उनको मजबूत करने का कार्य किया है। सदस्यता अभियान को लेकर सबसे पहले सरपंच सूरजपाल भूरा ने अपनी प्राथमिक सदस्यता का नवीनीकरण किया।

शारीरिक-मानसिक विकास के लिए आदर्श है जूडोः राणा

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में कुवि में आयोजित महिला और पुरुष इंटर कॉलेज जूडो प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए खेल निदेशक प्रो. दिनेश राणा ने प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जूडो जैसे खेल खिलाड़ियों में आत्म-विश्वास, अनुशासन और साहस की भावना का विकास करते हैं। उन्होंने जूडो को शारीरिक और मानसिक विकास के लिए एक आदर्श खेल बताया। डॉ. दिनेश राणा ने कहा कि विश्वविद्यालय ने हमेशा से खिलाड़ियों को बेहतर मंच और सुविधाएं प्रदान की हैं।

प्रदेश सरकार की राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में नजर आएंगे महाभारत के यादगार क्षणः वर्षा खंगवाल

कुरुक्षेत्र। सूचना जनसम्पर्क भाषा एवं संस्कृति विभाग की अतिरिक्त निदेशिका वर्षा खंगवाल ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में प्रदेश सरकार की तरफ से राज्य स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा। इस प्रदर्शनी में महाभारत के यादगार लम्हों के साथ-साथ पवित्र ग्रंथ गीता के उपदेशों को दर्शाया जाएगा। यह प्रदर्शनी 5 से 11 दिसंबर तक चलेगी। अतिरिक्त निदेशिका वर्षा खंगवाल मंगलवार को ब्रह्मसरोवर पुरुषोत्तमपुरा बाग में अधिकारियों को कुछ आवश्यक दिशा-निर्देश दे रही थी। इससे पहले अतिरिक्त निदेशिका वर्षा खंगवाल, अतिरिक्त निदेशक रणबीर सांगवान, शहीदी स्मारक संग्रहालय के निदेशक डा. कुलदीप सैनी, संयुक्त निदेशक साहब सिंह गोदारा, केडीबी के मानद सचिव उपेन्द्र सिंघल, सदस्य अशोक रोसा ने पुरुषोत्तमपुरा बाग श्रीकृष्ण अर्जुन रथ के पास 5 से 11 दिसंबर तक लगने वाली राज्य स्तरीय प्रदर्शनी के स्थल का निरीक्षण किया।

हरियाणा में राज्य सभा की एक सीट खाली घोषित

- तीन दिसंबर से शुरू होगी चुनाव प्रक्रिया

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

केंद्रीय चुनाव आयोग ने हरियाणा में राज्य सभा की एक सीट को रिक्त घोषित कर दिया है। इस सीट पर चुनाव प्रक्रिया तीन दिसंबर से शुरू होगी। हरियाणा में हालही में हुए विधानसभा चुनाव के दौरान राज्यसभा के सांसद कृष्णलाल पंवार इसराना से विधायक चुने गए थे।

पंवार ने विधायक बनने के बाद 14 अक्टूबर को राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दिया था। इसके बाद 17 अक्टूबर को वह हरियाणा की नायब सैनी सरकार में कैबिनेट मंत्री बन गए। कृष्ण लाल पंवार का बतौर राज्य सभा सदस्य कार्यकाल एक अगस्त 2028 तक था। जिसके चलते अब एक सीट के लिए उपचुनाव कराए जाएंगे।

निर्वाचन आयोग द्वारा मंगलवार को जारी की गई अधिसूचना के अनुसार राज्य सभी की एक सीट पर चुनाव के लिए तीन दिसंबर को अधिसूचना जारी की जाएगी। 10 दिसंबर को नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि है। 11 दिसंबर को नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी। 13 दिसंबर को नामांकन वापसी की अंतिम तिथि है। अगर जरूरत पड़ती है तो 20 दिसंबर को एक सीट के लिए मतदान करवाया जाएगा। सुबह 9 बजे से शाम चार बजे तक मतदान के बाद उसी दिन मतगणना होगी। हरियाणा में 24 दिसंबर को राज्यसभा चुनाव के लिए चुनाव प्रक्रिया संपन्न होगी।

विधायकों की संख्या बल पर भाजपा का सदस्य बनना तय

हरियाणा में राज्यसभा की एक सीट भी भारतीय जनता पार्टी के खाते में जानी तय है। 90 विधायकों वाली हरियाणा विधानसभा में भाजपा विधायकों की संख्या 48 है। विपक्षी दल कांग्रेस के पास 37 विधायक हैं। हालांकि यह पहला मौका है जब इतनी बड़ी संख्या में विपक्ष के विधायक जीतकर आए हैं। इसके बावजूद भाजपा को अपना प्रत्याशी राज्यसभा में भेजने में कोई दिक्कत नहीं आएगी। 48 विधायकों के बल पर भी भाजपा आसानी से अपने प्रत्याशी को वर्ष 2028 तक राज्यसभा भेज सकती है।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय, एनसीआर दिल्ली
एनएचपीसी कॉम्प्लेक्स, फरीदाबाद,
सेक्टर -33, हरियाणा - 121003
फोन: 0129-2250544-50

अचल एवं चल सम्पतियों के लिए विक्रय सूचना

शुद्धिपत्र

उपरोक्त के संबंध में दिनांक 25.11.2024 को इस समाचार पत्र में छपे विज्ञापन में छपाई की त्रुटि के कारण क्रम संख्या 15 - मैसर्स ओ एस एम प्रोजेक्टस् प्राईवेट लिमिटेड में कुल बकाया राशि दिनांक **20.05.2024 तक "31,20,35,423.71" की जगह** दिनांक **19.03.2024 तक "22,50,474.26"** छप गया है कृपया उसे सुधार कर दिनांक **20.05.2024 तक "31,20,35,423.71" पढ़ें व माने ।** बाकी पूर्ववत रहेगा।

हस्ता/-मुख्य प्रबंधक इण्डियन ओवरसीज बैंक

Public Notice

To be known to all that I,**Ishu Sikka** W/o Manish Sikka R/o Flat No.**35-C,S/F,Blk/Pkt-B,East of Kailash,ND-65 owner of DDA SFS-I flat no.35-C,S/F,Blk/pkt-B,East of Kailash, ND-65** has applied for conversion of the aforesaid property from leasehold to freehold vide application No.DDAHCA50108986 dt. 25.10.2024 in DDA. Original document i.e. **Allocation/5th & Final Demand Letter**, of above property have been lost, An FIR against this effect has been lodged in Police station. Any persons claiming any right, interest, having any objection or found in possession of original documents may write/cont with above named person at above add/Ph 9373483512 with **15 days** from the date of publication of this notice. The person claiming any right, interest, objections with respect to this property can personally inform or write to Director Housing-I or Dy. Director (SFS), D-Block, 3rd Floor, Vikas Sadan, INA, N.D.-23

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्लॉट संख्या जे एच-02, सेक्टर 159 नोएडा, गौतमबुद्ध नगर की मूल आवंटी श्रीमती कलावती पत्नी स्व. सुजान सिंह निवासी ग्राम झट्टा, तहसील व जिला गौतम बुध नगर ने खाता स 70 व खसरा स 192 ग्राम झट्टा की श्रीमती मधु चौहान पत्नी श्री रोहतास सिंह चौहान, निवासी जे-47, प्रताप विहार, गाजियाबाद, हाल निवासी जीटी-28, सेक्टर 70, नोएडा के पक्ष में उपरोक्त 5 प्रतिशत नक्शा 11 के बदले मिलने वाले किसान कोटे के आवासीय भूखंड संख्या जे एच-02, सेक्टर 159 नोएडा, गौतमबुद्ध नगर की बाबत एक वसीयतनामा पंजीकृत किया था। जो उपनिबंधक कार्यालय नोएडा में वही नंबर 3, दस्तावेज नंबर 172, दिनांक 16/03/2011 में दर्ज है। उपरोक्त आवासीय भूखंड की मूल आवंटी श्रीमती कलावती की मृत्यु दिनांक 14/11/2015 को हो गई थी। अतः उक्त वसीयत के आधार पर उपरोक्त संपत्ति को श्रीमती मधु चौहान के पक्ष में नामांतरण या दाखिल खारिज के लिए आवेदन किया है। इस संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिन के अंदर समस्त साक्ष्यों के साथ आवासीय भूखंड कार्यालय नोएडा विकास प्राधिकरण सेक्टर 6 में अपनी आपत्ति दर्ज करा दें। बाद में कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client that Mrs. Anuradha is claiming to be owner of Residential Flat No. SF-04, on Second Floor without roof rights built on Plot bearing No. B-180, area measuring 100 sq. yds., out of Khasra No. 233, situated at Rail Vihar Shehkari Awas Smiti Ltd., in the area of Village Saddulabad, Paragana & Tehsil Loni, District Ghaziabad, U. P. All persons are hereby informed that above mentioned owner wants to sell the property to a person who wants to obtain a loan from our client against the said property. If, anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its sale/mortgage/litigation, and any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 7 days of the present.

Kumar & Associates (Advocates & Consultants)
200, IInd Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, N. Delhi-15
Ph : 011-41112527-28 legal@knalegal.com

PUBLIC NOTICE

We M/s Pharma Chemie Pvt. Ltd. have shifted our registered office from Flat No.- 3174, D-3, Vasant Kunj, New Delhi-110070 to A-81, First Floor, South Extension - Part 2, New Delhi 110049. Request all public, clients and stakeholders to update your records for all future correspondence

Dated: 27.11.24
Place: Delhi

Public Notice

This is to inform the general public that **Smt. Gainda Devi** is the GPA Holder Property No. 58 area measuring 62 ½ Sq. Yds., Block- A-1Out of Khasra No. 104/8/1 Situated at Village- Palam, Colony known as Rajapuri New Delhi. She is in possession through GPA, ATS & Will Dated 22.10.1982 executed by Smt. Rati Ram in favour of Smt. Gainda Devi in respect of the said Property.

Smt. Gainda Devi intends to transfer the ownership by way of Sale Deed of aforementioned property to **Mr. Nitin Malkoti.** Subsequently, **Mr. Nitin Malkoti** is in the process of mortgaging the said property with **Aditya Birla Housing Finance Limited**. Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 15 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 15-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.

If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 15-days period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +910120-3101683, e-mail: accounts@lvnorth.in**

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधरण को सूचित किया जाता है कि आवासीय भूखण्ड खसरा नं0 862 और खाता सं0 453 प्लॉट शहदरा कुल रकबा 345.55 वर्गमीटर जिसका वर्तमान प्लॉट सं0- SH-11, सैक्टर-145, नोएडा है। जोकि स्वं0 जगदीश शर्मा व ज्ञानचंद शर्मा पुत्रगण श्री श्रीचंद निवासी दोस्तपुर मंगरोली नोएडा ने अशोक कुमार सिंह पुत्र श्यामदेव सिंह निवासी राजगांगपुर उडीसा के पक्ष में दिनांक 09.08.2016 में पंजीकृत एग्रीमेन्ट टू सेल, जी.पी.ए. एवं वसियतनामा के द्वारा उपनिबन्धक तृतीय नोएडा में पंजीकृत कराया गया है। अतः इस सूचना के माध्यम से सर्वजनों को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त आवासीय भूखण्ड एक विवादित प्लॉट है और कानूनी प्रकिया चल रही है जिसको खरीदनें/बेचने से सावधान रहें। ऐसा करने वाला व्यक्ति अपने नुकसान का स्वंय जिम्मेदार होगा, उसके लिए मेरे मुविक्कल की कोई जिम्मेदारी नही होगी। मोब. नं0- 9999057392, 8527616246.

Sunny Chauhan
Advocate & Legal Consultant
Supreme Court of India, New Delhi

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Roli Devi W/o Vishram Singh R/o F-4, Ground Floor, Rajpur Khurd, IGNOU, New Delhi-110068 declare that I have changed my daughter's name from Tanya Apsita to Sita Kumari for all future Purposes.

PD(973)C

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को यह जानकारी दी जाती है कि हमारी ग्राहक मेसर्स सोसाइटी फॉर वेलफेयर एंड अवेयरनेस ऑफ़ मासेस, जो की क्षेत्रफल 2 कनाल 9.48 मरला, खेवट/खाता संख्या 951/1001, मु. संख्या 103, किला संख्या किला नंबर 4/1, खेवट/खाता नंबर 939-989, मु. नंबर 103, किला नंबर 4/2, गांव तौरू, तहसील- तौरू, जिला- नूंह, हरियाणा के क्षेत्र में स्थित है के लीज डीड दिनांक 05.05.2023 को रजिस्टर नंबर 382 सब तहसील-तौरू, रूप में के आधार पर पाटेदार है नीचे उल्लिखित श्रृंखला दस्तावेजों में उपलब्ध नहीं है यानी बिक्री डीड दिनांक- 09.06.2008 को श्री अरसद पुत्र श्री हमीदा द्वारा श्री कुलभूषण राय बजाज पुत्र श्री वेधनाथ बजाज के पक्ष में निष्पादित किया गया। जो की सब तहसील टौरू में दिनांक 09.06.2008 को रजिस्टर नंबर-530 के अनुसार 2 कनाल 9.5 मरला के प्लॉट क्षेत्र के संबंध में है, अब हमारे ग्राहक घोषणा कर रहे हैं कि किसी अन्य व्यक्ति का उक्त संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं है, और उसी संपत्ति को डीसीबी बैंक लिमिटेड शाखाः गुड़गांव, हरियाणा द्वारा वित्तपोषित किया गया है। यदि किसी भी व्यक्ति को उक्त संपत्ति में अधिकार@स्वामित्व या हित के संबंध में कोई आपत्ति या दावा है तो इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 15 दिनों के भीतर हमसे संपर्क करें या उसी को संपर्क करें। यदि किसी को मिला तो अधोहस्ताक्षरित। इसके बाद किसी भी दावे पर विचार नहीं किया जाएगा।

Naveen Kumar Verma (Advocate) 1/566-A, Ground Floor, Sector-1, Vaishali, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201010, M.:-09958871432

सार्वजनिक सूचना

भूखंड संख्या डी-3, क्षेत्रफल 8160.00 वर्ग मीटर, औद्योगिक क्षेत्र सूरजपुर साइट-5, कासना, ग्रेटर नोएडा का हस्तांतरण **M/s Envirotech System's Limited** के पक्ष में स्टील फैब्रिकेशन की इकाई स्थापना हेतु किए जाने का अनुरोध किया गया है। दिनांक 26.06.2001 को उक्त भूखंड की निष्पादित लीज-डीड ऋण दाता वित्तीय संस्था M/s Edelweiss Asset Reconstruction से खो गई है। उक्त भूखंड को **M/s Envirotech System's Limited** के पक्ष में हस्तांतरित किए जाने के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण के क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय, प्रशासनिक भवन, कासना, गौतम बुद्ध नगर में लिखित रूप में आपत्ति दर्ज कराएं अन्यथा की स्थिति में निर्धारित तिथि के उपरांत हस्तांतरण संबंधी कार्यवाही कर दी जाएगी और तदोपरांत किसी आपत्ती पर विचार नहीं किया जाएगा।

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client that Syed Shandar Abbas is claiming to be owner of Upper Ground Floor without Roof Rights built on Property bearing Plot No. 79-B, area measuring 50 sq. yds., out of Khasra No. 14/13, situated in the Revenue Estate of Village Matiala, in the Colony known as Sewak Park, in Block-D, Uttam Nagar, New Delhi; vide GPA, ATS & Will dated 14.09.2023, executed by Mohd. Sajid. All persons are hereby informed that above mentioned owner wants to sell the property to a person who wants to obtain a loan from our client against the said property. If, anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its sale/mortgage/litigation & any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 7 days of the present.

Kumar & Associates (Advocates & Consultants)
200, IInd Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, N. Delhi-15
Ph : 011-41112527-28 legal@knalegal.com

फॉर्म संख्या INC-26
[कंपनी (निगमन) नियम, 2014 के नियम 30 के अनुसार]
कंपनी के पंजीकृत कार्यालय को एक राज्य से दूसरे राज्य में बदलने के लिए समाचार पत्र में विज्ञापन प्रकाशित किया जाना है।

क्षेत्रीय निदेशक, उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, दिल्ली के समक्ष कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 13 की उपधारा 4 तथा कंपनी (निगमन) नियम 2014 के नियम 30 की उपधारा (5) के खंड (क) के मामले में

तथा

सीएनडब्ल्यू कूरियर नेटवर्क इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (सीआईएनः यू53200डीएल2023एफटीसी416128) के मामले में, जो कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत निगमित कंपनी है तथा जिसका पंजीकृत कार्यालय बी1/एच3, ग्राउंड फ्लोर, मोहन को-ऑपरेटिव, मथुरा रोड, औद्योगिक क्षेत्र, ब्लॉक बी, बदरपुर, दक्षिण दिल्ली, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत, 110044 में है

याचिकाकर्ता

आम जनता को सूचित किया जाता है कि कंपनी कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 13 के तहत केंद्र सरकार को ज्ञापन में परिवर्तन की पुष्टि के लिए आवेदन करने का प्रस्ताव करती है। कंपनी के पंजीकृत कार्यालय को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली से उत्तर प्रदेश राज्य में बदलने के लिए कंपनी को सक्षम करने के लिए गुरुवार 17 अक्टूबर 2024 को सुबह 10:00 बजे आयोजित असाधारण आम बैठक में पारित विशेष प्रस्ताव के संदर्भ में।" कोई भी व्यक्ति जिसका हित कंपनी के पंजीकृत कार्यालय के प्रस्तावित परिवर्तन से प्रभावित होने की संभावना है, वह निवेशक शिकायत फॉर्म भरकर एमसीए पोर्टल (www.mca.gov.in) पर पहुंचा सकता है या अपने हितों की प्रकृति और विरोध के आधारों को बताते हुए एक हलफनामे के साथ अपनी आपत्तियों को पंजीकृत डाक से क्षेत्रीय निदेशकों, उत्तरी क्षेत्र बी-2 विंग, दूसरी मंजिल, प्वाइंट 11, उत्तर प्रदेश को भेज सकता है। दीनदयाल अंत्योदय भवन, द्वितीय तल, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली-110003 को इस नोटिस के प्रकाशन की तिथि से चौदह दिनों के भीतर आवेदक कंपनी की एक प्रति के साथ उसके पंजीकृत कार्यालय में नीचे उल्लिखित पते पर प्रस्तुत करना होगाः

पंजीकृत कार्यालय का पताः - बी1/एच3, भूतल, मोहन को-ऑपरेटिव, मथुरा रोड, औद्योगिक क्षेत्र, ब्लॉक बी, बदरपुर, दक्षिण दिल्ली, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत, 110044 (वर्तमान पता)

सीएनडब्ल्यू कूरियर नेटवर्क इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए बोर्ड के आदेश द्वारा

अमन गुप्ता (निदेशक) डीनः 10227583
कूरी बरगदी कोट भभुवा गोंडा
कर्नलगंज उत्तर प्रदेश, भारत 271311

संविधान दिवस

राष्ट्र की आत्मा

हर साल 26 नवंबर को भारत संविधान दिवस मनाता है। यह दिन 1949 में भारतीय संविधान को अपनाने की याद दिलाता है, जो एक ऐतिहासिक घटना थी जिसने भारत के लोकतांत्रिक लोकाचार की नींव रखी। जैसा कि हम इस महत्वपूर्ण अवसर पर विचार करते हैं, इस कानूनी दस्तावेज के निर्माण, कार्यप्रणाली और भविष्य की चुनौतियों को समझना अनिवार्य है जो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के लिए मार्गदर्शक शक्ति रहा है। भारत की विविधता और जटिलताओं को देखते हुए भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करना एक असाधारण उपलब्धि थी। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, 299 सदस्यों वाली संविधान सभा ने एक नए स्वतंत्र लेकिन विविधतापूर्ण राष्ट्र के लिए संविधान तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. बीआर अंबेडकर ने मसौदा समिति की अध्यक्षता की और सुनिश्चित किया कि यह दस्तावेज न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व को प्रतिबिंबित करे। मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया को पूरा करने में सभा को 2 साल, 11 महीने और 18 दिन लगे, जिसके दौरान इसने विस्तृत बहस और विचार-विमर्श किया। संयुक्त राज्य अमेरिका, आयरलैंड और कनाडा जैसे विभिन्न देशों के संविधानों से प्रेरणा लेते हुए, भारतीय संविधान ने सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल किया और उन्हें भारतीय वास्तविकताओं के अनुरूप ढाला। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू हुआ, जिसने भारत गणराज्य के जन्म को चिह्नित किया। भारतीय संविधान, अपने 448 अनुच्छेदों, 12 अनुसूचियों और कई संशोधनों के साथ, दुनिया के सबसे विस्तृत संविधानों में से एक है। इसकी मुख्य ताकत इसकी लचीलापन और अनुकूलनीयता में निहित है। अपने मूलभूत सिद्धांतों में कठोर होने के बावजूद, यह उभरते सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए संशोधनों की अनुमति देता है। अपने गोद लेने के बाद से, संविधान ने राष्ट्र को विभाजन, आर्थिक संकट और सामाजिक उथल-पुथल सहित कई चुनौतियों के माध्यम से मार्गदर्शन किया है, जिससे निरंतरता और स्थिरता सुनिश्चित हुई है। अपनी सफलता के बावजूद, भारतीय संविधान कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। भारत को संसाधन आवंटन, विधायी शक्तियों और प्रशासनिक स्वायत्तता को लेकर केंद्र और राज्यों के बीच बढ़ते तनाव का सामना करना पड़ रहा है, जबकि संवैधानिक संरक्षक के रूप में न्यायपालिका की भूमिका के बावजूद न्यायिक सक्रियता और पारदर्शिता के बारे में चिंताएँ बनी हुई हैं। धनबल, राजनीति का अपराधीकरण और घटता मतदाता मतदान जैसे मुद्दे तत्काल सुधार की मांग करते हैं। साथ ही, संवैधानिक सुरक्षा उपायों के बावजूद जाति-आधारित भेदभाव, लैंगिक असमानता और क्षेत्रीय असमानताएं देश की प्रगति को कमजोर कर रही हैं। डिजिटल युग में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन बनाना बहुत चुनौतीपूर्ण हो गया है। जैसे-जैसे भारत एक गणतंत्र के रूप में अपनी शताब्दी की ओर बढ़ रहा है, जवाबदेही और पारदर्शिता के लिए संस्थानों को मजबूत करके, सहभागी लोकतंत्र को बढ़ावा देकर, धर्मनिरपेक्ष और बहुलवादी लोकाचार को कायम रखते हुए और यह सुनिश्चित करके संविधान के आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि करने की सख्त जरूरत है कि संवैधानिक संशोधन इसके मूल सिद्धांतों को संरक्षित करें।

राजनीति में लैंगिक पूर्वाग्रह

दुनिया पितृसत्तात्मक मानसिकता, लिंगवाद और श्रम के लैंगिक विभाजन में गहराई से उलझी हुई है। मुख्य राजनीतिक कार्यकारी के रूप में महिलाओं की हिस्सेदारी अभी भी पुरुषों की तुलना में अधिक है।

अर्चना दत्ता
(लेखिका दूरदर्शन की पूर्व महानिदेशक हैं)

डोनाल्ड ट्रंप की दूसरी बार चुनावी जीत के बाद, एक प्रमुख अमेरिकी दैनिक ने पांच हजार से अधिक महिला मतदाताओं के बीच उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए एक सर्वेक्षण किया। उनमें से अधिकांश ने 'अधिकारों' के ह्रास और 'उनके प्रजनन भविष्य' के बारे में चिंता व्यक्त की, और 'दुख', 'डरावना', 'निराशा', 'पीड़ा', 'विश्वासघात' और 'दिल टूटने' जैसी भावनाओं को व्यक्त किया। कुछ पहली बार मतदान करने वाले मतदाताओं की टिप्पणियों में भी निराशा दिखी, क्योंकि उनमें से कई ने महसूस किया कि उनकी आवाज़ 'पहले से कहीं ज़्यादा दबा दी गई' और उन्हें 'खाली हाथ' छोड़ दिया गया। जबकि एक 36 वर्षीय महिला ने अफसोस जताया कि 'यह स्पष्ट है कि पुरुष सत्ता पर कब्ज़ा करना चाहते थेज इस चुनाव में लिंगभेद ने जीत हासिल की'। जबकि, एक अन्य प्रमुख अमेरिकी दैनिक ने हैरिस की हार का कारण 'गर्भपात के अधिकार' और 'लोकतंत्र की सुरक्षा' जैसे मुद्दों पर उनके ज़्यादा ज़ोर देना और अर्थव्यवस्था या आव्रजन की स्थिति पर पर्याप्त ध्यान न देना बताया, जिसे कई अमेरिकी सबसे ज़्यादा दबाव वाले मुद्दे मानते हैं। दूसरी ओर, हैरिस ने अपने समर्पण भाषण में अपने समर्थकों से सतर्क रहने और अपने मूल्यों के लिए लड़ते रहने का आग्रह किया। फिर भी, प्रजनन स्वतंत्रता के लिए काम करने वाले कई गैर-लाभकारी संगठनों ने डेमोक्रेट्स से %अपनी पार्टी और राष्ट्र दोनों के भीतर लिंगभेद का सीधे सामना करने के लिए एक दीर्घकालिक योजना विकसित करने का आग्रह किया - जिसने हैरिस और हिलेरी क्लिंटन दोनों को बाधित किया%, जो एक प्रमुख पार्टी के राष्ट्रपति पद के लिए नामांकन जीतने वाली एकमात्र महिला हैं। अमेरिका में, 2023 में महिलाओं ने कांग्रेस की 28 प्रतिशत सीटों पर कब्जा कर लिया, जबकि डेमोक्रेट्स ने रिपब्लिकन पर बढ़त हासिल की, 41 प्रतिशत सीटों के साथ, और रिपब्लिकन के पास केवल 15.4 प्रतिशत सदस्य थे।

महिलाएँ सभी राज्य विधायकों में 32.7 प्रतिशत हैं, डेमोक्रेट में 48 प्रतिशत और रिपब्लिकन में 20 प्रतिशत हैं। डेमोक्रेटिक महिलाएँ 26 राज्य विधानसभाओं में डेमोक्रेटिक पुरुषों के बराबर या उससे ऊपर हैं। जबकि रिपब्लिकन महिलाएँ सभी राज्यों में रिपब्लिकन पुरुषों के बराबर नहीं हैं, 47 राज्य विधानसभाओं में रिपब्लिकन सीटों का एक तिहाई या उससे कम हिस्सा रखती हैं। अध्ययनों ने टिप्पणी की है कि पार्टियों में लिंग भूमिकाओं के बारे में प्रचलित मान्यताएँ और दृष्टिकोण राजनीतिक प्रतिनिधित्व को नियंत्रित करते हैं, और रूढ़िवादियों के बीच अधिक पारंपरिक धारणा बनी हुई है कि %महिलाओं की सफलता पुरुषों की कीमत पर है% (रटगर्स विश्वविद्यालय में अमेरिकी महिला और राजनीति केंद्र)। हालाँकि, यह केवल यूएसए ही नहीं है जिसने कभी भी सर्वोच्च राजनीतिक पद पर किसी महिला को नहीं चुना, बल्कि स्वीडन जैसे कई सबसे सामाजिक और आर्थिक रूप से उन्नत देशों में, अधिकांश संस्थानों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का अच्छा रिकॉर्ड होने के बावजूद, संसद में 47.5 प्रतिशत और मंत्रिपरिषद में 54.5 प्रतिशत, कभी भी प्रधान मंत्री के रूप में एक महिला नहीं रही है। पूर्वी यूरोप और मध्य एशिया के देशों ने राजनीतिक सशक्तिकरण (ड्ढश्वस्न) में काल्पनिक 100 प्रतिशत लिंग अंतर का केवल 15 प्रतिशत ही बंद किया है। जबकि भारत, सबसे बड़ा लोकतंत्र, वर्तमान लोकसभा में महिलाओं की बहुत कम उपस्थिति (13.62 प्रतिशत) है। पिछले साल एक कानून पारित किया गया था, जिसके तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित की गई थीं, लेकिन इसका क्रियान्वयन निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन की प्रक्रिया पूरी होने तक स्थगित कर दिया गया है। भारत में एक महिला प्रधानमंत्री और दो महिला राष्ट्रपति थीं। लेकिन, गहरी संरचनात्मक और प्रणालीगत कठिनाइयों (राजे, 2019) ने महिलाओं का खराब प्रतिनिधित्व किया, जिसके परिणामस्वरूप शासन और निर्णय लेने में 'लोकतांत्रिक कमी' हुई (रहमान और राव, 2004)। भारत ने 90 के दशक की शुरुआत से ही ग्रामीण-शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की, फिर भी, कई सर्वेक्षणों में पाया गया कि अधिकांश महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों ने 'लिंग-आधारित भेदभाव' की सूचना दी, और कई स्थानों पर, उनके पुरुष रिश्तेदारों, विशेष रूप से पतियों ने 'प्रॉक्सी' भूमिकाएँ निभाईं। राजनीति में इस असमान शक्ति समीकरण के कारणों की व्याख्या करते हुए, अध्ययनों (फॉक्स और लॉलेस, 2004) ने स्पष्ट किया कि 'महत्वाकांक्षा में लिंग अंतर' है, क्योंकि राजनीतिक उम्मीदवारों के रूप में आवश्यक पेशेवर और आर्थिक साख वाली कई योग्य महिलाएँ अक्सर 'कार्यकारी कार्यालयों के लिए दौड़ने के लिए कम प्रोत्साहित महसूस करती हैं और उनका मानना है कि वे पुरुषों की तुलना में ऐसे कार्यालयों के लिए कम योग्य हैं'।

साक्ष्य यह भी बताते हैं कि महिलाओं का राजनीतिक करियर अक्सर 'पारिवारिक और संबंधपरक विचारों' से प्रभावित होता है, और यदि उन्हें अपने करियर की उपलब्धियों के लिए अधिक लागत का सामना करना पड़ता है, तो वे ऐसे उद्देश्यों को पूरा करने से कतराती हैं। साथ ही, अन्य शोधकर्ताओं ने मतदाताओं के पूर्वाग्रह और भेदभाव की ओर इशारा किया जो महिलाओं की चुनावी संभावनाओं में मात्रात्मक रूप से मायने रखते हैं। यहां तक कि राजनीतिक दल के नेता भी गेट-कीपर के रूप में कार्य करते हैं, यदि वे महिलाओं के प्रति मतदाताओं के पूर्वाग्रह के बारे में जानते हैं, और वोट-अधिकतम करने की रणनीति के रूप में महिला दावेदारों के बजाय पुरुष उम्मीदवारों को बढ़ावा देने के इच्छुक हैं (एस्टेव-वोलार्ट और बैग्स (2012)। फिर भी, पश्चिमी यूरोप में विश्व मूल्य सर्वेक्षण (2017-2020) की नवीनतम लहर के आंकड़ों से पता चला है कि 20 प्रतिशत से भी कम सर्वेक्षण उत्तरदाताओं ने इस कथन से सहमति व्यक्त की है कि पुरुष महिलाओं की तुलना में बेहतर राजनीतिक नेता बनाते हैं।

अब, इसका समाधान क्या है? स्वीडन (बेस्ले एट अल., 2017) जैसे विभिन्न देशों में उम्मीदवारों की सूची में लैंगिक कोटा लागू करना महिलाओं को सशक्त बनाने और निर्वाचित राजनेताओं की गुणवत्ता में सुधार करने में कमोबेश प्रभावी है, खासकर उम्मीदवारों की सूची की संरचना को विनियमित करके (कैम्पा और हॉसर, 2020)। कई लोगों ने यह भी सुझाव दिया कि एक संयुक्त राजनीतिक-आर्थिक रणनीति जो श्रम बाजार में महिलाओं के समावेश पर जोर देती है, और जोड़ों के भीतर आर्थिक भूमिकाओं का पुनर्वितरण करती है, लैंगिक-भूमिका दृष्टिकोण को बदल सकती है और महिलाओं को राजनीतिक सत्ता के पदों पर प्रवेश करने में मदद कर सकती है (फोल्के और रिकने, 2020 और कैम्पा और सेराफिनेली, 2019)। चूंकि दुनिया पितृसत्तात्मक मानसिकता, लिंगवाद और श्रम के लैंगिक विभाजन में गहराई से उलझी हुई है, मुख्य राजनीतिक कार्यकारी के रूप में महिलाओं की हिस्सेदारी अभी भी पुरुषों की तुलना में 9 से 1 से अधिक है।

> साक्ष्य यह भी बताते हैं कि महिलाओं का राजनीतिक करियर अक्सर 'पारिवारिक और संबंधपरक विचारों' से प्रभावित होता है, और यदि उन्हें अपने करियर की उपलब्धियों के लिए अधिक लागत का सामना करना पड़ता है, तो वे ऐसे उद्देश्यों को पूरा करने से कतराती हैं। साथ ही, अन्य शोधकर्ताओं ने मतदाताओं के पूर्वाग्रह और भेदभाव की ओर इशारा किया जो महिलाओं की चुनावी संभावनाओं में मात्रात्मक रूप से मायने रखते हैं। यहां तक कि राजनीतिक दल के नेता भी गेट-कीपर के रूप में कार्य करते हैं, यदि वे महिलाओं के प्रति मतदाताओं के पूर्वाग्रह के बारे में जानते हैं, और वोट-अधिकतम करने की रणनीति के रूप में महिला दावेदारों के बजाय पुरुष उम्मीदवारों को बढ़ावा देने के इच्छुक हैं।

भारत में चिकित्सा पर्यटन

> विदेश में रहने वाले भारतीय प्रवासी भी सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा देखभाल के लिए तेजी से भारत लौट रहे हैं।

आरके सिन्हा
(लेखक, राज्यसभा के पूर्व सांसद हैं)

हाल ही में, ब्रिटेन के राजा चार्ल्स अपनी पत्नी, रानी कैमिला के साथ एक निजी यात्रा पर भारत आए। अपने तीन दिवसीय प्रवास के दौरान, वे बेंगलुरु के पास एक आधुनिक समग्र स्वास्थ्य केंद्र में रुके, जहाँ उन्होंने योग, ध्यान सत्र और योग चिकित्सा में भाग लिया। यह दर्शाता है कि सामान्य रोगियों से लेकर राजघरानों तक, वैश्विक अभिजात वर्ग भी भारत के आधुनिक डॉक्टरों और पारंपरिक उपचार विधियों से अच्छे स्वास्थ्य और युवावस्था को बनाए रखने के लाभों को महसूस कर रहे हैं। हाल के वर्षों में, भारत हृदय रोग, हड्डी के विकार, किडनी और लीवर प्रत्यारोपण, दंत चिकित्सा, कैंसर और यहां तक कि लाइलाज मानी जाने वाली बीमारियों के इलाज के लिए मरीजों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य बन गया है। मरीज न केवल दक्षिण एशियाई देशों से बल्कि अफ्रीका, मध्य एशिया, खाड़ी देशों और यहां तक कि पश्चिमी देशों से भी हर साल लाखों की संख्या में आ रहे हैं। सस्ती और सफल आधुनिक चिकित्सा उपचारों के साथ-साथ आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, आहार विज्ञान और बाजरा आधारित चिकित्सा जैसी पारंपरिक भारतीय उपचार पद्धतियाँ विदेशी रोगियों के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। उदाहरण के लिए, केन्या के पूर्व प्रधानमंत्री, रैला ओडिंगा की बेटी ने केरल के एर्नाकुलम में श्रीधरेयम आयुर्वेदिक नेत्र अस्पताल में उपचार प्राप्त करने के बाद अपनी दृष्टि वापस पा ली।

इस सफलता के कारण भारत में आयुर्वेदिक उपचार चाहने वाले पूर्वी अफ्रीका के रोगियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। देहरादून की अपनी लगातार यात्राओं के दौरान, मैं अक्सर उड़ानों और ट्रेनों में सभी उम्र और व्यवसायों के पुरुषों और महिलाओं से मिलता हूँ। उनमें से कई दो सप्ताह से लेकर तीन महीने तक के प्रवास के लिए हरिद्वार, ऋषिकेश और देहरादून जैसे स्थानों पर आश्रमों या स्वास्थ्य केंद्रों की ओर जाते हैं।

उनके ठहरने की अवधि और लागत - जो अक्सर लक्जरी पाँच सितारा होटल दरों के बराबर या उससे अधिक होती है - उनकी स्थिति की गंभीरता और आवश्यक उपचार पर निर्भर करती है। पारंपरिक उपचारों के अलावा, दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और चंडीगढ़ जैसे शहरों के आधुनिक अस्पताल अपनी उपस्थिति को बेहतर बनाने के लिए कॉस्मेटिक प्रक्रियाओं की तलाश करने वाले बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय रोगियों को आकर्षित कर रहे हैं। प्लास्टिक सर्जन हर महीने दर्जनों विदेशी मरीजों को जले हुए घाव की मरम्मत, बाल प्रत्यारोपण और त्वचा कसने की प्रक्रियाओं जैसे उपचारों के लिए देखते हैं। यह प्रवृत्ति भारत के लिए अधिक विदेशी रोगियों को आकर्षित करने का एक सुनहरा अवसर दर्शाती है। चिकित्सा पर्यटन न केवल मूल्यवान विदेशी मुद्रा अर्जित करता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को भी समर्थन देता है, क्योंकि मरीज अक्सर देखभाल करने वालों के साथ आते हैं जो हफ्तों या महीनों तक होटलों में रहते हैं।

विदेश में रहने वाले भारतीय प्रवासी भी सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा देखभाल के लिए तेजी से भारत लौट रहे हैं। भारत की बढ़त यूरोप या अमेरिका में समान सेवाओं की लागत के एक अंश पर शीर्ष-स्तरीय प्री-और पोस्ट-सर्जिकल देखभाल प्रदान करने में निहित है। भारत में कॉस्मेटिक सर्जन वसा घटाने और त्वचा कसने जैसी प्रक्रियाओं की मांग करने वाले रोगियों का इलाज करते हैं, क्योंकि उम्र बढ़ने और पर्यावरणीय कारक त्वचा संबंधी समस्याओं को बढ़ाते हैं। सौंदर्य उपचारों के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ, पुरुष और महिला दोनों ही कॉस्मेटिक और सर्जिकल समाधानों का विकल्प चुन रहे हैं।

विश्व स्तर पर, सालाना लाखों कॉस्मेटिक सर्जरी की जाती हैं, जिसमें अमेरिका इस क्षेत्र में अग्रणी है। शुरुआत में महिलाओं के बीच लोकप्रिय होने के बावजूद, प्लास्टिक सर्जरी अब पुरुषों के बीच भी उतनी ही आम है। मोटे तौर पर, प्लास्टिक सर्जरी को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है- कॉस्मेटिक सर्जरी, जो दिखावट को निखारती है, और पुनर्निर्माण सर्जरी, जो चोटों, बीमारियों या जन्म दोषों से होने वाले नुकसान की मरम्मत करती है। भारत अपने उच्च योग्य चिकित्सा पेशेवरों, उन्नत उपकरणों और लागत प्रभावी उपचारों के साथ, चिकित्सा पर्यटन में एक बड़ी छलांग लगाने के लिए अच्छी स्थिति में है।

भारत में उपचार की लागत अमेरिका की तुलना में लगभग एक-चौथाई है, गुणवत्ता से समझौता किए बिना। यदि भारत रणनीतिक रूप से इस क्षेत्र को मजबूत करता है, तो रोगी थाईलैंड, सिंगापुर, चीन और जापान जैसे प्रतिस्पर्धियों की तुलना में भारत को अधिक पसंद करेंगे, जो चिकित्सा पर्यटकों के लिए भी होड़ कर रहे हैं। चिकित्सा पर्यटन वैश्विक स्तर पर कई अरब डॉलर का उद्योग है। एक बड़ा हिस्सा हासिल करने के लिए, भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अस्पताल और क्लीनिक विकसित करने चाहिए, कार्डियोलॉजी, ऑन्कोलॉजी, ऑर्थोपेडिक्स और प्रत्यारोपण जैसे क्षेत्रों में विशेष देखभाल प्रदान करनी चाहिए और टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को अपनाना चाहिए। भारत की बाजरा-आधारित चिकित्सा भी एक अनूठी बढ़त प्रदान करती है। पद्म श्री पुरस्कार विजेता डॉ. खादर वली का दावा है कि बाजरा बिना किसी दवा के छह सप्ताह से छह महीने के भीतर सबसे गंभीर बीमारियों को भी ठीक कर सकता है। इस तरह के अनूठे दृष्टिकोण, सरकार से मजबूत नीति समर्थन के साथ, भारत की चिकित्सा पर्यटन क्षमता को और बढ़ा सकते हैं। मार्केटिंग अभियान, रोगी-केंद्रित पैकेज, वीज़ा सुविधा, भाषा अनुवाद सेवाएँ और आवास व्यवस्थाएँ भारत को अंतर्राष्ट्रीय रोगियों के लिए अधिक आकर्षक गंतव्य बना सकती हैं। आँकड़े खुद ही अपनी कहानी बयां करते हैं- 2022 में 14 लाख विदेशी रोगी इलाज के लिए भारत आए। 2030 तक सालाना 1 करोड़ अंतरराष्ट्रीय रोगियों को आकर्षित करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को पूरा करने के लिए, भारत को विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करनी चाहिए और विशेषज्ञता के विशिष्ट क्षेत्रों को विकसित करना चाहिए। उचित योजना और क्रियान्वयन के साथ, भारत खुद को चिकित्सा पर्यटन के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित कर सकता है।

आप की बात

जी-20 में भारत

भारत जी- 20 सम्मेलन में अपने निजी मामलों को भी सुलझाने में दिलचस्पी ले रहा है। सम्मेलन में उपस्थित कई राष्ट्र अध्यक्षों से विवादित मामलों पर सकारात्मक निदान से भारत ने एक तीर कई निशाने साधने की जो कोशिश की है वह अवश्य रंग लाएगी। इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी हुआ विचार विमर्श भारत की किसी भी मामले के समाधान के प्रति प्रतिबद्धता जताता है। रियो डी जनेरियो में जी-20 सम्मेलन अपने उद्देश्यों के अलावा सदस्य देशों की आपसी चर्चा विचार विमर्श और सहमति के लिए भी जाना जाएगा। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने इस दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीएर स्टार्मर से भी मुलाकात की जो भारत के आर्थिक अपराधी विजय माल्या और नीरव मोदी के प्रत्यारोपण को लेकर थी। प्रत्यारोपण का मामला ब्रिटेन ने कानूनी उलझन में डालकर उलझा रखा है। इसके अलावा मोदी ने इटली, फ्रांस, पुर्तगाल और नार्वे के राष्ट्रीय अध्यक्षों से भी भेंट में अहम चर्चाएं की। भारत ने अपने निजी मामलों के अलावा आपसी सार्वजनिक हितों को भी चर्चा में रखा ताकि उन पर सहमति बनाकर समन्वित लाभ सबको मिल सके। भारत और ब्रिटेन के बीच मुक्त व्यापार के लिए अगले साल चर्चा पर बनी सहमति बड़ी उपलब्धि है इससे दोनों देशों के आर्थिक हित सधेंगे ही।

-**अमृतलाल मारू,** इंदौर

अमेरिकी नीतियां

ट्रंप का पिछला शासन भारत-अमेरिका संबंधों के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ। अमेरिका प्रथम नीति के तहत ट्रंप ने अमेरिकी हितों को सर्वोपरि रखा, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापारिक और कूटनीतिक संबंधों में नए आयाम जुड़े। ट्रंप प्रशासन की व्यापार नीतियों ने भारतीय उत्पादों पर भारी आयात शुल्क लगाकर भारतीय उद्योगों को प्रभावित किया। इस्पात और एल्युमिनियम पर शुल्क तथा एच-1बी वीज़ा नियमों को सख्त बनाने से भारतीय आईटी पेशेवरों और उद्योगों को झटका लगा। उदाहरण के लिए, कई भारतीय कंपनियों को अमेरिकी परियोजनाओं में कटौती करनी पड़ी। हालांकि, इन चुनौतियों ने आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति दी और घरेलू उद्योगों ने नए बाजार तलाशने शुरू किए। सामरिक दृष्टि से ट्रंप प्रशासन ने भारत के साथ संबंध मजबूत किए। मेजर डिफेंस पार्टनर का दर्जा और क्वाड जैसे मंचों पर भारत की भूमिका को प्रोत्साहन मिला। अपाचे और सीहॉक हेलीकॉप्टर जैसे हथियारों की आपूर्ति ने भारतीय सेना को सशक्त बनाया। लेकिन रूस से एस-400 मिसाइल प्रणाली की खरीद पर अमेरिकी आपत्ति ने भारत की स्वतंत्र रणनीति की अनिवार्यता को स्पष्ट किया। भारत को अमेरिकी निर्भरता कम कर अपने व्यापार और सामरिक संबंधों में संतुलन बनाना होगा। यूरोप, अफ्रीका, और एशिया में नए साझेदार तलाशने होंगे।

-**अवनीश कुमार गुप्ता,** आजमगढ़

विदेशों पर निर्भरता

1980 के दशक से रोज़गार आधारित शिक्षा पर अत्यधिक ज़ोर दिए जाने के कारण भारत विज्ञान की विभिन्न शाखाओं से संबंधित आधारभूत सिद्धांतों के शोध और अध्ययन में पिछड़ सकता है जिससे नए सिद्धांतों के प्रतिपादन, नई खोजों, आविष्कारों आदि में हमारी प्रगति पर प्रभाव पड़ेगा। ऐसी ही चेतावनी कुछ दशकों पूर्व ज्ञान आयोग ने भी दी थी। उदाहरणार्थ, डिजिटल क्षेत्र में हम पहले से बने ऐप्स और सॉफ्टवेयर के उपयोग सीखकर रोज़गार पा सकते हैं लेकिन इस क्षेत्र में शोध और रिसर्च किए बिना हम स्वयं ऐप्स और सॉफ्टवेयर बना नहीं सकते। इसीलिए हम अमेरिका और चीन में बने डिजिटल उत्पादों पर काफी हद तक निर्भर रहे हैं। इस निर्भरता के भयानक और दूरगामी नुकसान हो भी रहे हैं और भविष्य में अत्यधिक खतरों का सामना करना पड़ सकता है। डिजिटल क्षेत्र के अलावा भौतिक, रसायन, चिकित्सा, कृषि, खगोल आदि विज्ञानों में हम पिछड़ते जाएंगे। पहले ही इन विज्ञानों में नोबल पुरस्कार हम ने 2 बार ही प्राप्त किए हैं। यदि हमने दवाइयों के शोध नहीं किए तो विदेशी दवाइयों पर निर्भर रहेंगे। वे देश षडयंत्रपूर्वक हमें दवाइयों के रूप में जेनेटिक समस्याएं दे सकते हैं। 1960 के दशक में आयातित अनाजों के साथ कितनी समस्याएं भी आई थी। हमें विदेशी निर्भरता से बचना होगा

- **ललित दुबे,** रतलाम

शीर्ष पर महिला हॉकी

भारत की महिला हॉकी टीम कप्तान सलीमा टेटे की अगुवाई में एशियन हॉकी चैंपियनशिप में चीन को 1-0 से हराकर एशियन हॉकी चैंपियनशिप का खिताब भारत के नाम किया। बिहार के राजगीर में खेले गए इस चैंपियनशिप के लिए चीन, जापान, मलेशिया और कोरिया की टीमों से लोहा लेते हुए देश की बेटियों ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। भारत ने सेमी फाइनल के कड़े मुकाबले में जापान को 2-0 से हराकर फाइनल प्रवेश किया था। इससे पहले भारत ने मलेशिया, कोरिया,थाईलैंड, जापान और चीन को हरा कर भारत की टीम अजेय साबित हुई थी। इस टूर्नामेंट में दीपिका कुमारी ने 11 गोलकर शानदार व्यक्तिगत सफलता अर्जित की और अंत में फाइनल मैच में भी दीपिका ने एकमात्र विजय गोल दाग कर भारत को विजय दिलाई। भारत के खिलाड़ियों ने अपने प्रथम मैच से ही साहसिक अभियान की शुरुआत की थी। भारत की महिला हॉकी की टीम ने 150 करोड़ भारतीयों की आशा और आकांक्षा के अनुरूप खेल कर भारत का नाम रोशन किया है। हमारी टीम को सरकार की ओर से और सुविधाएं मिलनी चाहिए।

-**वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से **responsemail.hindipioneer@gmail.com** पर भी भेज सकते हैं।

140 करोड़ देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधता है संविधान: योगी

● लोकभवन में आयोजित समारोह में सीएम ने दी संविधान निर्माताओं को श्रद्धांजलि, बच्चों को किया सम्मानित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

संविधान दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोकभवन में आयोजित समारोह में संविधान की उद्देशिका का पाठन कराया और संविधान निर्माताओं को नमन किया।

मुख्यमंत्री ने भारत के संविधान को दुनिया का सबसे विस्तृत और सशक्त संविधान बताते हुए कहा कि बाबा साहब ने सबसे पहले संविधान के रूप में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की आधारशिला रखी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संविधान दिवस पर प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि यह दिन हमें अपने लोकतंत्र और संविधान की महानता का स्मरण कराता है। उन्होंने बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत का सच्चा सपूत बताते हुए कहा कि उनकी अगुवाई में बनी संविधान सभा की ड्राफ्टिंग कमेटी ने न्याय, समता और बंधुता जैसे मूल्यों को संविधान में शामिल कर देश को एक सशक्त भविष्य दिया। उन्होंने बताया कि 15 अगस्त 1947 को देश की आजादी के बाद 1946 में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मांग पर संविधान सभा का गठन हुआ था। संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को हुई, जिसमें डॉ. राजेंद्र प्रसाद को अध्यक्ष चुना गया। 13 समितियों के माध्यम से संविधान निर्माण का कार्य किया गया, जिसमें ड्राफ्टिंग कमेटी का नेतृत्व बाबा साहब डॉ. अंबेडकर ने किया। संविधान निर्माण के लिए 13 कमेटियों के बहस और फिर उसके महत्वपूर्ण अंशों को संविधान में शामिल किया गया, मुख्यमंत्री ने इन बहसों को संविधान का सार बताते हुए कहा कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को इनसे मार्गदर्शन लेना चाहिए। सीएम योगी ने भारत के लोकतंत्र की तारीफ करते हुए कहा कि भारत का संविधान हर जाति, मत और मजहब के व्यक्ति को समान मताधिकार देता है। जब दुनिया के अन्य लोकतंत्रों में भेदभाव जारी था, भारत ने पहले ही आम चुनाव में हर वयस्क नागरिक को वोट देने का अधिकार दिया। यह बाबा साहब अंबेडकर और संविधान सभा की दूरदर्शिता का परिणाम है। संविधान दिवस का यह आयोजन प्रदेशवासियों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों की महत्ता को समझाने और लोकतंत्र के प्रति उनकी आस्था को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। योगी ने कहा कि बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की यह धरोहर है जो संपूर्ण भारत को 140 करोड़ भारतवासियों को एकता के सूत्र में बांधता है।

संविधान के आदर्शों को आत्मसात करने का किया आह्वान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन के अंत में सभी नागरिकों से संविधान के आदर्शों और मूल्यों को आत्मसात करने की अपील की। उन्होंने कहा कि एक सशक्त और समृद्ध भारत का निर्माण तभी संभव है, जब हर नागरिक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करे और संविधान में दिए गए अधिकारों का सही उपयोग करे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने 'संविधान से आदर्श और मूल्य' विषय पर आयोजित वाद-विवाद और निबंध प्रतियोगिता के विजेता छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। उन्होंने बच्चों को संविधान के मूल्यों को आत्मसात करने और इसके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। इस दौरान भारत के लोकतंत्र और संविधान से संबंधित एक डॉक्यूमेंट्री का भी प्रसारण किया गया, जिसमें संविधान निर्माण से जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं और बहसों को दर्शाया गया। संविधान दिवस के इस आयोजन में दोनों उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक, कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना, अनुसूचित जाति/जनजाति आयोग के अध्यक्ष बैजनाथ रावत, प्रमुख सचिव मनोज कुमार सिंह समेत कई मंत्री, विधायक और अधिकारी उपस्थित रहे।

13 जनवरी से 26 फरवरी तक चलेगा प्रयागराज महाकुंभ: सीएम योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार लखनऊ में एक कार्यक्रम में आगामी महाकुंभ-2025 को लेकर सरकार के कार्यों, प्रयासों की विस्तृत जानकारी देते यूपी में साढ़े सात वर्ष में हुए सकारात्मक बदलाव की भी चर्चा की। सीएम ने कहा कि स्वच्छ कुंभ के साथ डिजिटल कुंभ के भी दर्शन होंगे।

योगी ने कहा कि प्रयागराज कुंभ की बात करें तो लगता था कि हम सबने कुंभ को गंदगी, भगदड़ व अव्यवस्था का पर्याय बना दिया था। कुंभ मेले के प्रभारी मंत्री का दायित्व भी ऐसे लोगों को दिया जाता था, जिन लोगों में श्रद्धा, परंपरा, संस्कृति व विरासत के प्रति का सम्मान नहीं था, लेकिन हमने विरासत के प्रति सम्मान, श्रद्धा का भाव रखा। प्रयागराज कुंभ की व्यवस्था को देखकर पीएम मोदी जी की प्रेरणा से 2019 में यूनेस्को ने मानवता के

● 45 दिन में 35-40 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान

अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में कुंभ को मान्यता दी है। सीएम ने बताया कि प्रयागराज महाकुंभ 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चलेगा। 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा का स्नान होगा। 14 जनवरी को मकर संक्रांति का शाही स्नान होगा।

29 जनवरी को मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी 3 फरवरी, 12 फरवरी को माघ पूर्णिमा व 26 फरवरी को महाशिवरात्रि का स्नान होगा। दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक आयोजन में से एक प्रयागराज कुंभ का आयोजन इस बार 45 दिन का होगा। सीएम ने महाकुंभ-2025 को लेकर सरकार की तैयारियों पर भी प्रकाश डाला।

भारत का संविधान नागरिकों के लिए पूजनीय: राज्यपाल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में मंगलवार को राजभवन के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने संविधान दिवस के अवसर पर भारत के संविधान की उद्देशिका का पाठन किया और अपने मूल कर्तव्यों के पालन की शपथ ली। इस अवसर पर राज्यपाल ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि भारत का संविधान पूजनीय है। हम सबको संविधान के अनुच्छेदों का पाठन करके इसे अपने विचारों में अंगीकृत करना चाहिए। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि सिर्फ अधिकारों की जानकारी तक स्वयं को सीमित न रखें अपितु अपने कर्तव्यों की जानकारी भी रखें और कर्तव्यों को ही प्राथमिकता दें। उन्होंने कहा कि भारत का संविधान भारत की तमाम विविधताओं को ध्यान में रखकर एकता की मूल भावना पर बनाया गया है। हम सबका कर्तव्य है कि देश हित में राष्ट्र के विकास के लिए मिलजुल कर कार्य करें। समाज में जो लोग पीछे रह गए हैं, जो गरीब तपके के लोग हैं, उनके उत्थान के लिए अपना योगदान दें। राज्यपाल ने कार्यपालन की चर्चा में कहा कि अचानक से आए कार्यों को टीम भावना के साथ मिलजुल कर पूरा करें। कार्यपालन में कार्य पूर्ति की भावना को ही प्राथमिकता दें। उन्होंने कहा कि प्राय: लोग इस बिंदु पर भ्रमित होते हैं कि यह कार्य मेरा नहीं है। ऐसी भावनाएं मन में ना लाकर किसी भी कार्य की अनदेखी न करें। राज्यपाल ने इस अवसर पर पदासीन अधिकारियों को विशेष रूप से सकारात्मक भाव से दायित्व निर्वहन के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बतौर राजस्व मंत्री गुजरात के अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि अधिकारियों को हमेशा सकारात्मक भाव से कार्य संपन्न करने की मशां पर चलना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल जी ने राजभवन के पुस्तकालय में उपलब्ध संविधान की प्रति का पाठन करने, प्रत्येक कर्मचारी द्वारा इसके अनुच्छेदों पर अपना स्वयं का वक्तव्य बनाने, इससे संबंधित विषयों पर चित्र बनाने, नाटक आयोजित करने तथा अन्य विविध आयोजनों के लिए भी निर्देशित किया।

75 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पूर्ण करके आगे बढ़ रहा है भारत का आधुनिक लोकतंत्र: धर्मपाल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● भाजपा ने संविधान के प्रति प्रतिबद्धता के साथ डा. भीमराव अम्बेडकर को किया नमन

भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश में जिला स्तर पर संविधान दिवस मनाकर संविधान के प्रति प्रतिबद्धता के साथ बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर को कृतज्ञ नमन किया। भाजपा प्रदेश मुख्यालय में मंगलवार को प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने सभी को संविधान दिवस की बधाई देते हुए संविधान का पूजन कर नमन किया। प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने प्रदेश भाजपा मुख्यालय में संविधान दिवस पर आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि आज भारत का आधुनिक लोकतंत्र 75 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पूर्ण करके आगे बढ़ रहा है। आज ही के दिन 1949 में संविधान देश की जनता को समर्पित किया गया। गणतंत्र, पंथनिरपेक्षता, सशक्त निर्वाचन पद्धति, संघीय ढांचा, मौलिक अधिकर, मूलभूत कर्तव्य, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय संविधान के कीर्तिमान है। संविधान भारत में सभी नागरिकों के लिए दिग्दर्शक तत्व है। हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत के संविधान के सिद्धान्तों और आर्दशों से सदैव प्रेरणा ली है और संविधान के मूल्यों को सभी लोककल्याणकारी योजनाओं में समाहित किया है। जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाकर एक देश-एक संविधान के संकल्प को सिद्ध किया है। संविधान के निर्माता डा. बाबा साहेब अम्बेडकर के जीवन से जुड़े पंचतीर्थों का निर्माण कराकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है।

पूर्व विधायक श्याम देव राय चौधरी का निधन, सीएम ने जताया शोक

दस दिन पहले वाराणसी के एक अस्पताल में पूर्व विधायक का हालचाल लेते सीएम योगी (फाइल फोटो)

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भाजपा के वरिष्ठ नेता व वाराणसी के शहर दक्षिणी से कई बार विधायक रहे श्यामदेव राय चौधरी (दादा) का मंगलवार को निधन हो गया। वे काफी समय से बीमार थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनके निधन पर शोक जताया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर पोस्ट किया कि वरिष्ठ राजनेता एवं पूर्व विधायक श्यामदेव राय चौधरी (दादा) का निधन अत्यंत दुखद और भाजपा परिवार की अपूरणीय क्षति है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! मुख्यमंत्री ने लिखा कि प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को सद्गति तथा शोकाकुल परिजनों को यह अथाह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

संविधान को कोरा कागज समझती है भारतीय जनता पार्टी: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने संविधान दिवस पर सभी देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि संविधान हमारी संजीवनी है। संविधान पीडीए का प्रकाश स्तम्भ है। सच्चे समाजवादी ही संविधान वादी है। हम संविधान मानने वाले लोग है। संविधान का सम्मान करते है। बाबा साहब के बताए रास्ते पर चलते है।

भाजपा के लोग संविधान नहीं मनविधान से चलते हैं। भाजपा संविधान को कोरा कागज समझती है। वह संविधान के रास्ते पर नहीं चलती है। उत्तर प्रदेश में संविधान की धज्जियां उड़ाकर भाजपा ने उपचुनाव में वोट लूटा है। सरकार ने पुलिस के बल पर वोट की लूट की। लोगों को डराया, धमकाया, वोट नहीं डालने दिया। महिलाओं पर असलहा तानकर वोट डालने से रोका गया। मतदान के लिए जा रही महिला को पुलिस ने रिवाल्वर से डराया। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार संविधान विरोधी काम कर रही है।

संभल में घटना भाजपा सरकार ने जानबूझ कर कराया। पुलिस ने लोगों को गालियां दी, धमकाया, गोलियां मारी। युवाओं की मौत हुई। समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधिमंडल संभल में पीड़ित और परेशान लोगों से मिलने के लिए जाना चाहता था लेकिन सरकार ने रोक दिया है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधिमण्डल तो संभल जाएगा ही, मैं खुद भी संभल जाऊंगा। समाजवादी पार्टी पीड़ित परिवारों की मदद भी करेगी।

लोकतंत्र की मजबूती के लिए संविधान का सम्मान आवश्यक: सतीश महाना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना ने संविधान को मानव जीवन का मूल आधार बताते हुए कहा कि यह हमारे जीवन को नियमबद्ध बनाता है और प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने कहा कि संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं, बल्कि यह समाज को समरसता, समानता और विकास की ओर ले जाने वाला पवित्र ग्रंथ है। महाना मंगलवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग की तरफ से संविधान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। इससे पहले महाना तथा कुलपति द्वारा डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा तथा संविधान स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रगतिशील समाज या राष्ट्र के लिए नियम और कानून का होना अनिवार्य है। यदि संविधान का पालन न हो, तो समाज में अराजकता फैल सकती है। महाना ने कहा कि संविधान मानवता, सत्य और समानता की भावना का प्रतीक है। यदि हम अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे, तो संविधान की मूल मंशा को चरितार्थ कर सकेंगे। विधानसभा अध्यक्ष ने संविधान को एक प्रेरणास्रोत बताते हुए कहा कि यह न केवल सरकार चलाने वालों के लिए है, बल्कि हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह इसे समझे और इसका पालन करे। उन्होंने विधायिका की सकारात्मक भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि लोकतंत्र की ताकत विधायिका में है। उन्होंने आगाह किया कि किसी एक व्यक्ति की गलती से पूरी संस्था पर सवाल उठाना लोकतंत्र को कमजोर करता है। डॉ. भीमराव आंबेडकर के योगदान को याद करते हुए महाना ने कहा कि उन्होंने समाज की पीड़ा को समझते हुए संविधान में ऐसे प्रावधान किए।

सपा मुख्यालय में मनाया गया 'संविधान दिवस'

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा मुख्यालय लखनऊ सहित प्रदेश के सभी जनपदों में 'संविधान दिवस' मनाया गया। सपा मुख्यालय में भारत के संविधान में उल्लिखित उद्देशिका का राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी तथा प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने संविधान मान स्तम्भ के समक्ष वाचन किया। सपा ने संविधान के मूल उद्देश्यों की सुरक्षा एवं संविधान की गरिमा बनाए रखने का संकल्प भी लिया। सपा प्रवक्ता ने बताया कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में 26 जुलाई 2024 को आरक्षण दिवस पर संविधान मान स्तम्भ की स्थापना की थी। इसीदिन महात्मा ज्योतिबा पुले द्वारा संकल्पित आरक्षण को कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति साहू जी महाराज ने 26 जुलाई 1902 में अपने राज्य में आरक्षण लागू कर दिया।

समाजवाद को मिली ऐतिहासिक जीत: दीपक मिश्र

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी चिंतक और सांविधानिक व संसदीय अध्ययन संस्थान के सदस्य दीपक मिश्र ने संविधान की प्रस्तावना पर आए सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की सराहना करते हुए कहा है कि समाजवाद भारतीय संविधान और समाज की अजर आत्मा है। लोक कल्याण और शोषण विहीन समाज की स्थापना ही भारतीय समाजवादी विचारधारा तथा संविधान का समग्र लक्ष्य है । उन्होंने कहा कि समाजवाद चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह सरीखे शहीदों का रोमानी ख्वाब और नेहरू, सुभाष, लोहिया, जयप्रकाश समेत सभी राष्ट्रनिर्माताओं द्वारा अंगीकृत सिद्धांत है। जो लोग संविधान से समाजवाद शब्द हटवाना चाहते हैं, उनके अपने दुराग्रह हैं जो भारतीय संस्कृति और लोकजीवन के विरुद्ध हैं। दीपक मिश्र ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का निर्णय न केवल समाजवाद की अपितु भारतीय लोक जीवन के आदर्शों की जीत को रेखांकित करता है । उल्लेखनीय है कि सुब्रमण्यम स्वामी, संजय राउत सदृश कुछ लोगों ने संविधान की प्रस्तावना से समाजवाद शब्द हटाने की मांग की थी, तत्पश्चात केंद्र सरकार के कुछ दस्तावेज जारी हुए जिसमें संविधान की प्रस्तावना से समाजवाद शब्द गायब था। समाजवादी चिंतक दीपक मिश्र ने समाजवाद के संदर्भ में लेकर बहस चलाया और घोषणा की यदि संविधान की प्रस्तावना से समाजवाद शब्द हटाया गया तो वे देश भर के समाजवादी साथियों के साथ आमरण अनशन करने की चेतवानी दी थी साथ ही इस संदर्भ में प्रधानमंत्री कार्यालय से श्वेत पत्र जारी करने की भी मांग की थी।

साम्प्रदायिक भावना से काम कर रही है भाजपा सरकार: माता प्रसाद पाण्डेय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नेता विरोधी दल माता प्रसाद पाण्डेय ने कहा है कि भाजपा सरकार साम्प्रदायिक भावना से काम कर रही है। इस सरकार का लोकतंत्र में विश्वास नहीं है। भाजपा की सरकार पूरे उत्तर भारत में साम्प्रदायिकता फैला रही है।

संभल में पुलिस की गोली से चार युवाओं की मौत हुई। पुलिस दो तरह के असलहे रखती है। फंसने से बचने के लिए निजी और बरामद असलहों से गोली चलाती है। समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय पर मंगलवार को आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी, समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल भी मौजूद थे। माता प्रसाद पाण्डेय ने कहा कि समाजवादी पार्टी संभल और बहराइच मामलों को विधानसभा में उठाएगी, भाजपा सरकार को बेनकाब करेगी। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी प्रतिनिधिमंडल आज मंगलवार को संभल घटना की सच्चाई की जांच और पीड़ित परिवारों से शोक संवेदना प्रकट करने जा रहा था लेकिन पुलिस ने जाने की अनुमति नहीं दी।

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव अगले कदम का स्वयं निर्णय करेंगे। भाजपा सरकार ने अपनी नाकामी छिपाने के लिए समाजवादी पार्टी के संभल के सांसद पर फर्जी मुकदमा दर्ज किया है जबकि उस दिन सांसद संभल में नहीं थे। नेता विरोधी दल ने कहा कि भाजपा संविधान विरोधी काम कर रही है। भाजपा सरकार संविधान नहीं मानती है। देश जानता है कि 1991 में संसद ने प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट यानी कि पूजा स्थल कानून पारित किया है। इसमें स्पेशल प्रोविजन के तहत बनाया गया। इस कानून के मुताबिक 15 अगस्त 1947 से पहले भारत में जिस भी धर्म का जो पूजा स्थल था।

संविधान को खत्म करना चाहती है भाजपा: अजय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

संविधान दिवस के अवसर पर मंगलवार को उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय , प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष, प्रभारी प्रशासन दिनेश सिंह, शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव त्यागी, डॉ. शहजाद आलम सहित उपस्थित वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने सर्वप्रथम भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

कार्यक्रम का संचालन उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता डॉ. अलीमुल्लाह ख़ान तथा डॉ. सुधांशु बाजपेई ने संयुक्त रूप से किया। संविधान दिवस के अवसर पर उपस्थित कांग्रेसजनों को सम्बोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि आज का दिन हमारी प्रतिबद्धता और संविधान की रक्षा के संकल्प का का दिन है, हम सभी संविधान की रक्षा के लिए प्रण लेते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग संविधान बदलना चाहते हैं लेकिन कांग्रेस पार्टी उनका यह ख्वाब कभी भी पूरा नहीं होने देगी।

राय ने कहा कि जनपद झांसी में नवजात बच्चों की मौत अस्पताल में आग लगने से नहीं बल्कि सरकारी भ्रष्टाचार के भेंट चढ़े हैं, जब हमने वहां जाकर उनके भ्रष्टाचार को उजागर किया तो संभल को दंगों की आग में झोंकने की साजिश रची गई। अन्यथा जब एक शांतिपूर्वक सर्वे हो गया था तो दूसरी बार दल-बल, जुलूस और नारों के साथ जाने की क्या आवश्यकता थी? इसमें प्रदेश सरकार तथा प्रशासन सबकी साजिश है। राय ने कहा कि संभल में सर्वे का आदेश पूजा स्थल अधिनियम-1991 और सुप्रीम कोर्ट के स्थगन आदेश का उल्लंघन है। कांग्रेस पार्टी सरकार की प्रदेश को दंगों की आग में झोंकने की साजिश को उजागर करेगी। हम इस देश में संविधान की हत्या नहीं होने देंगे, हम संविधान की रक्षा के लिए कृत संकल्पित हैं।

पूर्व मंत्री श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी ने कहा कि भजपा झूठ फैलाती है कि कांग्रेस और बाबा साहब के बीच झगड़ा था, जबकि सच यह है कि कांग्रेस ने ही अपनी जीती हुई सीट से लड़वाकर बाबा साहब को संविधान सभा का मेंबर बनाया था। और आजादी के बाद बाबा साहब को देश का पहला कानून मंत्री कांग्रेस पार्टी द्वारा ही बनाया गया था।

टूरिज्म स्थलों के आसपास होमस्टे को आय के स्रोतों से जोड़ा जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

विदेशों की तर्ज पर टूरिज्म स्थलों के आसपास होम स्टे को लोकप्रिय बनाने तथा बुनियादी सुविधाएं सृजित करने के लिए विस्तार से जानकारी एकत्र की जायेगी। इसका उद्देश्य होम स्टे के आसपास के वासिंदों की आमदनी बढ़ाना है। साथ ही होम स्टे का लाभ उठाने वाले पर्यटकों को स्थानीय जीवन की विविध गतिविधियों, परम्परा, विरासत तथा वेश भूषा, रहन सहन एवं व्यंजन आदि के बारे में जानकारी उपलब्ध कराना है। ताकि पर्यटक स्थानीय जीवन को नजदीक से समझ सके और एक अविस्मरणीय अनुभूति लेकर वापस लौटे। इसके लिए गत दिनों पर्यटन विभाग एवं बेववेवर नेस्ट्स लखनऊ के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

प्रभारी मंत्री की अध्यक्षता में मनाया गया संविधान दिवस

लोगों को दिलाई शपथ

डॉ भीमराव अंबेडकर जी के चित्र पर किया गया माल्यार्पण

संवाददाता। कानपुर देहात

मंत्री मत्स्य विभाग उत्तर प्रदेश प्रभारी मंत्री डा संजय कुमार निषाद जी की अध्यक्षता में संविधान दिवस का आयोजन मां मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में किया गया। कार्यक्रम में विधायक रसूलाबाद श्रीमती पूनम संखवार, जिलाधिकारी आलोक सिंह, मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एनए अपर जिलाधिकारी प्रशासन अमित कुमार, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व केशव नाथ गुप्ता, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ एके सिंह, जनप्रतिनिधिगणासहित अधिकारी,कर्मचारी, जनसामान्य आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रभारी मंत्री ने जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों के साथ लखनऊ में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के सजीव प्रसारण को देखा एवं सुना। तत्पश्चात प्रभारी मंत्री ने भारत रत्न बाबा साहब डॉ0भीमराव अंबेडकर जी व भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कियाए इसी क्रम में विधायक, जिलाधिकारी व संबंधित अधिकारियों द्वारा भी चित्र पर माल्यार्पण किया गया। माननीय प्रभारी मंत्री जी द्वारा संविधान के प्रस्तावना की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर बोलते हुए माननीय प्रभारी मंत्री जी ने संविधान के इतिहास,महत्व, संविधान निर्माण की प्रक्रिया, विभिन्न चरणों आदि पर प्रकाश डाला। माननीय प्रभारी मंत्री ने कहा कि देश व प्रदेश की सरकार अर्थव्यवस्था व लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने के लिए लगातार विभिन्न प्रयास कर रही हैए जनसामान्य की आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए संविधान संशोधन भी समय.समय पर किया जाता है।

प्रशासनिक अधिकारियों ने बाबा साहब की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

फतेहपुर। संविधान दिवस पर जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह व अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) अविनाश त्रिपाठी, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) धीरेंद्र प्रताप ने कलेक्ट्रट सभागार में प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ मुख्यमंत्री के संविधान दिवस के अवसर पर लोक भवन लखनऊ से प्रसारित कार्यक्रम का सजीव प्रसारण को देखा व सुना। इसके पूर्व अंबेडकर पार्क स्थित डा0 भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा एवं कलेक्ट्रेट सभागार में भारत माता, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व संविधान निर्माता डॉ0 भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण/पुष्पार्जन कर संविधान दिवस के अवसर पर प्रस्तावना का पाठन कर शपथ दिलायी गई। जिलाधिकारी ने संविधान दिवस के अवसर पर सभी जनपदवासियों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी। कहा कि संविधान के उद्देशिका में निहित मूल्यों की स्थापना करना सभी अधिकारियों का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए। कार्यक्रम में अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा भारत के संविधान को अंगीकृत किये जाने की तिथि 26 नवंबर को संविधान दिवस के अवसर पर संविधान के संवैधानिक मूल्यों एवं मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसी प्रकार विकास भवन सभागार में मुख्य विकास अधिकारी पवन कुमार मीना की अध्यक्षता व समस्त कार्यालयों, तहसीलों, ब्लाकों, ग्राम पंचायतों, शिक्षण संस्थानों आदि में संविधान दिवस के अवसर पर प्रस्तावना का पाठ का वाचन कर संविधान की शपथ दिलायी गई व संगोष्ठी का आयोजन किया।

संविधान दिवस पर रिहा हुए दो कैदी

कन्नौज। संविधान दिवस के अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री चंद्रोदय कुमार के निर्देशन और सचिव श्रीमती लवली जायसवाल के विशेष प्रयासों से चीफलीगल एड डिफेंस काउंसिल श्वेतांक अरुण तिवारी ने निःशुल्क पैरवी कर जिला कारागार में निरुद्ध दो बंदियों को रिहा कराया गया। पहले मामले में बंदी शिव नारायण जो विगत 9 माह से जेल में बंद था जुर्माना अदा न कर पाने के कारण रिहाई से वंचित था। प्राधिकरण की सचिव श्रीमती लवली जायसवाल ने स्वयंसेवी संस्था कुछ कोशिशें के सहयोग से उसका अर्थदंड जमा करवाया जिससे वह रिहा हो सका। दूसरे मामले में बंदी अजू गिरहाय जिसकी जमानत एक माह पहले हो चुकी थी को कोई जमानत लेने नहीं आया था। प्राधिकरण सचिव ने सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों का हवाला देकर न्यायालय से बंदी की रिहाई सुनिश्चित कराई।जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के इन प्रयासों ने बंदियों के जीवन में नई उम्मीद जगाई है। इस सराहनीय कदम से जेल में निरुद्ध अन्य बंदियों को भी प्रेरणा मिली है।

संविधान दिवस पर जिला कारागार में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन

कन्नौज। संविधान दिवस के अवसर पर जिला कारागार में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान जेल में निरुद्ध कैदियों के लिए एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।जिसमें कुल 47 कैदियों ने प्रतिभाग किया।प्रतियोगिता में बंदी प्रताप ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सभी 50 प्रश्नों के सही उत्तर देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय और तृतीय स्थान पर अन्य प्रतिभागी रहे।इस अवसर पर अपर जिला जज एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती लवली जायसवाल ने विजेता बंदियों को पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने बंदियों को उनके संवैधानिक अधिकारों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।जेल अधीक्षक मोण् अकरम ख़ान ने कैदियों को संविधान की प्रस्तावना और इसकी मूल भावना समझाई। मुख्य विधिक सहायता रक्षा अधिवक्ता श्वेतांक अरुण तिवारी ने बंदियों को बताया कि संविधान प्रत्येक व्यक्ति को निःशुल्क विधिक सहायता का अधिकार प्रदान करता है।इस कार्यक्रम में डिप्टी डिफेंस काउंसिल दीपक श्रीवास्तव और असिस्टेंट डिफेंस काउंसिल मोण् सैफ भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य बंदियों को संविधान के प्रति जागरूक करना और उनके अधिकारों की जानकारी देना था।

जिलाधिकारी के आदेश से दो ग्राम पंचायत अधिकारी व आंकिक निलंबित

हमीरपुर। जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने कार्य में लापरवाही बरतने पर दो ग्राम पंचायत अधिकारी व एक कोआपरेटिव के आंकिक को निलंबित कर दिया है। जानकारी के मुताबिक विकासखंड कुरारा के ग्राम पंचायत अधिकारी महेंद्र प्रताप एवं विकासखंड सरीला के ग्राम पंचायत अधिकारी रामू अहिरवार की कार्यों में शिथिलता बरतने की लगातार शिकायतें आ रही थी। योजनाओं में जनपद में निचले पायदान पर जा रहा था। जिलाधिकारी के आदेश पर डीपीआरओ जितेंद्र मिश्रा ने दोनो ग्राम पंचायत अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। इसी प्रकार बहुउद्देशीय प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समिति इंगोहटा में कार्यरत आंकिक सुरेंद्र तिवारी द्वारा समिति में उर्वरक प्राप्त होने पर भी किसानों को उर्वरक का वितरण न करने व समिति का ताला बंद करके गायब रहने के आरोप में एआर कोआपरेटिव सुरेंद्र दिवेदी ने आंकिक को निलंबित कर दिया है।

जेल में बाड़े ही धूमधाम से मनाया गया संविधान दिवस

फर्रुखाबाद। जिला कारागार फतेहगढ़ में उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के आदेश पर जिला जज विनय कुमार के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में संविधान दिवस का आयोजन जेल में सभी स्टाफ और बंदियों के मध्य बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संजय कुमार एडीजे ध्रुव सचिव डीएलएसए ने दीप प्रज्वलित कर एवं संविधान शिल्पी भारत रत्न डॉ भीमराव अंबेडकर जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जेल अधीक्षक भीमसैन मुकुंद ने बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुरेंद्र राणाए सहायक चीफ डिफेंस काउंसिल द्वारा बखूबी किया गया। शिवनरेश सिंह चीफडिफेंस काउंसिल ए रघुवीर दास अधिवक्ताए वैभव कुशवाह उप कारापाल और महिला जेल वार्डर नगमा ने संविधान दिवस के संदर्भ में अपने विचार प्रकट किए।वैभव कुशवाह ने संविधान के निर्माण के संदर्भ में बाबा साहेब के योगदान बड़े ही ओजस्व पूर्ण तरीके से परिभाषित किया।नगमा द्वारा संविधान में महिला अधिकार पर अपनी बात रखी। अन्य वक्ताओं द्वारा भी संविधान उल्लेखित मूल अधिकारोंए शिक्षा के अधिकार ए स्वच्छ हवा पानी भोजन के अधिकार पर प्रकाश डाला। सुरेंद्र राणा जी द्वारा डीएलएसए द्वारा बंदियों के हित में किए जा रहे कार्यों और सुविधाओं के बारे बताया। जेल अधीक्षक भीमसैन मुकुंद ने संविधान में उल्लेखित कानून में समानता के अवसर पर बताते हुए बताया गया कि वर्तमान सरकार द्वारा समयपूर्व रिहाई पर बहुत कार्यवाही की का रही इसलिए सभी कैदी बंदी जेल के नियमों का पालन करते हुए इसका लाभ ले सकते है। बंदियों से अनुरोध किया कि जेल में ऐसा कोई गलत काम ना करे जो उनकी समयपूर्व रिहाई में बाधा उत्पन्न करे।

मार्ग दुर्घटनाओं में महिला सहित 3 घायल

फतेहपुर। जनपद के अलग–अलग थाना क्षेत्रों के अन्तर्गत हुए सड़क हादसों के दौरान महिला समेत तीन लोग घायल हो गए। जिन्हे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार गाजीपुर थाना क्षेत्र के पैगम्बरपुर गांव निवासी स्व0 रईस उद्दीन की पत्नी बेबी 55 वर्ष अपने 22 वर्षीय पुत्र के साथ हुसैनगंज थाना क्षेत्र के भिटौरा किसी काम से जा रहे थे। जब ये लोग डोलेपुर गांव के पास पहुंचे तभी अनियंत्रित होकर बाइक गिर जाने से महिला घायल हो गई इसी प्रकार कोतवाली क्षेत्र के उधरापुर गांव निवासी सुरेश का 25 वर्षीय पुत्र विमलेश बाइक से शहर आ रहा था। जैसे ही वह लखनऊ बाईपास पहुंचा तभी विपरीत दिशा से आ रही सरकारी एम्बुलेंस ने टक्कर मार दिया जिससे वह घायल हो गया, जबकी शहर क्षेत्र के तांबेश्वर मोहल्ला निवासी स्व0 जगन्नाथ का 55 वर्षीय पुत्र संतोष सोनी मलवां थाना स्थित कुदंन फैक्ट्री से काम कर बाहर किसी काम से निकला था।

क्षतिग्रस्त हुये नाले का निरीक्षण कर चैयरमैन ने चैम्बर बनाने के दिये निर्देश

रूरा, कानपुर देहात। बीते दिनों पाइप लाइन में आये मलबे को दुरूस्त करने के लिये मुख्य तिराहे पर किये गये युद्ध स्तर पर मरम्मतीकरण के काम के दौरान क्षतिग्रस्त हुये नाले की दीवार की दीवार का चैयरमैन रामजी गुप्ता ने निरीक्षण किया। चैयरमैन ने स्थानीय व्यापारियों की मॉग पर वहॉ पर चैम्बर बनाये जाने के निर्देश दिये। आपको बतातें चलें कि कस्बे के शिवाजीनगर, पालीवालनगर सहित अन्य हिस्सों में जलापूर्ति पाइप लाइन में फॅसे मलबे के चलते जलापूर्ति बाधित हो रही थी, निर्बाध जलापूर्ति के लिये मुख्य तिराहे पर खुदाई कर जलापूर्ति लाइन युद्धस्तर पर सारी रात की गयी थी, चैयरमैन रामजी गुप्ता के निर्देश पर अगले दिन सुबह तेज प्रेशर के साथ जलापूर्ति शुरू कर दी गयी थी, जिससे प्रभावित लोगों को निजात मिली थी। जलापूर्ति लाइन की खुदाई के दौरान मुख्य तिराहे पर नाले की दीवार क्षतिग्रस्त हो गयी थी, स्थानीय व्यापारियों की शिकायत पर चैयरमैन रामजी गुप्ता ने मुख्य तिराहे पर प्रभावित क्षेत्र का बारीकी से निरीक्षण कर कर्मचारियों को वहॉ चैम्बर बनाने के निर्देश दिये। निर्देश मिलते ही सफाई नायक याद कुमार यादव के नेतृत्व में चैम्बर बनाने का काम शुरू कर दिया गया।

माफिया अनुपम दुबे के करीबी विनय दुबे की 69 लाख 50 हजार रुपए की संपत्ति हुई कुर्क

फर्रुखाबाद। मोहम्मदाबाद के क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम कनऊ याकूबपुर स्थित आवासीय प्लाट जो 9,2,6,9, 21 वर्ग मीटर है जिसकी बाजार की कीमत कुल 44 लाख 80 हजार रुपए और उसी से संलग्न संपत्ति 9,2,3,4, 30 वर्ग मीटर की बाजार की कीमत 24 लाख 69 हजार रुपए है । माफिया अनुपम दुबे और अनुराग दुबे के सहयोगी विनय कुमार उर्फ सोनू की कनऊ याकुबपुर स्थित एक आवासीय प्लाट और उसी से संलग्न संपत्ति को तहसीलदार श्रद्धा पांडे थाना मऊ दरवाजा के सहयोग से कुर्क किया गया कुल मिलाकर 69 लाख और 50 हजार की संपत्ति कुर्क की गई है। तहसीलदार श्रद्धा पांडे ने बताया पुलिस और राजस्व विभाग द्वारा यह संपत्ति कुर्क की गई तहसीलदार के प्रबंधन में है अगर इस कुर्क की गई संपत्ति से यदि कोई छेड़छाड़ करता है तो उसे पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी ।

क्विक न्यूज

कम बाल लिंगानुपात वाले विकासखण्डों में नुक्कड़ नाटक से फैलाई जागरूता

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशानुसार जनपद के कम बाल लिंगानुपात वाले विकासखण्डों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करायें जाने हेतु जिलाधिकारी आलोक सिंह द्वारा नुक्कड़ नाटक टीम को रवाना किया गया। इस मौके पर जिलाधिकारी द्वारा बताया गया कि जनपद के कम बाल लिगानुपात वाले विकासखण्डों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से गिरते लैंगिक अनुपात में सुधार लानाए बालिकाओं की शिक्षा एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करनाए कल्याणकारी सेवाएं उपलब्ध कराने में सुधारए आर्थिक क्षेत्रों में बेटियों की भागीदारी को बढ़ावा देने हेतु प्रचार.प्रसार कराया जाना है साथ ही यह भी बताया कि घटता लिंगानुपात महिलाओं के बुनियादी अधिकारों एवं संविधान द्वारा प्रदत्त जीवन जीने के अधिकार का उल्लंघन है।

इको ने बाइक सवार को मारी टक्कर , मौत

फर्रुखाबाद। थाना मेरापुर क्षेत्र के ग्राम नगला दसी निवासी दलवीर सिंह के पुत्र विनोद 22 वर्ष व सुमित 16 वर्ष दो दिन पूर्व अपनी ननिहाल नगूगों खास थाना छिबरामऊ गए थे । वहां से वापस घर आते समय गुररुशादी पुर मोड पर ईको गाड़ी ने टक्कर मार दी। ग्रामीणों ने ईको गाड़ी को पकड़ लिया तथा चालक मौके से फरार हो गया। डायल 108 से के एम टी शिवम् शर्मा व चालक रोहित सिंह ने बताया कि ऊपर से आई डी नहीं मिली थी । कॉलर के नंबर पर ही घटना स्तर पर पहुंचे ।और घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मोहम्मदाबाद पहुंचा। चिकित्सा प्रभारी गौरव यादव ने पुष्टि करते हुए बताया कि विनोद की सर में चोट होने की वजह से मौके पर ही मौत हो गई थी । तथा इमरजेंसी ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर सनी मिश्रा ने विनोद के छोटे भाई सुमित को प्राथमिक उपचार देकर राम मनोहर लोहिया अस्पताल रेफर कर दिया।

मर्क्यूरी जुटाई गई धनराशि का करेगा कृषि में उपयोग

मुंबई। कृषि उत्पादों के कारोबार में लगी अहमदाबाद स्थित मर्क्यूरी ट्रेड लिंक्स का सात नवंबर को खुले 48.95 करोड रूपए का राइट्स इश्यू सब्सक्रिप्शन के लिए 5 दिसम्बर तक खुला रहेगा। राइट्स इश्यू के माध्यम से जुटाई गई धनराशि का उपयोग कंपनी की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को निधि देने के लिए, इश्यू के खर्च और सामान्य क़ॉर्पोरेट में इस्तेमाल के लिए प्रयोग किया जाएगा। कंपनी का राइट्स इश्यू 6 नवंबर को 60.43 रूपए प्रति शेयर के बंध कीमत की तुलना में 44.95 रूपए प्रति शेयर की कीमत पर पेश किया गया था। यह दूसरा राइट्स इश्यू है। इस साल मार्च में कंपनी 9.90 करोड रूपए जुटाने के लिए 40.00 रूपए प्रति शेयर की कीमत पर पहला राइट्स इश्यू लाई थी। कंपनी 10 रूपए अंकित मूल्य के 1,08,90,000 पूर्ण रुप से भुगतान वाले इक्विटी शेयर नकद में 44.95 रूपए प्रति इक्विटी शेयर की कीमत पर जारी करेगी, जिसका कुल मूल्य 48.95 करोड रूपए होगा। प्रस्तावित इश्यू के लिए राइट्स एंटाइटेलमेंट अनुपात 4:1 पर तय किया गया है (यानि की रिकॉर्ड तिथि 24 अक्टूबर, 2024 को इक्विटी शेयरधारकों द्वारा रखे गए प्रत्येक 1 पूर्ण भुगतान वाले इक्विटी शेयर के लिए रु. 10 के अंकित मूल्य के 4 राइट्स इक्विटी शेयर)। 1985 में स्थापित, मर्क्यूरी ट्रेड लिंक्स लिमिटेड उर्वरक, खाद, पौधे और पशु खाद्य पदार्थों सहित कृषि उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का व्यापार करने में निपुण है। कंपनी कीटनाशकों, शाकनाशी और कवकनाशी जैसे कीटनाशकों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के अनाज और बीजों का भी व्यापार करती हैं। इसके व्यापक प्रोडक्ट पोर्टफोलियो में चावल, मक्का, मिलो, कपास के बीज, सोयाबीन, मूंगफली, अरंडी के बीज, अलसी, सूरजमुखी, नारियल, रेपसीड, बादाम, तिल के बीज, सरसों, समुद्री बीज और अंगूर के बीज शामिल हैं।

शणगार कार्यशील पूंजी से पूरी करेगा आवश्यकताएं

नोएडा। डेकोर सर्विसीस की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करने वाली कंपनी शणगार डेकोर लिमिटेड बीएसई-540259 का 49.35 करोड रूपये का राइट्स इश्यू 8 नवंबर को सदस्यता के लिए खोला गया था। राइट इश्यू के माध्यम से जुटाई गई धनराशि का उपयोग कंपनी की कार्यशील पूंजी आवश्यकताएं, इश्यू के खर्च और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश को निधि देने के लिए किया जाएगा। कंपनी का राइट इश्यू 21 नवंबर को 10.08 रूपये प्रति शेयर के बंध भाव की तुलना में 5.76 रूपये प्रति शेयर की कीमत पर पेश किया गया है। राइट्स इश्यू 6 दिसंबर को बंद होगा। राइट्स एंटाइटेलमेंट के ऑनमार्केट अधिकारों के त्याग की अंतिम तिथि 29 नवंबर है। कंपनी के राइट इश्यू में भाग लेने के लिए निवेशक बाजार से राइट्स एंटाइटेलमेंट भी खरीद सकते हैं। कंपनी पांच रूपये अंकित मूल्य के 8,56,82,800 पूर्ण चुकता इक्विटी शेयर नकद में 5.76 रूपये प्रति इक्विटी शेयर की कीमत पर जारी करेगी, जिसका मूल्य कुल मिलाकर 49.35 करोड रूपये होगा। प्रस्तावित इश्यू के लिए राइट्स एंटाइटेलमेंट अनुपात 7:1 पर तय किया गया है रिकॉर्ड तिथि 28 अक्टूबर 2024 को इक्विटी शेयरधारकों द्वारा रखे गए प्रत्येक 1 पूर्ण भुगतान वाले इक्विटी शेयर के लिए 5 रूपये के अंकित मूल्य के 7 राइट्स इक्विटी शेयर।

युवा कांग्रेसियों ने मनाया संविधान दिवस

फतेहपुर। युवा कांग्रेस के पदाधिकारियों ने मंगलवार को संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके संविधान दिवस मनाया। वक्ताओं ने संविधान पर चर्चा करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार संविधान को बदलने का प्रयास कर रही है। ऐसी निकम्मी सरकार को सबक सिखाने का समय आ गया है। वक्ताओं ने कहा कि यह संविधान देश में सभी को बराबरी का दर्जा देता है। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष युवा कांग्रेस नवनीत तिवारी, शिवा, राकेश जाटव, सलमान, शाबान, सुमित, मिथिलेश व अन्य लोग मौजूद रहे।

कम्युनिस्टों ने प्रदर्शन कर राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापन

फतेहपुर। किसानों सहित आमजन की समस्याओं को लेकर मंगलवार को अखिल भारतीय किसान सभा, अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन व सेंटर आफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स के कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजकर सभी मांगों को जल्द से जल्द पूरा किए जाने की आवाज उठाई। ट्रेड यूनियनों के बैनर तले कम्युनिष्ट हाथों में झण्डा लेकर कलेक्ट्रेट पहुंचे और जमकर नारेबाजी की। तत्पश्चात राष्ट्रपति को संबोधित एक ज्ञापन एसडीएम को सौंपकर मांग किया कि सभी फसलों की कुल लागत का डेढ़ गुना न्यूनतम समर्थन मूल्य के मुताबिक दिया जाए। धान खरीद केन्द्रों को बिचौलियों व भ्रष्टाचार से मुक्त किया जाए। खरीद प्रक्रिया को सरल बनाया जाए। खाद, बीज, कीटनाशक, डीजल आदि के दाम घटाए जाएं। कृषि हेतु सब्सिडी बढ़ाई जाए। डीएपी खाद की किल्लत दूर करके कालाबाजारी पर रोक लगाई जाए। विकल्प के रूप में नैनो डीएपी व अन्य खाद को बेंचना बंद करें।

एसडीएम ने की जांच पडताल

राठ(हमीरपुर) कस्बे के गल्ला मंडी में स्थित पीसीएफकेंद्र में सोमवार किसानों द्वारा किए गए पथराव की पुष्टि के लिए मंगलवार को उपजिलाधिकारी ने केंद्र में पहुंच कर प्रभारी व किसानों से जानकारी ली जिस पर किसानों ने धूल फेंकने की बात बताई है। सोमवार को गल्ला मंडी में स्थित पीसीएफकेंद्र में किसानों द्वारा किए गए पथराव करने की खबर मिलने पर जिलाधिकारी हमीरपुर ने उपजिलाधिकारी अभिमन्यु कुमार को मौके जांच करने के आदेश दिए। जिस पर एसडीएम ने मौके पर पहुंच किसानों से बयान लिए। जहां किसानों ने भी धूल फेंकने की बात बताई है। एसडीएम ने बताया कि पत्थराव की घटना गलत है।

फेरी करने वाले को गाली गलौच कर मारपीट की

राठ(हमीरपुर)। कोतवाली के बदनपुरा गांव व हाल पता दाता गढ़ी सिकंदरपुरा मोहल्ला निवासी लखनलाल पुत्र कल्लू श्रीवास ने बताया कि वह बाइक से कपड़े की फेरी का कार्य करता है। मंगलवार की दोपहर करीब दो बजे रौरौ गांव में कपड़े की फेरी लगा रहा था। तभी कपड़ों के रेट को लेकर गांव का एक व्यक्ति बहस कर गाली गलौज करने लगा। विरोध करने पर उसे मारा.पीटा। बताया कि युवक ने जाति सूचक शब्दों का प्रयोग कर जान से मारने की धमकी दी है। पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की गुहार लगाई है।

लापरवाही के चलते ट्रक में टक्कर मार दी

राठ(हमीरपुर)। जनपद बिजनौर के राजोपुर सादात गांव निवासी तुलाराम सिंह पुत्र सुम्मेर सिंह ने बताया कि 22 नवंबर की रात करीब दस बजे उसका साला महेश पुत्र करन सिंह निवासी चांदा नगली मोहनपुर थाना हल्दौर जनपद बिजनौर अपना ट्राला लेकर असम से दिल्ली की ओर बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे से होकर जा रहा था। तभी कछवां कलां के पास एक्सप्रेसवे पर सामने से आ रहे चालक ने लापरवाही से चलाते हुए ट्रक में टक्कर मार दी थी। टक्कर से उसके साले महेश की मौके पर ही मौत हो गई थी।

महिला ने एक साथ तीन बच्चों को दिया जन्म

सर्जन डॉक्टर अमरनाथ ने किया ऑपरेशन

निजी अस्पताल में हुए ऑपरेशन में दो बेटे भाई एक बेटी हुई पैदाए प्रसूता और बच्चे भी स्वस्थ

.ऑपरेशन में दो बेटे भाई एक बेटी हुई पैदा

फर्रुखाबाद । थाना नवाबगंज क्षेत्र निवासी गर्भवती महिला को प्रसव पीड़ा होने पर शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया ।सर्जन डॉ अमरनाथ ने प्रसव कराया ।महिला ने एक साथ तीन बच्चों को जन्म दिया ।दो बेटे और एक बेटी का जन्म हुआ ।तीनों बच्चे और महिला स्वस्थ बताई गई ।।ना नवाबगंज क्षेत्र निवासी रितेश कुमार की पत्नी वंदना को प्रसव पीड़ा होने पर शहर के मसेनी स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया ।जनरल सर्जन डॉ अमरनाथ ने गर्भवती महिला का आपरेशन कर प्रसव कराया ।बड़े ऑपरेशन के बाद महिला ने एक नहीं दो नहीं बल्कि तीन स्वस्थ बच्चों को जन्म दिया ।जिसमें से एक बेटी और दो बेटे है ।रितेश ने बताया कि एक साथ तीन बच्चे होने से परिवार में खुशी का माहौल है ।वही रिश्तेदारों का भी तांता लगा हुआ है ।र्जन डॉ अमरनाथ ने बताया कि जब गर्भवती का अल्ट्रासाउंड कराया तब तीन बच्चों के गर्भ में होने की जानकारी मिली ।बेहद संवेदनशीलता के साथ आपरेशन महिला का प्रसव कराया गया ।जच्चा और बच्चा दोनों की हालत ठीक है ।इस प्रकार के केस कई वर्षों में ही यदा कदा आते है।

संविधान बचाओ यात्रा में भीम आर्मी ने निकाली शोभा यात्रा

मौदहा, हमीरपुर।। मौदहा कस्बा सहित आसपास के गांवों में मंगलवार को संविधान दिवस मनाते हुए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है वहीं कस्बा में कुछ संगठनों ने संविधान बचाओ यात्रा निकाली है। इस मौके पर अलग अलग संगठनों और राजनीतिक दलों ने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर संविधान दिवस मनाया। भीम आर्मी ने कमेला मैदान से एक शोभायात्रा निकाली जो कि रहमानिया मलीकुआ चौराहा होकर स्टेशन के पास अम्बेडकर पार्क में पहुंची जहां डॉ भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा में माल्यार्पण किया गया। संविधान दिवस पर यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष विवेक चंद के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बड़ी संख्या में पार्टी के पदाधिकारी मौजूद रहे हैं। इसके अलावा भाजपा व सपा के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने संविधान दिवस मनाया है। निजी व सरकारी कार्यालयों के साथ ही ब्लाक कार्यालय व ग्रामीण क्षेत्रों के पंचायत भवनों में भी डा भीमराव अम्बेडकर को श्रद्धासुमन अर्पित कर संविधान दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

जगन्नाथ की हत्या का नही हो सका खुलासा,पुलिस जुटी

मौदहा हमीरपुर। क्षेत्र के चकदाहा गांव में जगन्नाथ की हत्या के 48 घंटे बाद भी पुलिस आरोपियों तक पहुंचने में नाकाम साबित हुई और हत्या का खुलासा नहीं हो सका है। हालाकि पुलिस नामित अज्ञात कई लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ में जुटी है ।वहीं इस मामले के उजागर करने में काफी निकट पहुंच गई है। पोस्टमार्टम के बाद आए जगन्नाथ शव के अंतिम संस्कार को लेकर काफी देर गहमा गहमी चलती रही ।जिस स्थान पर अपनी निजी भूमि बता परिजन उस का अंतिम संस्कार करना चाहते थे वह भूमि गांव सभा की बताते हुए कुछ लोगों ने आपत्ति कर दी थी। इस संबंध में कोतवाल उमेश कुमार सिंह ने बताया कि गड़रियाखेर निवासी जगन्नाथ की हत्या के मामले में पुलिस खुलासे के निकट तक पहुंच गई है ।लेकिनअभी सघन जांच जारी है शीघ्र खुलासा होगा। वहीं मृतक के रिश्तेदार बद्री कुशवाहा सीताराम कुशवाहा एरामबाबू राजेश कुशवाहा आदि लोगों ने बताया कि जगन्नाथ की हत्या के आरोपियों की तहरीर पुलिस को पहले ही सौंप दी गई है लेकिन अभी तक खुलासा नहीं हो सका।

तेरी मिट्टी में मिल जावा पर झूम उठा लखीमपुर महोत्सव

डीएम दुर्गाशक्ति नागपाल की पहल पर पहली बार आयोजित किया गया लखीमपुर महोत्सव.24’

. पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने किया लखीमपुर महोत्सव.24 का उद्घाटन

’. तराई की मिट्टी का उत्सवए लखीमपुर महोत्सव में दिखा विरासत और संस्कृति का संगम’

बॉलीबुड और पंजाबी सिंगर ने अपनी प्रस्तुति से जीता दर्शकों का दिल

लखीमपुर खीरी। गुलाबी ठंड और हल्के कोहरे की चादर ओढ़े खीरी में जब तेरी मिट्टी में मिल जावाण्ण्ए अगर तुझे हो गया कुछए सारी दुनिया जला देंगेण्ण् समां में गूंजा तो लोग खुद को थरकने से रोक नहीं पाए। गुलाबी ठंड के बीच पंजाबी सिंगर बी प्राक के रूह मेरी तड़पेगी जानी दिल भी रोयेगाण्ण् ने दर्शकों को गर्मजोशी से भर दिया। मौका था लखीमपुर खीरी की धरती पर पहले ष्तराई की मिट्टी का उत्सवए लखीमपुर महोत्सव.24ष् का। महोत्सव प्रांगण बी प्राक के गीतों से गूंज उठा। दर्शकों की डिमांड पर बी प्राक ने दिल तोड़ के हंसती हो मेराए बफाएं मेरी याद करोगी् गाया तो दर्शक बेकाबू हो उठे। इसके बाद पंजाबी सिंगर ने पंजाबी गीतों से समां बांध दिया। 'महोत्सव में विरासतए संस्कृति और पौराणिक धरोहर का दिखा अद्भुत नजारा' जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरुप जिले की विरासतए संस्कृति और पौराणिक धरोहर के महत्व को जन.जन तक पहुंचाने के लिए लखीमपुर खीरी में पहली बार लखीमपुर महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव का उद्घाटन पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने विधायक सदर योगेश वर्माए एमएलसी अनूप गुप्ताए जिलाध्यक्ष सुनील सिंहए डीएम दुर्गा शक्ति नागपालए एसपी गणेश प्रसाद साहाए सीडीओ अभिषेक कुमार के साथ दीप जलाकर किया। इसके बाद लखीमपुर उत्सव के मंच पर अपनी प्रस्तुतियां देने वाले कलाकारों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित कर उनका मनोबल बढ़ाया। महोत्सव में रात को पंजाबी गायक बी प्राक ने शानदार प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बीण् प्राक ने अपने मशहूर गीतों से श्रोताओं को सम्मोहित कर लिया और महोत्सव में दर्शकों में अपार उत्साह देखने को मिला।

आखिरकार पिंजड़े में कैद हुआ दहशत का पर्याय बन चुका तेंदुआ

रतीराम लोधी

निघासन . खीरी । उत्तर खीरी वन प्रभाग की दक्षिण निघासन रेंज में काफी दिनों से दहशत का पर्याय बन चुका तेंदुआ आखिरकार वन विभाग द्वारा पिंजरे में कैद कर लिया गया । तेंदुए को पकड़ने के लिए स्थानीय वनविभाग द्वारा बरुही फार्म स्थित एक गन्ने के खेत में पिंजरा लगाया गया ए पिंजरे में बंद शिकार को निवाला बनाने के चक्कर में तेंदुआ पिंजडे में कैद हो गया । तेंदुए की धर पकड़ के बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली है । जानकारी के अनुसार जंगल से भटककर आया तेंदुआ दक्षिण निघासन रेंज लुधौरी के आसपास के गन्ने के खेतों में कई दिनों से लगातार विचरण कर रहा था और छोटे जानवरों जैसे कुत्ते एवं बछड़ों को निवाला बना रहा था ए कयास लगाया जा रहा है कि लगभग बीस दिन पहले इसी तेंदुए ने ग्राम बंगलहा राज निवासी चारा लेने गए एक किशोर पर हमला किया था लेकिन ग्रामीणों के हल्ला मचाने पर उसकी जान बच गई । तेंदुए की यत्र तत्र मौजूदगी के कारण रात दिन फसलों की रखवाली करने वाले ग्रामीणों में दहशत व्याप्त हो गई लेकिन उन्होंने खेतों पर जाना बंद नहीं किया क्योंकि परिवार की आजीविका के लिए ग्रामीणों ने जान की परवाह नहीं की । मामला ज्यादा तूल पकड़ जाने पर वनविभाग ने बरुही फार्म में पिंजड़ा लगाया और रेंजर दक्षिण निघासन रेंज लुधौरी गजेन्द्र सिंह यादव और उनकी टीम की मेहनत रंग लाई और तेंदुआ पिंजडे में कैद हो गया । वन विभाग की इस कार्रवाई से ग्रामीणों ने राहत की सांस ली है रेंजर गजेन्द्र सिंह ने बताया कि मेहमान रात भर लुधौरी रेंज में रहेगा फिर उच्चाधिकारियों के निर्देशानुसार तेंदुए को निर्धारित स्थान पर शिफ्ट कर दिया जाएगा ।

संभल में हालात पहले से बेहतर

● हालात में सुधार को देखते हुए खुले स्कूल

भाषा। संभल

उत्तर प्रदेश के संभल जिले में विवादित जामा मस्जिद परिसर में रविवार को सर्वे के दौरान भड़की हिंसा के तीसरे दिन मंगलवार को हालात में सुधार देखने को मिला और स्कूल खोल दिए गए। इस हादसे से उबरने की कोशिश में जुटे हिंदू और मुस्लिम समाज के लोग घटना को भूलकर अब संभल को विकास की राह पर ले जाने और सामाजिक सदभाव व आपसी एकता पर जोर दे रहे हैं।

संभल में रविवार को जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हालत खराब हो गए और पत्थरबाजी व आगजनी की घटना में चार लोगों की मौत हो गई। इस घटना में करीब 20 लोग घायल भी हुए थे। पुलिस ने इस संबंध में सोमवार को 25 लोगों को गिरफ्तार किया था और इस दौरान बाजार बंद रहे थे हालांकि कई इलाकों में दुकानें खुली देखी गईं। मंगलवार सुबह स्थिति सामान्य होती नजर आई। संभल जिले में इंटरनेट सेवा मंगलवार को भी बंद रही, जिस कारण लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। मुरादाबाद मंडल के आयुक्त आंजनेय कुमार सिंह ने मंगलवार को बताया, संभल में स्थिति सामान्य और दुकानें खुली हैं। जिस इलाके में हिंसा भड़की थी वहां कुछ दुकानें बंद हैं लेकिन बाकी जगहों पर दुकानें खुली रहीं और कहीं कोई तनाव नहीं दिखा। सिंह ने कहा, सुरक्षा बल तैनात हैं और स्थिति नियंत्रण में है। रोजर्मा की दिनचर्या सामान्य स्थिति की ओर बढ़ रही है। हिंसा को लेकर कानूनी कार्वाई के संदर्भ में आयुक्त ने बताया कि पुलिस सबूत जुटाने में लगी हुई है, कई प्राथमिकियां दर्ज की गई हैं और भविष्य में और भी दर्ज की जा सकती हैं। उन्होंने अफवाह फैलाने और आगजनी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी भी दी। आयुक्त ने बताया, स्थानीय सांसद और स्थानीय विधायक के बेटे पर भी भीड़ को भड़काने का मुकदमा दर्ज किया गया है। मामले की जांच जारी है। सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है। पुलिस उप महानिरीक्षक (डीआईजी) मुनिराज जी ने बताया कि पुलिस तैनात और मंगलवार को संभल में कहीं से भी कोई अप्रिय खबर नहीं आई। उन्होंने बताया, सामान्य स्थिति बहाल हो रही है।, दुकानें खुल रही हैं, कोई समस्या नहीं है। मुनिराज ने बताया कि गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या 25 है जबकि हिंसा के संदिग्धों की पहचान के लिए जांच जारी है। शांति समिति के सदस्य और अखिल भारतीय व्यापार मंडल के नेता हाजी एहतेशाम ने कहा, यह सब बाहर के लोगों द्वारा किया गया है और जो भी हुआ बहुत गलत हुआ है। एहतेशाम ने कहा हम सब इन सब बातों को भूलकर एक बार फिर शांति की राह पर लौटेंगे। वहीं सरस्वती शिशु मंदिर के प्रधानाचार्य शिव शंकर शर्मा ने कहा, इस तरह की घटना से माहौल खराब होता है। संभल में सभी लोग आपस में मेल जोल करके फिर सांप्रदायिक सौहार्द बनाएंगे। व्यापारी दीपक कुमार ने कहा, यहां तो शुरू से अमन चैन रहा है, पता नहीं उस दिन ऐसा क्या हुआ जो इतना बड़ा बवाल हुआ। इन सबसे से आर्थिक नुकसान भी होता है। कुमार ने कहा, अब स्थिति सामान्य है, मैने दुकान भी खोली है और जल्द ही फिर सम्भल पहले जैसा हो जाएगा। मेरे भी कई दोस्त मुस्लिम समुदाय से है और भाईचार को आगे बढाएंगे। नारी उत्थान समिति की अध्यक्ष सीमा आर्य ने कहा कि मुस्लिम समाज को भी सोचना चाहिए कि यह अदालत के आदेश से सर्वे हो रहा है फिर इतना आक्रोशित नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि मेरे भी मुस्लिम समाज में संबंध है, मित्रता है लेकिन आत्मसम्मान पहले होता है अब शांति है। एक अधिकारी ने बताया कि पुलिस ड्रोन, सीसीटीवी और मोबाइल के वीडियो खंगाल रही है तथा उपद्रव करने वालों को चिह्नित कर रही है ताकि उन्हें पकड़ा जा सके। उन्होंने बताया कि अब तक इस मामले में सात प्राथमिकी दर्ज हो चुकी है, जिसमें संभल के सांसद जिया उर रहमान वर्क और संभल विधायक के पुत्र सुहैल इकबाल सहित 2750 अज्ञात लोगों को आरोपी बनाया गया है। पुलिस अधीक्षक (एसपी) कृष्ण कुमार विश्नोई ने सोमवार रात पत्रकारों को बताया कि जिन लोगों ने नुकसान किया है उनसे एक-एक पाई वसूली जाएगी। उन्होंने बताया कि संभल में पुलिस ने सिर्फ प्लास्टिक बुलेट का इस्तेमाल किया और पुलिस की गोली से किसी की मौत नहीं हुई। अधिकारी ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी ए बात साबित हुई है। उन्होंने बताया कि संभल में पुलिस पूरी तरह मुस्तैद है, जगह जगह चौराहों पर पुलिस बल तैनात है और कई जगह त्वरित प्रतिक्रिया बल भी तैनात है। संभल के जिलाधिकारी ने जिले में बाहरी व्यक्तियों एवं जनप्रतिनिधियों के प्रवेश पर 30 नवंबर तक रोक लगाई हुई है ताकि संभल के हालत जल्द सामान्य हो पाए। संभल की स्थिति सामान्य नजर आ रही है जबकि घटना स्थल के नजदीक सन्नाटा सा पसरा हुआ है। नगर विधायक के पुत्र सोहेल इकबाल ने पीटीआई-वीडियो से कहा कि वह हिंसा वाली जगह पर मौजूद नहीं था और उसने मामले में खुद को निर्दोष बताया। उन्होंने अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों को खारिज कर दिया। इकबाल को मामले में आरोपी बनाया गया है। इकबाल ने कहा, मैंने कभी भी ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे संभल में शांति भंग हो। हम प्यार फैलाने और लोगों की सेवा करने में विश्वास करते हैं। जो हुआ वह दुर्भाग्यपूर्ण है, ऐसा नहीं होना चाहिए था। मेरा नाम इसमें शामिल किया गया है जबकि मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है और न ही मैंने कोई नफरत फैलाने वाला भाषण दिया है।

मुंबई में 26-11 आतंकी हमले की बरसी पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई

भाषा। मुंबई

महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने 2008 में मुंबई हमले के दौरान आतंकवादियों से लड़ते हुए जान की कुर्बानी देने वाले शहीदों को मंगलवार को श्रद्धांजलि अर्पित की। उप मुख्यमंत्रियों देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार ने भी दक्षिण मुंबई स्थित पुलिस आयुक्त कार्यालय परिसर में शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की और इस दौरान यहां पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे। नवंबर 2008 में हुए हमलों के दौरान जान की कुर्बानी देने वाले पुलिसकर्मियों के परिजनों ने भी शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। मुंबई में 26 नवंबर 2008 को पाकिस्तान से आए 10 आतंकवादियों ने यहां विभिन्न स्थानों पर एक साथ हमले किए थे जिनमें 166 लोग मारे गए थे और 300 से अधिक लोग घायल हुए थे।

आतंकवाद बर्दाश्त न करने की मोदी सरकार की नीति को दुनिया ने सराहा: अमित शाह

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मुंबई आतंकवादी हमले में जान गंवाने वाले जवानों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति की पूरी दुनिया ने सराहना की है और भारत आतंकवाद विरोधी पहलों में विश्व में अग्रणी बन गया है।

शाह ने कहा कि कायर आतंकवादियों ने 2008 में आज ही के दिन मुंबई में निर्दोष लोगों की हत्या करके मानवता को शर्मसार किया था। शाह ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर मुंबईटेररअटैक हैशटैग के साथ लिखा, मैं 26।11 के मुंबई हमलों में आतंकवादियों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होने वाले जवानों को भावभीनी श्रद्धांजलि देता हूं और अपना जीवन गंवाने वाले लोगों को नमन करता हूं। उन्होंने कहा कि आतंकवाद समूची मानव सभ्यता के लिए कलंक है और इसे कतई बर्दाश्त नहीं करने की मोदी सरकार की नीति को पूरे विश्व ने सराहा है तथा आज भारत आतंक विरोधी पहलों में विश्व में अग्रणी बन गया है। पाकिस्तान से आए 10 आतंकवादियों ने 26 नवंबर 2008 को मुंबई में भारत में अब तक का सबसे भीषण आतंकवादी हमला किया था जिसमें 166 लोग मारे गए थे।

वक्फ संबंधी संसदीय समिति की बुधवार को बैठक होने की संभावना

नई दिल्ली(भाषा)। वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार कर रही संसद की संयुक्त समिति की बुधवार को बैठक होने की संभावना है और इसके सदस्य प्रस्तावित कानून में अपनी ओर से संशोधन पेश कर सकते हैं। सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। समिति संशोधनों पर चर्चा करेगी और उन्हें प्राप्त समर्थन के आधार पर उन्हें स्वीकार या अस्वीकार करेगी। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी बैठक में शामिल होंगे और बैठक के दौरान आने वाले संशोधनों और अन्य मुद्दों पर अपने विचार पेश करेंगे। भाजपा सदस्य जगदंबिका पाल के नेतृत्व वाली संसद की संयुक्त समिति की रिपोर्ट सौंपने की समय सीमा शुक्रवार को है। ऐसी संभावना है कि समिति को अपनी मसौदा रिपोर्ट पर चर्चा सहित शेष कार्य को पूरा करने के लिए कार्यकाल विस्तार दिया जा सकता है।

संभल में लोगों की जान गई और यहां संविधान दिवस मनाया जा रहा है: अखिलेश

भाषा। नई दिल्ली

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मंगलवार को कहा कि ऐसे समय में संविधान दिवस मनाना सही नहीं है जब संभल में लोगों की जान चली गई। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष के नेताओं को उत्तर प्रदेश में हिंसा प्रभावित क्षेत्र का दौरा करने की अनुमति नहीं दी जा रही है।

संविधान दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा, संविधान का सच्चा उत्सव तब है, जब हम उसका पालन करें। उन्होंने कहा, हम समाजवादी हैं, बाबासाहेब बी.आर. आंबेडकर का संविधान हमारी रक्षा करता है और हमें हमारे अधिकार देता है। हम संविधान का सम्मान करते हैं लेकिन ऐसे समय में जश्न मनाना सही नहीं है जब संभल में कई लोगों की जान चली गई है। देश संविधान को अपनाने की 75वीं वर्षगांठ को संविधान दिवस के रूप में मना रहा है। संविधान सभा ने 26 नवंबर, 1949 को संसद के सेंट्रल हॉल में संविधान को अपनाया था। यह 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था। यादव ने आरोप लगाया, संभल में सरकार ने जो किया है, उससे लोगों की जान गई है। न्याय से इनकार किया जा रहा है, लोगों पर झूठे मामले दर्ज किए जा रहे हैं। संभल शहर के कोट गर्वी क्षेत्र में रविवार को अराजकता फैल गई, जब अदालत द्वारा आदेशित जामा मस्जिद के सर्वेक्षण का विरोध कर रहे लोगों की पुलिस के साथ झड़प हो गई, जिसके परिणामस्वरूप चार लोगों की मौत हो गई। गोलीबारी और पथराव के बीच हुई झड़पों में उप जिलाधिकारी रमेश चंद्र सहित 20 लोग घायल हो गए।

यादव ने सवाल किया, वे चर्चा कर सकते थे, हम सर्वेक्षण के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन जब टीम सर्वेक्षण कर रही थी, तब भाजपा कार्यकर्ता नारे लगा रहे थे। क्या उनके खिलाफ कोई कार्वाई की गई? उन्होंने कहा, सरकार ने इंटरनेट पर प्रतिबंध लगा दिया है, कर्फ्यू लगा दिया है ताकि विपक्ष वहां न पहुंच सके। दोनों सदनों के हमारे विपक्ष के सदस्य वहां जाना चाहते हैं लेकिन सरकार हमें इसकी अनुमति नहीं दे रही है। सपा की लोकसभा सदस्य डिंपल यादव ने आरोप लगाया कि संभल में हिंसा इसलिए भड़काई गई ताकि राज्य में उपचुनाव कैसे कराए गए, इस पर चर्चा से बचा जा सके। उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश चुनाव के दौरान जो माहौल देखने को मिला, उससे साफ पता चला कि प्रशासन पूरी तरह से भाजपा के समर्थन में था।

वोटों की चोरी और लूट को सरकार दबाना चाहती थी। इसीलिए संभल की घटना को जानबूझकर अंजाम दिया गया। सपा सांसद इकरा हसन ने कहा कि संभल की घटना के कारण पार्टी ने संविधान दिवस समारोह का बहिष्कार किया है। उन्होंने कहा, हमारी पार्टी ने समारोह का बहिष्कार किया क्योंकि हमारे राज्य (उत्तर प्रदेश) में एक ऐसी घटना घटी जो संविधान पर काले धब्बे के समान है। केंद्र और राज्य की सत्ता में बैठे लोग एक तरफ संविधान की बात करते हैं और दूसरी तरफ संविधान का अपमान करते हैं। यह बहुत दुखद घटना है, हम दुखी हैं।

संविधान दिवस मनाया

बाराबंकी। श्री रामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी लखनऊ के इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज में आज संविधान दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विकास मिश्रा और लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. भानु प्रताप ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। समारोह का सफल आयोजन इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्ट्डीज के डायरेक्टर प्रो. रोहित पी साबरान के कुशल मार्गदर्शन में हुआ। रजत सक्सेना, आयुषी तिवारी, आस्था मिश्रा, तुषार आदि फैकल्टी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया। विद्यार्थियों में अथर्व चौहान, प्रज्वल सिंह और आकांक्षा अग्रवाल, अजय सिंह व अन्य छात्रों का कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन अनुष्का सिंह एवं वैष्णवी सिंह के द्वारा संचालित हुआ। प्रो. रोहित पी साबरन जी ने गांधी जी के संविधान निर्माण के वक्त के अभिकथन का स्मरण कराते हुए कहा कि भले आप कितना भी अच्छा

संविधान क्यों ना बना लें, पर चाहिए तो अच्छे लोग उसका पालन करने के लिए। इसी कथन के प्रकाश में उन्होंने लोगों को उनके मौलिक कर्तव्यों की याद दिलाई। समारोह में सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों ने संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ किया और संविधान के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की। अपने संबोधन में कुलपति प्रो. विकास मिश्रा ने कहाकि संविधान भारत की आत्मा है। इसे समझना और पालन करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इस भव्य आयोजन में विश्वविद्यालय के शिक्षक, छात्र, और अन्य गणमान्य अतिथि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण विधि विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तक "Law and Policy on Geographical Indications in India" का विमोचन रहा। इस पुस्तक के लेखक डॉ. सुनील दत्त चतुर्वेदी हैं। पुस्तक विमोचन के साथ ही संविधान दिवस की गरिमा को बढ़ाते हुए उपस्थित लोगों ने भारतीय संविधान के महत्व और उसकी महिमा पर चर्चा की।

चार राज्यों में राज्यसभा की छह सीट के लिए उपचुनाव की घोषणा

भाषा। नई दिल्ली

निर्वाचन आयोग ने मंगलवार को चार राज्यों में राज्यसभा की रिक्त छह सीट के लिए 20 दिसंबर को उपचुनाव कराने की घोषणा की है। आंध्र प्रदेश में तीन रिक्तियां तब पैदा हुई थीं, जब वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के सदस्य वेंकटरमण राव मोपीदेवी, बीड़ा मस्तान राव यादव और रयागा कृष्णैया ने अगस्त में उच्च सदन की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था।

राज्यसभा सदस्य के रूप में यादव और कृष्णैया का कार्यकाल 21 जून, 2028 को समाप्त होना था, जबकि मोपीदेवी को 21 जून, 2026 को सेवानिवृत्त होना था। ओडिशा में एक रिक्ति तब हुई, जब सुजीत कुमार ने अपनी सीट छोड़ दी। इसके बाद उन्हें बीजू जनता दल द्वारा निष्कासित कर दिया गया था। उनका कार्यकाल 2 अप्रैल, 2026 को समाप्त होना था। तृणमूल कांग्रेस के जवाहर सरकार ने कोलकाता में एक महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या के बाद अप्रैल में इस्तीफा दे दिया था।

वह अप्रैल 2026 में सेवानिवृत्त होने वाले थे। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कृष्ण लाल पंवार ने हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में विधायक चुने जाने के बाद हरियाणा से राज्यसभा की अपनी सीट छोड़ दी थी। हाल के विधानसभा चुनावों के बाद, आंध्र प्रदेश में तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) और ओडिशा में भाजपा का राज्यसभा उपचुनाव में पलड़ा भारी रहेगा। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की सरकार है, जबकि हरियाणा में भाजपा का कब्जा बरकरार है।

एआर रहमान के साथ नाम जुड़ने पर मोहिनी डे ने कहा, झूठे दावे बंद करें

भाषा। नई दिल्ली

● मोहिनी डे ने पूर्व में रहमान के साथ काम किया है और वह दिग्गद संगीतकार को अपना आदर्श मानती हैं

गिटार वादक मोहिनी डे ने एआर रहमान के साथ उनका नाम जुड़ने संबंधी अफवाहों का खंडन करते हुए मीडिया से अनुरोध किया कि पूर्व पति मार्क हार्टसच से अलगाव के बीच वह उनके साथ उदारता बरते।

मोहिनी डे ने पूर्व में रहमान के साथ काम किया है और वह दिग्गद संगीतकार को अपना आदर्श मानती हैं। रहमान ने पिछले सप्ताह एक बयान जारी कर अपनी पत्नी सायरा बानू के साथ 29 वर्ष के वैवाहिक संबंध को खत्म करने की जानकारी साझा की थी, जिसके कुछ घंटों बाद ही मोहिनी ने भी हार्टसच से अलग होने की घोषणा की। मोहिनी बास गिटार वादक के साथ-साथ संगीतकार भी हैं। रहमान (57) और मोहिनी (28) के एक साथ अपने जीवनसाथी से अलग होने की घोषणा के बाद सोशल मीडिया पर कई लोगों ने दोनों के बीच रिश्ता होने की बात कही थी। मोहिनी ने सोमवार को इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में इस दावे को दरकिनार कर दिया। उन्होंने कहा, मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मेरे और रहमान के खिलाफ इतनी सारी गलत सूचनाएं और निराधार दावे किए जा रहे हैं। मोहिनी ने कहा, मैंने बचपन से एआर रहमान के साथ काम किया है, जिनका मैं सम्मान करती हूं।

मैंने उनके साथ फिल्मों, कई संगीत समारोह आदि में साढ़े आठ वर्ष काम किया। कृपया झूठे दावे करना बंद करें और हमारी निजता का सम्मान करें। रहमान ने बानू से अलगाव के बारे में अटकलें लगाने वाले लोगों को चेतावनी जारी की थी, जिसके कुछ दिनों बाद मोहिनी ने यह पोस्ट किया। मोहिनी ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया और कहा कि वह रहमान को पिता तुल्य मानती हैं। उन्होंने कहा, मेरे जीवन में बहुत से लोग मेरे पिता समान, आदर्श रहे हैं और मैं वास्तव में भाग्यशाली व आभारी हूं कि उन्होंने मुझे मेरे करियर में आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एआर रहमान उनमें से एक हैं। मैं उनका बहुत सम्मान करती हूं। वह मेरे पिता जैसे हैं। मोहिनी ने कहा, वह मेरे पिता से उम्र में थोड़े छोटे हैं। मुझे लगता है कि उनकी बेटी बिल्कुल मेरी उम्र की है। हम एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं। संक्षेप में कहूं तो कृपया हमारी निजता का सम्मान करें। यह एक निजी और दर्दभरा मामला है,इसलिए मेहरबानी कर उदारता बरतें।

पेज 1 का शेष

संविधान...

हम उन सामाजिक अंतरों को पाटने और कम करने में कितने उदार हैं, जिनके लिए उच्च स्तर के संकल्पों की आवश्यकता है और वे इसके हकदार हैं? हम बेकार और विकृत सामाजिक वार्तालापों से चतुराई से बचने के लिए कितने इच्छुक हैं जो हमारे सामाजिक ताने-बाने को कमजोर कर सकते हैं?'

बांग्लादेश...

इस्कॉन इंक. भारत सरकार से आग्रह करता है कि... बांग्लादेश सरकार से बात करें और बताएं कि हम एक शांतिप्रिय भक्ति आंदोलन हैं। इस बीच, कोलकाता में भाजपा और हिंदू जागरण मंच ने चेतावनी दी है कि अगर इस्कॉन साधु को तुरंत रिहा नहीं किया गया तो वे जोरदार आंदोलन करेंगे।

मुख्यमंत्री..

अपना इस्तीफा सौंपने के लिए राजभवन में राज्यपाल सी पी राधाकृष्णन से मुलाकात की। राजभवन के एक अधिकारी ने बताया कि राज्यपाल ने इसके बाद शिंदे से अनुरोध किया कि वे नए मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण तक कार्यवाहक भूमिका में बने रहें। निवर्तमान विधानसभा का कार्यकाल मंगलवार को समाप्त हो गया, जिससे संक्रमण प्रक्रिया में तेजी आ गई है। सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन ने हाल के विधानसभा चुनावों में प्रभावशाली प्रदर्शन किया, जहां उसने 288 में से 230 सीटें हासिल कीं। भाजपा को 132 सीटें मिलीं, उसके बाद शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना को 57 और अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी को 41 सीटें मिलीं। शिंदे कैबिनेट में मंत्री दीपक केसरकर ने संवाददाताओं से कहा कि जल्द से जल्द एक नई सरकार शपथ लेगी। सूत्रों ने बताया कि भारी जीत के बावजूद, महायुति गठबंधन, जिसमें भाजपा, शिवसेना और एनसीपी शामिल हैं, इस बात पर असहमति से जूझ रहा है कि अगला सीएम कौन होगा। केसरकर ने कहा कि शिवसेना कैडर चाहते हैं कि अगला सीएम उनकी पार्टी से हो, लेकिन अंतिम फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह पर निर्भर करेगा, जिसे वे स्वीकार करेंगे। इस बीच, भाजपा सूत्रों ने कहा कि पार्टी नई राज्य सरकार में विभागों के बंटवारे को अंतिम रूप दिए जाने तक अपने मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार का ऐलान नहीं किया जाएगा।

अनियंत्रित...

चालक दल में सभी महिलाएँ थीं। 30 से 35 मिनट तक कोई भी दरवाज़ा नहीं खोल सका। फिर चालक दल ने मेरे सह-यात्री से दरवाज़ा खोलने और उसे सीट पर ले जाने का अनुरोध किया। यह 2.40 घंटे की उड़ान थी।'

हार पर...

सह-संस्थापक एलन मस्क ने कहा था कि ईवीएम से छेड़छाड़ की जा सकती है और उन्होंने कहा कि टीडीपी प्रमुख एन चंद्रबाबू नायडू, आंध्र प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री और राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी ने दावा किया था कि ईवीएम से छेड़छाड़ की जा सकती है। पीठ ने कहा, जब चंद्रबाबू नायडू हारे थे, तो उन्होंने कहा था कि ईवीएम से छेड़छाड़ की जा सकती है। अब इस बार जगन मोहन रेड्डी हारे हैं, तो उन्होंने कहा कि ईवीएम से छेड़छाड़ की जा सकती है। जब याचिकाकर्ता ने कहा कि सभी जानते हैं कि चुनावों में पैसे बांटे जाते हैं, तो पीठ ने टिप्पणी की, हमें कभी भी किसी चुनाव के लिए कोई पैसा नहीं मिला। याचिकाकर्ता ने कहा कि उनकी याचिका में एक और प्रार्थना चुनाव प्रचार के दौरान पैसे और शराब के इस्तेमाल को विनियमित करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करने और यह सुनिश्चित करने की थी कि इस तरह की प्रथाएं कानून के तहत प्रतिबंधित और दंडनीय हों। याचिका में जागरूकता बढ़ाने और सूचित निर्णय लेने के महत्व के लिए व्यापक मतदाता शिक्षा अभियान को अनिवार्य करने का निर्देश देने की भी मांग की गई। याचिकाकर्ता ने कहा, आज, 32 प्रतिशत शिक्षित लोग अपना वोट नहीं डाल रहे हैं। यह कितनी बड़ी त्रासदी है। अगर लोकतंत्र इस तरह मरता रहेगा और हम कुछ नहीं कर पाएंगे तो भविष्य में आने वाले वर्षों में क्या होगा। अप्रैल में, न्यायालय ने पेपर बैलेट प्रणाली की वापसी की मांग करने वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया। ईवीएम में हेराफेरी के संदेह को 'निराधार' बताते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने पुरानी प्रणाली को वापस लाने की मांग को खारिज कर दिया और कहा कि मतदान उपकरण 'सुरक्षित' हैं और बूथ कैप्चरिंग और फर्जी मतदान को खत्म कर दिया गया है। हालांकि, न्यायालय ने चुनाव परिणामों में दूसरे और तीसरे स्थान पर आने वाले पीड़ित असफल उम्मीदवारों के लिए एक खिड़की खोली और उन्हें चुनाव पैनल को शुल्क का भुगतान करके लिखित अनुरोध पर प्रति विधानसभा क्षेत्र में पांच प्रतिशत ईवीएम में एम्बेडेड माइक्रोकंट्रोलर चिप्स के सत्यापन की मांग करने की अनुमति दी। इसने निर्देश दिया कि 1 मई से, प्रतीक लोडिंग इकाइयों को सील कर दिया जाना चाहिए और एक कंटेनर में सुरक्षित किया जाना चाहिए और परिणामों की घोषणा के बाद कम से कम 45 दिनों की अवधि के लिए ईवीएम के साथ एक स्ट्रांगरूम में संग्रहीत किया जाना चाहिए।

इयूटी...

किया, बल्कि अस्पताल की संपत्ति को भी नुकसान पहुंचाया। शर्मा ने कहा कि आरडीए ने प्रशासन को हिंसा की रिपोर्ट करते हुए एक पत्र सौंपा, लेकिन अभी तक कोई एफआईआर दर्ज नहीं की गई है। रेजिडेंट डॉक्टरों के खिलाफ इस तरह की हिंसा अस्वीकार्य है।

नोएडा..

अशोक कुमार ने बताया, थाना बीटा 2 क्षेत्रान्तर्गत साइट 4 की फैक्ट्री नंबर 4जी में आग लगने की सूचना मिलने के बाद स्थानीय पुलिस और फायर ब्रिगेड ने तुरंत मौके पर पहुंचकर राहत और बचाव कार्य शुरू किया। सर्च ऑपरेशन के दौरान फैक्ट्री में तीन व्यक्तियों के शव मिले। शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है।

मेवाड़..

10 नवंबर को अपने पिता महेंद्र सिंह मेवाड़ की मृत्यु के बाद विश्वराज सिंह मेवाड़ को तत्कालीन राजपरिवार के मुखिया के रूप में नियुक्त किया गया। हालांकि, महेंद्र सिंह और उनके अलग हुए छोटे भाई अरविंद सिंह के बीच लंबे समय से चल रहे विवाद के कारण यह समारोह फीका पड़ गया। दोनों ही राजपूत राजा महाराणा प्रताप के वंशज हैं। समारोह में विश्वराज का तिलक तत्कालीन सलूंबर राजपरिवार के मुखिया देवव्रत सिंह ने किया, जिन्होंने तलवार से अपनी उंगली काटकर खून से अभिषेक किया- यह परंपरा सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। विश्वराज और अन्य लोगों की योजना उदयपुर सिटी पैलेस में धूनी और एकलिंगनाथजी मंदिर में पूजा-अर्चना करने जाने की थी, लेकिन दोनों ही स्थान अरविंद सिंह के नियंत्रण में हैं। अरविंद सिंह ने कथित तौर पर अपने वकील के माध्यम से सोमवार को स्थानीय समाचार पत्रों में दो सार्वजनिक नोटिस प्रकाशित करवाए, जिसमें अतिक्रमण करने वालों और संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वालों पर कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी गई। जब विश्वराज और अन्य लोग सिटी पैलेस पहुंचे तो स्थानीय पुलिस ने उन्हें अंदर जाने से मना कर दिया। विश्वराज ने सिटी पैलेस में प्रवेश करने के लिए जगदीश चौक पर कई घंटों तक इंतजार किया, लेकिन रात में दोनों तरफ से पथराव होने पर तनाव बढ़ गया। धूनी के बाद विश्वराज को उदयपुर के एकलिंगनाथजी मंदिर जाना था, जहां उन्हें एकलिंगनाथजी के दीवान के प्रतीक के रूप में चांदी की छड़ी दी जानी थी। हालांकि, जगदीश चौक में इंतजार कर रहे विश्वराज सिंह मंगलवार रात 1.30 बजे सिटी पैलेस गए बिना ही उदयपुर स्थित अपने आवास पर लौट आए। मेवाड़ का 'पगारी दस्तूर' या राज्याभिषेक समारोह 7वीं शताब्दी के चित्तौड़गढ़ किले में आयोजित किया गया था। 21 तोपों की सलामी के साथ आयोजित इस समारोह में पूरे भारत से पूर्व राजपरिवारों के सदस्य शामिल हुए थे। पूर्व राजपरिवार भींडर के मुखिया रणधीर सिंह भींडर ने कहा, लक्ष्यराज सिंह ने जो किया है, वह मेवाड़ के इतिहास पर एक धब्बा है। विश्वराज सिंह को धूनी पर मत्था टेकने की अनुमति न देकर उन्होंने न केवल मेवाड़ की गौरवशाली विरासत को ठेस पहुंचाई है, बल्कि खुद को भी अपमानित किया है। उन्होंने कहा, हमने उनसे पूछा कि विश्वराज धूनी के दर्शन करके लौट जाएंगे और उस स्थान पर कोई नहीं रहेगा। राजपूत समुदाय उनसे नाराज है। पूर्व विधायक भींडर ने कहा कि लक्ष्यराज ने सोचा होगा कि अगर विश्वराज को सिटी पैलेस में प्रवेश करने दिया गया और उन्होंने अनुष्ठान पूरा कर लिया तो यह मान्य हो जाएगा कि वे परिवार के मुखिया हैं। मेवाड़ परिवार के मुखिया को 'महाराणा' कहा जाता था, जिसे भारत सरकार ने 1971 में समाप्त कर दिया था।

हमारे देश का सबसे पवित्र ग्रंथ है संविधानः राष्ट्रपति

नई दिल्ली। (भाषा) राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संविधान को देश का सबसे पवित्र ग्रंथ बताते हुए मंगलवार को कहा कि राष्ट्र ने संविधान के माध्यम से सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के अनेक बड़े लक्ष्यों को प्राप्त किया है। मुर्मू ने संविधान दिवस के अवसर पर केंद्र सरकार द्वारा वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी), नारी शक्ति वंदन अधिनियम और तीन आपराधिक कानूनों को लागू किए जाने का भी उल्लेख किया। संविधान को अंगीकार किए जाने की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर संसद के केंद्रीय कक्ष में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए मुर्मू ने कहा, हमारा संविधान, हमारे लोकतांत्रिक गणतंत्र की सुदृढ़ आधारशिला है। हमारा संविधान, हमारे सामूहिक और व्यक्तिगत स्वाभिमान को सुनिश्चित करता है। उन्होंने कहा, बदलते समय की मांग के अनुसार नए विचारों को अपनाने की व्यवस्था हमारे दूरदर्शी संविधान निर्माताओं ने बनाई थी। हमने संविधान के माध्यम से सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के अनेक बड़े लक्ष्यों को प्राप्त किया है। उन्होंने संविधान सभा के अध्यक्ष एवं प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद और संविधान के रचनाकार डॉ बाबासाहब भीमराव आंबेडकर के योगदान का भी उल्लेख किया। मुर्मू ने कहा, बाबासाहब आंबेडकर की प्रगतिशील और समावेशी सोच की छाप हमारे संविधान पर अंकित है। संविधान सभा में बाबासाहब के ऐतिहासिक संबोधनों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि भारत, लोकतंत्र की जननी है। राष्ट्रपति ने संविधान सभा की 15 महिला सदस्यों के योगदान का भी स्मरण किया। उन्होंने कहा, हमारी संविधान सभा में हमारे देश की विविधता को अभिव्यक्ति मिली थी। संविधान सभा में सभी प्रान्तों और क्षेत्रों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति से, अखिल भारतीय चेतना को स्वर मिला था। मेरा मानना है कि संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित आदर्श एक दूसरे के पूरक हैं। राष्ट्रपति ने कहा, समग्र रूप से, ए सभी आदर्श ऐसा वातावरण उपलब्ध कराते हैं जिसमें हर नागरिक को फलने-फूलने, समाज में योगदान देने, तथा साथी नागरिकों की मदद करने का अवसर मिलता है। राष्ट्रपति ने कहा, हमारे संविधान निर्माताओं ने भारत को अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का निर्देश दिया है। आज एक अग्रणी अर्थव्यवस्था होने के साथ-साथ हमारा देश विश्वबंधु के रूप में यह भूमिका बखूबी निभा रहा है। उन्होंने कहा, संविधान की भावना के अनुसार कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका का दायित्व मिल-जुलकर नागरिकों के जीवन को सुगम बनाना है।

पार्टियां पंथ को देश से ऊपर रखती हैं तो हमारी स्वतंत्रता दूसरी बार खतरे में पड़ जाएगीः धनखड़

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को संविधान निर्माता बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव आंबेडकर को याद करते हुए कहा कि अगर पार्टियां पंथ को देश से ऊपर रखती है तो हमारी स्वतंत्रता दूसरी बार खतरे में पड़ जाएगी।संविधान को अंगीकार किए जाने की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर साल भर चलने वाले समारोहों की शुरुआत के लिए पुराने संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने आगाह किया कि रणनीति के तहत व्यवधान पैदा करना लोकतंत्र के लिए खतरा है।धनखड़ ने कहा, यह समय रचनात्मक संवाद, बहस और सार्थक चर्चा के माध्यम से हमारे लोकतांत्रिक मंदिरों की पवित्रता को बहाल करने का समय है ताकि हमारे लोगों की प्रभावी ढंग से सेवा की जा सके। इस बात का उल्लेख करते हुए कि संविधान ने निपुणता से लोकतंत्र के तीन स्तंभों -- विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका-- को स्थापित किया और प्रत्येक की एक परिभाषित भूमिका है, धनखड़ ने कहा, लोकतंत्र का सबसे अच्छा पोषण तब होता है जब उसके संवैधानिक संस्थान अपने-अपने अधिकार क्षेत्रों का पालन करते हुए समन्वय, तालमेल और एकजुटता से काम करें। उन्होंने जोर देकर कहा कि राज्य के इन अंगों के कामकाज में, क्षेत्र विशिष्टता भारत को समृद्धि और समानता की अभूतपूर्व ऊंचाइयों की ओर ले जाने में इष्टतम योगदान देने का सबसे अच्छा साधन है। उन्होंने कहा, हमारा संविधान मौलिक अधिकारों का आश्वासन देता है और मौलिक कर्त्तव्यों को निर्धारित करता है। ए सूचित नागरिकता को परिभाषित करते हैं, जो डॉ. आंबेडकर की इस चेतावनी को दर्शाते हैं कि बाहरी खतरों से ज्यादा आंतरिक संघर्ष लोकतंत्र को खतरे में डालते हैं।

संविधान सभा की सार्थक संवाद की उत्कृष्ट परंपरा को सदनों में अपनाना चाहिएः बिरला

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मंगलवार को कहा कि संविधान सभा की सार्थक एवं गरिमापूर्ण संवाद की उत्कृष्ट परंपरा को संसद के दोनों सदनों में अपनाया जाना चाहिए।उन्होंने संविधान को अंगीकार किए जाने की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में आयोजित कार्यक्रम में यह भी कहा कि हमारा संविधान देश में सामाजिक-आर्थिक बदलावों का सूत्रधार रहा है। इस कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, केंद्रीय मंत्री तथा दोनों सदनों सदस्य मौजूद थे।बिरला ने कहा, आज हमारे देश के लिए असीम गौरव का दिन है। 75 वर्ष पहले आज ही के दिन इस पवित्र स्थान पर हमारे संविधान को अंगीकृत किया गया था। उन्होंने कहा, वर्ष 2015 में हमने हर वर्ष 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया था ताकि वर्तमान पीढ़ी को, विशेष रूप से युवाओं को हमारे संविधान में निहित मूल्यों, आदर्शों, कर्तव्यों और दायित्वों से जोड़ा जाए। बिरला ने कहा, हमारा संविधान हमारे मनीषियों के वर्षों के तप, त्याग, विद्वता, सामर्थ्य और क्षमता का परिणाम है। इसी केन्द्रीय कक्ष में 2 वर्ष, 11 महीने, 18 दिनों के कठिन परिश्रम के बाद उन्होंने देश की भौगोलिक और सामाजिक विविधताओं को एक सूत्र में बांधने वाला संविधान बनाया। हमारे इस संविधान ने हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को आकार दिया है।

संविधान ने बदलाव लाने में उल्लेखनीय मदद कीः प्रधान न्यायाधीश खन्ना

नई दिल्ली। भारत के प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना ने मंगलवार को कहा कि भारत एक जीवंत लोकतंत्र और भू-राजनीतिक नेता के रूप में उभरा है तथा यह बदलाव लाने में देश के संविधान ने उल्लेखनीय मदद की है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि भारत की यात्रा परिवर्तनकारी रही है। उन्होंने कहा कि भारत ने विभाजन और उसके बाद की भयावहता के बीच बड़े पैमाने पर निरक्षरता, गरीबी और संतुलन सुनिश्चित करने वाले मजबूत लोकतांत्रिक प्रणाली के अभाव से लेकर अब नेतृत्व करने वाला एवं आत्मविश्वास से भरा देश बनने तक का सफर तय किया है।न्यायमूर्ति खन्ना ने उच्चतम न्यायालय में सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) द्वारा आयोजित संविधान दिवस समारोह में कहा, लेकिन इसके (इस यात्रा के) पीछे भारत का संविधान है, जिसने यह परिवर्तन लाने में मदद की है। यह आज जीवन जीने का एक तरीका है, जिसका पालन किया जाना चाहिए। संविधान सभा द्वारा 1949 में भारत के संविधान को अंगीकार किए जाने की याद में 2015 से हर साल 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इससे पहले इस दिन को विधि दिवस के रूप में मनाया जाता था। अटार्नी जनरल आर. वेंकटरमणि और एससीबीए अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने भी सभा को संबोधित किया। अपने संबोधन में न्यायमूर्ति खन्ना ने बार के महत्व और योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा, हम अक्सर न्यायपालिका को न्यायाधीशों के रूप में संदर्भित करते हैं, लेकिन न्यायपालिका बार का भी समान रूप से प्रतिनिधित्व करती है।

शाह ने सशक्त भारत बनाने का संकल्प लेने की अपील की

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को संविधान दिवस पर लोगों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत जैसे विशाल देश में लोकतंत्र की ताकत उसका संविधान है, जो राष्ट्रीय एकता और अखंडता का मंत्र देता है। संविधान सभा ने 26 नवंबर 1949 को संसद के केंद्रीय कक्ष में संविधान को अपनाया था और यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। शाह ने संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज भारत पूरे उत्साह से संविधान की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर जी सहित संविधान के सभी शिल्पियों के योगदान को चिरस्मरणीय बनाने के लिए (प्रधानमंत्री नरेन्द्र) मोदी जी ने संविधान दिवस मनाने की शुरुआत की। शाह ने कहा, भारत जैसे विशाल देश के लोकतंत्र की शक्ति हमारा संविधान ही है, जो हर व्यक्ति के लिए न्याय और समान अधिकार सुनिश्चित कर राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का मंत्र देता है। उन्होंने कहा कि संविधान सिर्फ मंचों पर दिखाने के लिए मात्र एक पुस्तक नहीं, बल्कि पूर्ण श्रद्धा से आत्मसात कर सार्वजनिक जीवन में अपना सर्वोच्च योगदान देने की कुंजी है। शाह ने कहा, आइएउ इस संविधान दिवस पर एक सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत बनाने का संकल्प लें।

संविधान में व्यक्त प्रत्येक विचार की रक्षा के लिए सभी को एकसाथ आना चाहिएः खरगे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने संविधान दिवस के अवसर पर मंगलवार को कहा कि संविधान में व्यक्त प्रत्येक विचार की रक्षा के लिए सभी को एक साथ आना चाहिए।खरगे ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, संविधान को अंगीकार किए जाने का 75वां वर्ष आज से शुरू हो गया है। मैं इस ऐतिहासिक अवसर पर सभी भारतीय नागरिकों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने कहा, हमारे पूर्वजों द्वारा परिश्रम से और सावधानीपूर्वक तैयार किया गया भारत का संविधान हमारे राष्ट्र की जीवनधारा है। यह हमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की गारंटी देता है। यह भारत को एक संप्रभु समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाता है। उनके अनुसार, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सिर्फ आदर्श या विचार नहीं हैं, ए 140 करोड़ भारतीय नागरिकों के लिए जीवन जीने का तरीका हैं। खरगे ने कहा, आज, हम संविधान सभा और उसके सदस्यों के योगदान को याद करते हैं। हम उनकी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता के सदैव ऋणी रहेंगे। पंडित जवाहरलाल नेहरू, बाबा साहेब डॉ. बी आर आंबेडकर प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं जो पीढ़ियों के लिए आशा के पथप्रदर्शक बनते हैं।

काशी में पूर्व विधायक दादा के निधन से शोक की लहर

वाराणसी। (भाषा) वाराणसी के शहर दक्षिण से लगातार सात बार विधायक रह चुके भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता श्याम देव राय चौधरी (85) का मंगलवार की सुबह अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। भाजपा के एक पदाधिकारी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि दादा के नाम से मशहूर चौधरी कुछ दिनों से उम्र संबंधी समस्याओं से पीड़ित थे। पिछले मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी खैरियत पूछी थी और उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी अपने वाराणसी दौरे के दौरान चौधरी को देखने अस्पताल गए थे। भाजपा महानगर अध्यक्ष विद्यासागर राय ने बताया कि श्याम देव राय चौधरी को ब्रेन हेमरेज की वजह से इलाज के लिए महमूरगंज स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां इलाज के दौरान मंगलवार की सुबह उनका निधन हो गया।उन्होंने कहा कि दादा के निधन से हुए नुकसान की भरपाई नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि दादा जनता में अपनी सहजता और सरलता की वजह से लोकप्रिय थे और उनके निधन से काशी ने एक लोकप्रिय नेता को खो दिया है। भाजपा नेताओं ने बताया कि श्याम देव राय चौधरी 1989 से 2017 तक लगातार शहर दक्षिणी के सात बार विधायक रहे। भाजपा सरकार में मंत्री रह चुके श्याम देव राय 2007 और 2012 में प्रोटेम स्पीकर भी रहे।

प्रधानमंत्री मोदी ने दुख जताया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता श्यामदेव राय चौधरी के निधन पर शोक जताया और कहा कि उनका जाना काशी के साथ ही पूरे राजनीतिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।प्रधानमंत्री मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी के शहर दक्षिण से लगातार सात बार विधायक रह चुके चौधरी का मंगलवार की सुबह अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। वह 85 वर्ष के थे। मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, जनसेवा में जीवनपर्यंत समर्पित रहे भाजपा के वरिष्ठ नेता श्यामदेव राय चौधरी जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। स्नेह भाव से हम सभी उन्हे दादा कहते थे।

एएमयू में दाखिले के लिए दलिततों-पिछड़ों को आरक्षण देने की मांग को लेकर प्रदर्शन

अलीगढ़। (भाषा) उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) में दाखिले के लिए हिंदू दलितों और पिछड़ों को आरक्षण देने की मांग को लेकर नवगठित एएमयू आरक्षण संघर्ष मोर्चा ने मंगलवार को विरोध मार्च निकाला। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।अधिकारियों के मुताबिक, कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था के बीच यह विरोध मार्च विश्वविद्यालय परिसर और उसके आसपास निकाला गया। उन्होंने बताया कि इस बीच पुलिस प्रशासन ने एएमयू परिसर की ओर जाने वाली विभिन्न सड़कों पर अवरोधक लगाए थे। अधिकारियों ने विश्वविद्यालय परिसर के सभी प्रवेश बिंदुओं पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे। प्रदर्शनकारी सिविल लाइंस इलाके में राजा महेंद्र प्रताप चौक पर एकत्र हुए और फिर एएमयू परिसर के प्रवेश बिंदु पर विश्वविद्यालय की परिधि तक मार्च किया। प्रदर्शनकारियों ने एएमयू विरोधी और कुछ धार्मिक नारे भी लगाए। अधिकारियों के मुताबिक, मार्च निकालने के बाद कुछ प्रदर्शनकारियों ने अवरोधकों से आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन पुलिस ने उनके इस प्रयास को विफल कर दिया।

प्रदर्शनकारियों ने इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संबोधित करते हुए अपर नगर मजिस्ट्रेट संजय कुमार मिश्रा को ज्ञापन सौंपा। मिश्रा ने जिलाधिकारी की ओर से ज्ञापन प्राप्त

किया। मिश्रा ने बाद में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए बताया कि विरोध मार्च शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। उन्होंने बताया कि ज्ञापन में विश्वविद्यालय में हिंदू दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को तब तक आरक्षण देने की मांग की गई जब तक कि उच्चतम न्यायालय इस मुद्दे पर अंतिम फैसला न सुना दे।एएमयू के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने बताया कि विश्वविद्यालय ने यह सुनिश्चित करने के लिए सभी एहतियाती कदम उठाए हैं कि विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर कोई अप्रिय घटना न हो।उन्होंने बताया कि एएमयू विरोधी नारों के अलावा प्रदर्शनकारियों ने विश्वविद्यालय के पास भड़काऊ नारे भी लगाए। पदाधिकारी ने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने घोषणा की थी कि आज (मंगलवार) का विरोध प्रदर्शन तो बस शुरुआत है और उनका संगठन तब तक अपनी मांग पर अड़ा रहेगा, जब तक उनकी मांगें मान नहीं ली जातीं। एएमयू प्रवक्ता और जनसंपर्क प्रभारी सदस्य प्रोफेसर मोहम्मद असीम सिद्दीकी ने बाद में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा, किसी भी समुदाय को आरक्षण देने का मुद्दा अब पूरी तरह से भारत के उच्चतम न्यायालय के पास है, जो देश के संविधान और विश्वविद्यालय की कानूनी स्थिति के आलोक में पूरे मामले की जांच कर रहा है। उन्होंने कहा, हालांकि एएमयू में मुसलमानों के लिए आरक्षण के मुद्दे पर पूरी तरह से गलत धारणा फैलाई गई है। वर्तमान में, किसी भी पाठ्यक्रम में मुसलमानों के लिए कोई आरक्षण नहीं है और एकमात्र आरक्षण जो मौजूद है वह आंतरिक छात्रों के लिए है, जिसमें सभी समुदायों के सदस्य शामिल हैं।

सिद्दीकी ने बताया कि जब तक उच्चतम न्यायालय इस मामले पर फैसला नहीं करता तब तक धर्म या जाति आधारित आरक्षण देने का सवाल ही नहीं उठता।उन्होंने बताया कि एक बार जब शीर्ष अदालत अपना अंतिम फैसला सुना देगा तभी विश्वविद्यालय किसी भी तरह का आरक्षण लागू करने की स्थिति में होगा।पदाधिकारी ने बताया कि विश्वविद्यालय ने प्रशासन की मदद से सभी सावधानियां बरती हैं ताकि परिसर की शांति भंग न हो।

भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का प्रतीक है संविधानः रजत जैन

संवाददाता। मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालयए मेरठ में मंगलवार को संविधान दिवस के उपलक्ष्य में राज भवन उत्तर प्रदेश से प्रेरित विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण भारतीय संविधान की शपथ ग्रहण और इसके महत्व पर आधारित चर्चा रही। विश्वविद्यालय के अटल सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्लाए जिला जज रजत जैनए विश्वविद्यालय के अधिकारीए कर्मचारीए शिक्षकए और छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से जुड़े जिला जज रजत जैन ने कहाए ष्भारत का संविधान न केवल देश को एक संप्रभुए समाजवादीए धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में परिभाषित करता हैए बल्कि यह प्रत्येक नागरिक को न्यायए स्वतंत्रताए समानता और बंधुत्व का अधिकार प्रदान करता है।ष् उन्होंने डॉण् भीमराव अंबेडकर के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय संविधान उनके दूरदर्शी नेतृत्व का परिणाम हैए जिसे तैयार करने में करीब तीन साल का समय लगा। इससे पूर्व उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहाए ष्संविधान दिवस केवल एक औपचारिकता नहीं हैए बल्कि यह दिवस हमें अपने कर्तव्यों और अधिकारों की याद दिलाने का

अवसर प्रदान करता है। भारतीय संविधान न केवल हमारे अधिकारों की रक्षा करता हैए बल्कि यह हमें एक जिम्मेदार नागरिक बनने की भी प्रेरणा देता है।ष् उन्होंने आगे कहा कि इस दिन को हमें संविधान के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने का संकल्प लेना चाहिए। संविधान दिवस के अवसर पर छात्रों के लिए भाषणए पेंटिंग और रंगोली प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में छात्रों ने संविधान की महत्ता और लोकतांत्रिक मूल्यों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया। ष्भारतीय संविधानरू एक मार्गदर्शकष् विषय पर हुई भाषण प्रतियोगिता में छात्रों ने अपनी तार्किक और विचारशील प्रस्तुतियों से सभी को प्रभावित किया। साथ हीए ष्संविधान की सुंदरताष् पर आधारित पेंटिंग और रंगोली प्रतियोगिताओं में भी छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में जिला जज रजत जैन ने ऑनलाइन माध्यम से सभी उपस्थितजनों को संविधान की शपथ दिलाई। उन्होंने संविधान की प्रस्तावना को दोहराते हुए नागरिकों से इसके आदर्शों को आत्मसात करने का आह्वान किया। संविधान दिवस के इस आयोजन ने सभी प्रतिभागियों को भारतीय लोकतंत्र की नींव और इसकी उत्कृष्टता के प्रति जागरूक किया। विश्वविद्यालय ने इस आयोजन के माध्यम से संविधान के प्रति सम्मान और निष्ठा प्रकट करने का एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कुल सचिव धीरेंद्र कुमार वित्त अधिकारी रमेश चंद्र शोध निदेशक प्रोफेसर वीरपाल सिंह साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर नीलू जैन गुप्ता समन्वयक प्रोफेसर केके शर्माए प्रोफेसर बिंदु शर्माए प्रोफेसर जमाल अहमद सहित विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक व कर्मचारीए विद्यार्थी मौजूद रहे।

एससी, एसटी, पिछड़ों के सामने खड़ी दीवार मजबूत कर रहे हैं मोदी और आरएसएसः राहुल

नई दिल्ली। (भाषा) लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों के सामने खड़ी दीवार को मजबूत करने का आरोप लगाया और यह भी कहा कि उनकी पार्टी के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) की सरकार के समय इस दीवार को कमजोर करने का काम जितनी मजबूती से होना था, वो नहीं हो पाया। कांग्रेस के विभिन्न प्रकोष्ठों की ओर से आयोजित संविधान रक्षक अभियान कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और आरएसएस चाहे कुछ भी कर ले, देश में जाति जनगणना और आरक्षण की 50 प्रतिशत की सीमा तोड़ने का काम होकर रहेगा। उन्होंने दावा किया कि इस बात की गारंटी है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संविधान को नहीं पढ़ा है, क्योंकि यदि उन्होंने पढ़ा होता तो वह वो काम नहीं करते जो रोजाना करते हैं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा, आपके (एससी, एसटी, ओबीसी के) सामने दीवार खड़ी है, आप इस बात को समझते हैं। इस दीवार को नरेन्द्र मोदी और आरएसएस मजबूत करते जा रहे हैं। राहुल गांधी के अनुसार, 20 साल से देख रहा हूं...24 घंटे आपको बताया जाता है कि आपको जगह मिलेगी, लेकिन नहीं...धीरे-धीरे दीवार मजबूत होती है। उन्होंने कहा, संप्रग की सरकार ने मनरेगा दिया, जमीन का अधिकार दिया, भोजन का अधिकार दिया, वो दीवार को कमजोर करने के तरीके थे। आज मैं कह सकता हूं कि जिस प्रकार से दीवार को कमजोर करना था, हमने नहीं किया, जिस मजबूती से उस दीवार को कमजोर करने काम करना था, हमने नहीं किया, संप्रग सरकार ने नहीं किया। राहुल गांधी का कहना था, हम दीवार को तोड़ने की कोशिश करते थे, लेकिन ए (भाजपा) दीवार में सीमेंट डाल रहे है।

मीरपुर की जीत से उत्साहित रालोद ने बढ़ाए कदम

उरई में रालोद का व्यापक जनसंपर्क कार्यक्रम आयोजित

संवाददाता। उरई, जालौन

जनपद जालौन के प्रबुद्ध जनों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के आमंत्रण पर एवं प्रदेश में राष्ट्रीय लोकदल के संगठन विस्तार के उद्देश्य से रालोद के राष्ट्रीय सचिव श्री अनुपम मिश्रा मंगलवार 26 नवंबर को उरई पहुंचे। सर्वप्रथम उनके कालपी पहुंचने पर बुंदेली सेना के अध्यक्ष सोनू ठाकुर व अन्य पदाधिकारियों ने तथा कीरतपुर के प्रधान पवनदीप निषाद ने बड़ी संख्या में ग्रामीणों के साथ माला पहनाकर राष्ट्रीय सचिव का स्वागत किया। कालपी से उरई के बीच मार्ग में जगह.जगह लोगों ने राष्ट्रीय सचिव का स्वागत किया। तदोपरांत राष्ट्रीय सचिव अनुपम मिश्रा एस आर इंटर कालेज पहुंचे जहां वरिष्ठ भाजपा नेता अशोक राठौर के साथ श्री मिश्रा ने संविधान दिवस के उपलक्ष्य में विद्यालय के छात्र छात्राओं से भारत के संविधान की प्रस्तावना का पाठ

कराने के साथ सभी को संविधान का का पालन करने की शपथ दिलाई। उसने पश्चात राष्ट्रीय सचिव ने सरकिट हाउस पहुंच कर प्रेस वार्ता को संबोधित किया। साथ ही बड़ी संख्या में युवाओं ने सर्किट हाउस पहुंच कर राष्ट्रीय सचिव का स्वागत किया एवं जिले की विविध समस्याओं से राष्ट्रीय सचिव को अवगत कराया। श्री मिश्रा ने सभी समस्याओं के समाधान हेतु पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व से संवाद करने एवं समस्याओं के समाधान हेतु हरसंभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

उसके पश्चात राष्ट्रीय सचिव व्यापार मंडल के पदाधिकारियों के साथ एक बैठक की जिसमें जिले के विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर रालोद के जिलाध्यक्ष ध्रुव गुप्ता भी मौजूद रहे।तदोपरांत राष्ट्रीय सचिव सेमरिया गांव पहुंचे जहां बड़ी संख्या में मौजूद ग्रामीणों के साथ संवाद कर उनकी समस्याओं को सुना। बुंदेली सेना के जिलाध्यक्ष सोनू ठाकुर के नेतृत्व में सेना के सदस्यों ने पृथक बुंदेलखंड राज्य की मांग उठाई। राष्ट्रीय सचिव श्री अनुपम मिश्रा ने कहा कि राष्ट्रीय लोकदल बुंदेलखंड क्षेत्र के लोगों की इन भावनाओं का सम्मान करता है।इसके पश्चात राष्ट्रीय सचिव रूरा अडडू गांव पहुंचे जहां पहले से ही बड़ी संख्या में ग्रामीण जन एकत्र थे। राष्ट्रीय पदाधिकारी को अपने सम्मुख देख ग्रामीणों को अपने समस्याओं को लेकर उम्मीद के भाव नज़र आ रहे थे। राष्ट्रीय सचिव श्री ने धैर्य पूर्वक ग्रामीणों की समस्याओं को सुनकर अपने व पार्टी के स्तर से हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

उन्नाव में गंगा नदी पर बने ब्रिटिशकालीन पुल का एक हिस्सा गिरा

उन्नाव। पिछले चार वर्षों से बंद ब्रिटिश काल में बना और कानपुरउन्नाव को जोड़ने वाला ऐतिहासिक गंगा पुल का एक हिस्सा मंगलवार तड़के अचानक गंगा नदी में गिर गया। हालांकि इससे कोई जनहानि नहीं हुई। स्थानीय लोगों ने यह जानकारी दी।वर्ष 2021 में पुल की स्थिति खराब होने के बाद इसको आवागमन के लिए बंद कर दिया गया था जिससे पुल के गिरने के दौरान किसी तरह की कोई अनहोनी नहीं हुई। स्थानीय निवासी आशू अवस्थी ने बताया कि मंगलवार भोर में दो बजे के बाद पुल के दो खंभों के बीच का हिस्सा गंगा में गिर गया। स्थानीय निवासियों का दावा है यह पुल 1874 में अवध एंड रूहेलखंड रेलवे लिमिटेड कंपनी द्वारा बनाया गया था। स्थानीय निवासी पंडा राजू ने बताया कि पुल को 2021 में दरारें आने के बाद यातायात के लिए बंद कर दिया गया था। स्थानीय लोगों ने बताया कि कानपुर की तरफ से 2, 10, 17 और 22 नंबर की कोठियों में गहरी दरारें पाई गई थीं जिसके चलते सुरक्षा के लिहाज से प्रशासन ने पांच अप्रैल 2021 को इस पुल को पूरी तरह से बंद कर दिया था।

इमरान के समर्थक इस्लामाबाद पहुंचे, हिंसा में छह मरे

भाषा। इस्लामाबाद

जेल में बंद पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के समर्थकों की मंगलवार को पुलिस से हुई झड़पों में छह सुरक्षाकर्मी मारे गए और कई अन्य घायल हो गए। इससे पहले खान के समर्थकों ने राजधानी पहुंचने के लिए, पुलिस अवरोधकों को हटा दिया और उनकी पुलिस के साथ झड़प हो गई सरकारी मीडिया ने मंगलवार को बताया कि प्रदर्शन के हिंसक हो जाने के कारण अर्धसैनिक बल के चार जवान और पुलिस के दो कर्मी मारे गए तथा 100 से अधिक सुरक्षाकर्मी घायल हो गए। इस हिंसा के बाद संघीय सरकार ने राजधानी को राष्ट्रीय राजधानी में सेना तैनात करने के साथ ही उन्हें आदेश दिए गए हैं कि उपद्रवियों को देखते ही गोली मार दी जाए। पाकिस्तान ने तनावपूर्ण स्थिति के मद्देनजर सेना को तैनात किया हुआ है और खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के

समर्थकों ने इस्लामाबाद के डी-चौक स्थल की ओर जाने वाले रास्ते में लगाए गए अवरोधकों को हटा दिया। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान (72) पिछले वर्ष अगस्त से जेल में हैं। उन्होंने 13 नवंबर को 24 नवंबर को देशव्यापी प्रदर्शन करने का आह्वान किया था। उन्होंने कथित तौर पर चोरी किए गए जनादेश, लोगों की गिरफ्तारी और 26वें संशोधन के पारित होने की निंदा की थी। जियो न्यूज ने फुटेज साझा की, जिसमें खान के समर्थक डी-चौक की ओर जाने वाली सड़कों पर रखे शिपिंग कंटेनरों पर चढ़ते हुए दिखाई दिए। 'डी-चौक कई महत्वपूर्ण सरकारी इमारतों राष्ट्रपति भवन, प्रधानमंत्री कार्यालय, संसद और उच्चतम न्यायालय के करीब स्थित है। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि प्रदर्शनकारी धरना देंगे या डी-चौक से चले जाएंगे। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के शीर्ष नेताओं ने हालांकि खान की रिहाई तक इस्लामाबाद में रहने की प्रतिबद्धता जताई है। खान की पत्नी बुशरा बीबी ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे तभी यहां से जाएंगे जब खान खुद आकर अगली कार्रवाई के बारे में बताएं। आंतरिक मंत्री मोहसिन नकवी के बार-बार यह कहने के बावजूद कि किसी को भी डी-चौक तक पहुंचने की अनुमति नहीं दी जाएगी, वे अपने घोषित गंतव्य तक पहुंच गए। नकवी ने यह भी कहा कि सरकार ने पीटीआई नेताओं को हर तरह से मनाने की कोशिश की, लेकिन वे संघीय राजधानी की ओर बढ़ गए। उन्होंने यह भी कहा कि पीटीआई के सभी समर्थक खैबर पख्तूनख्वा से आए थे। रेडियो पाकिस्तान ने बताया कि सोमवार देर रात इस्लामाबाद में श्रीनगर राजमार्ग पर एक वाहन द्वारा टक्कर मारे जाने से पाकिस्तान रेंजर्स के चार अधिकारियों की मौत हो गई और उनके पांच अन्य कर्मियों एवं पुलिस के कई अधिकारियों को भी गंभीर चोटें आईं हैं। रेडियो पाकिस्तान के अनुसार, इस स्थान से लगभग पांच किलोमीटर दूर हथियारों और गोला-बारूद से पूरी तरह लैस कुछ बदमाशों ने रेंजर्स के जवानों पर पथराव किया और रावलपिंडी स्थित चुंगी नंबर- 26 में सुरक्षाकर्मियों पर अंधाधुंध गोलीबारी की। इसमें यह भी बताया गया है कि पुलिस के दो कर्मी मारे गए। पंजाब पुलिस के अनुसार, सोमवार को पीटीआई के प्रदर्शनकारियों के साथ झड़प के दौरान इस्लामाबाद के बाहरी इलाके में हकला इंटरचेंज पर पुलिस के एक कर्मी की मौत हो गई।आंतरिक मंत्री नकवी ने देर रात मीडिया से बातचीत में कहा कि सौ से अधिक सुरक्षाकर्मी घायल हो गए, उनमें से अधिकतर पुलिसकर्मी थे। उन्होंने कहा, प्रदर्शनकारियों द्वारा पथराव किए जाने के कारण पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गए, और उनके सिर में गहरी चोट आई। प्रदर्शनकारियों द्वारा रेंजर्स और पुलिसकर्मियों पर हमले की कड़ी निंदा करते हुए, प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने एक बयान में घटना में शामिल लोगों को चिन्हित करने और उन्हें न्याय दिलाना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

मौलिक स्वतंत्रता का सम्मान करें पाकिस्तान के अधिकारी : अमेरिका

वाशिंगटन। पाकिस्तान में हजारों लोगों द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की रिहाई के लिए रैली निकाले जाने पर उनके खिलाफ कार्रवाई को लेकर अमेरिका ने पाकिस्तान के अधिकारियों से मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता का आदर करने तथा देश के कानूनों के प्रति सम्मान सुनिश्चित करने का आह्वान किया। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के संस्थापक इमरान खान के आह्वान पर हजारों की संख्या में प्रदर्शनकारियों के सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी में प्रवेश करने के दौरान हुई झड़पों में कम से कम एक पुलिस कर्मी की मौत हो गई और कई घायल हो गए। पिछले वर्ष अगस्त से जेल में बंद 72 वर्षीय पूर्व प्रधानमंत्री ने 24 नवंबर को देशव्यापी विरोध प्रदर्शन के लिए अंतिम आह्वान किया था। यह आह्वान उन्होंने 13 नवंबर को किया था। खान ने कथित तौर पर जनादेश की चोरी, लोगों की अन्यायपूर्ण गिरफ्तारी और संविधान के 26वें संशोधन के पारित होने की निंदा की थी। संविधान के 26वें संशोधन पर उन्होंने कहा था कि इसने तानाशाही शासन को मजबूत करने का काम किया है।

भ्रष्टाचार-रोधी आयोग ने श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति से क्षमादान के मामले में पूछताछ की

कोलंबो। श्रीलंका में भ्रष्टाचार-रोधी आयोग ने हत्या के एक दोषी को पूर्व राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना द्वारा क्षमादान दिए जाने के मामले में मंगलवार को उनका बयान दर्ज किया। रिश्वतखोरी या भ्रष्टाचार की जांच करने वाले आयोग (सीआईएबीओसी) के अधिकारियों ने बताया कि सिरिसेना का बयान आयोग के कार्यालय में उपस्थित होने के बाद दर्ज किया गया।द्वीपीय राष्ट्र के 2015 से 2019 तक राष्ट्रपति रहे सिरिसेना ने 2019 में जूड श्रमंथा जयमहा को क्षमादान दिया था। श्रीलंका के उच्चतम न्यायालय ने जयमहा को 2005 में एक किशोर मित्र की हत्या के लिए दोषी ठहराया था।सिरिसेना ने 2019 में राष्ट्रपति चुनाव से पहले और उनके राष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने से महज कुछ दिन पहले जयमहा को क्षमादान दिया था।भ्रष्टाचार-रोधी आयोग, प्राप्त शिकायत के आधार पर, उनसे कथित धन लेनदेन के बारे में पूछताछ करना चाहता था, जिसके परिणामस्वरूप दोषी को क्षमादान दिया गया था।श्रीलंका के उच्चतम न्यायालय की तीन-सदस्ईय पीठ ने छह जून को जयमहा को राष्ट्रपति द्वारा क्षमादान देने के सिरिसेना के 2019 के फैसले को असंवैधानिक करार देते हुए पलट दिया था और पूर्व राष्ट्रपति को मामले में पीड़िता के माता-पिता और याचिकाकर्ता को 10 लाख श्रीलंकाई रुपए का मुआवजा देने का आदेश दिया था।

इंटरपोल ने साइबर अपराध पर शिकंजा कसा, अफ्रीका में 1,000 से अधिक संदिग्ध गिरफ्तार

डाकार (सेनेगल)। इंटरपोल ने साइबर अपराध पर लगाम लगाने के लिए दो महीने के अभियान के दौरान अफ्रीका में 1,006 संदिग्धों को गिरफ्तार किया। साइबर अपराधों के कारण हजारों लोग पीड़ित हुए, जिनमें कुछ मानव तस्करी के शिकार भी हुए तथा भारी वित्तीय क्षति हुई। वैश्विक पुलिस संगठन ने मंगलवार को यह जानकारी दी। एजेंसी ने एक बयान में कहा कि ऑपरेशन सेरेन्गेटी , अफ्रीकी संघ की पुलिस एजेंसी अफ्रीपोल के साथ एक संयुक्त अभियान है। इसमें कहा गया है कि यह अभियान दो सितंबर से 31 अक्टूबर तक 19 अफ्रीकी देशों में चलाया गया। इस अभियान के तहत रैनसमवेयर , डिजिटल जबरन वसूली और ऑनलाइन घोटालों में शामिल अपराधियों को निशाना बनाया गया। इंटरपोल के महासचिव वाल्डेसी उर्कीजा ने कहा, बहु-स्तरीय विपणन घोटालों से लेकर औद्योगिक पैमाने पर क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी तक, साइबर अपराध हमलों की बढ़ती संख्या गंभीर चिंता का विषय है। अफ्रीपोल के कार्यकारी निदेशक जलेल चेल्बा ने बयान में कहा, सेरेन्गेटी के माध्यम से, अफ्रीपोल ने अफ्रीकी संघ के सदस्य देशों में कानून प्रवर्तन के लिए समर्थन को काफी बढ़ाया है।

नए नाटो प्रमुख यूक्रेन का साथ देने के लिए इस संगठन के और आगे बढ़ने के पक्ष में हैं

एथेंस। उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के नए महासचिव जनरल मार्क रूटे ने मंगलवार को कहा कि इस गठबंधन को रूस के आक्रमण के खिलाफ लड़ाई में यूक्रेन का साथ देने के लिए और आगे बढ़ने की जरूरत है। रूटे ने रूस पर उत्तर कोरिया के हजारों सैनिकों को बुलाकर संघर्ष को खतरनाक ढंग से बढ़ाने का आरोप लगाया। यूनान की यात्रा पर आए रूटे ने कहा, यूक्रेन में अपने अवैध युद्ध को आगे बढ़ाने के लिए उत्तर कोरियाई हथियारों और सैनिकों, ईरानी ड्रोन और रूस अपने रक्षा उद्योग के लिए चीनी दोहरे उपयोग वाले सामानों का इस्तेमाल कर रहा है। उन्होंने कहा, यह युद्ध का एक खतरनाक विस्तार है और वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए एक चुनौती है। रूटे ने यहां यूनान के प्रधानमंत्री काइरियाकोस मित्सोताकिस से भेंट की और यूक्रेन को यूनानी समर्थन देने के लिए उन्हे धन्यवाद दिया, जिसमें हथियार और गोला-बारूद के साथ-साथ एफ-16 पायलटों और तकनीशियनों के लिए प्रशिक्षण भी शामिल है। रूटे नीदरलैंड के प्रधानमंत्री है। उन्होंने पिछले महीने नाटो प्रमुख का पद संभाला। रूटे ने कहा, यूक्रेन के प्रति हमारे समर्थन ने उसे लड़ाई में टिका रखा है, लेकिन संघर्ष की दिशा बदलने के लिए हमें और आगे बढ़ने की जरूरत है। यूक्रेन में चल रहे युद्ध तथा नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की चुनावी जीत के बाद आगामी अमेरिकी प्रशासन को लेकर अनिश्चितता के कारण यूरोप के नाटो सदस्य महीनों से रक्षा निवेश को बढ़ावा देने की योजनाओ पर चर्चा कर रहे है। सोमवार को फ्लोरिडा में ट्रंप से तथा अंकारा में तुर्किए के नेताओं के साथ भेंट के बाद रूटे एथेंस पहुंचे है। उन्होंने यूनान के विदेश मंत्री जॉर्ज गेरापेट्रिटिस और रक्षा मंत्री निकोस डेंडियास के साथ भी भेंटवार्ता की।

इफको के एमडी को इंटरनेशनल रोशडेल अवार्ड

नई दिल्ली। इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड इफको के प्रबंध निदेशक डॉ.उदय शंकर अवस्थी को प्रतिष्ठित रोशडेल पायनियर्स अवार्ड 2024 प्रदान किया गया है। डॉ. वर्गीस कुरियन के बाद यह पुरस्कार पाने वाले डॉ.अवस्थी दूसरे भारतीय हैं। डॉ. कुरियन को वर्ष 2001 में यह पुरस्कार प्रदान किया गया था। रोशडेल पायनियर्स अवार्ड इंटरनेशनल कोऑपरेटिव अलायंस दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। इस अवार्ड की शुरुआत वर्ष 2000 में हुई थी। इसका उद्देश्य एक व्यक्ति या विशेष परिस्थितियों में एक सहकारी संगठन को मान्यता देना है, जिसने नवीन और वित्तीय रूप से टिकाऊ सहकारी गतिविधियों में योगदान दिया है जिससे उनके सदस्यों को काफी लाभ हुआ है। केमिकल इंजीनियर डॉ. अवस्थी 1976 में इफको में नियुक्त हुए। उनके नेतृत्व में इस सहकारी संस्था ने अपनी उत्पादन क्षमता में 292 प्रतिशत और शुद्ध संपत्ति में 688 प्रतिशत की वृद्धि की। उनके नेतृत्व में इफको ने विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में कदम रखा है, अपने व्यवसाय में विविधता लाई है और भारत के किसानों के लिए सफलतापूर्वक नवाचार और स्वदेशी नैनो उर्वरक विकसित किया है। आईसीए के अध्यक्ष एरियल ग्वार्को ने भारत में पहली बार आयोजित हो रहे आईसीए के वैश्विक सहकारी सम्मेलन में एक विशेष समारोह के दौरान 25 को डॉण् अवस्थी को यह पुरस्कार प्रदान किया। इफ्को लिमिटेड आईसीए और केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय की साझेदारी में आईसीए महासभा और वैश्विक सहकारी सम्मेलन 2024 की मेजबानी कर रहा है। यह सम्मेलन नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित किया जा रहा है जो 30 नवंबरए 2024 को समाप्त होगा।पुरस्कार ग्रहण करने के बाद इफ्को के एमडी डॉण् उदय शंकर अवस्थी ने कहा कि मैं इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को पाकर बेहद सम्मानित महसूस कर रहा हूं।

दुनिया में बढ़ रहा विमानन क्षेत्र का कद

ग्लोबल । एयरलाइन अकासा एयर ने उद्योग जगत की पहली और अनूठी पेशकशों के ज़रिए विमानन के क्षेत्र का कायाकल्प करने का प्रयास किया है। अकासा एयर हमेशा अपने यात्रियों को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है और आराम सुविधा और ग्राहक संतुष्टि नए मानक स्थापित करती है। आज के युग में यात्रा के अर्थ के प्रति एक सकारात्मक और निर्णायक विजन के साथ अकासा एयर ने यह अनूठी पहल की है। आज इसका ओहदा एक अंतरराष्ट्रीय एयरलाइन का है और हमें अकासा के अनुभव और भारतीय आतिथ्य सत्कार को दुनिया के पटल पर रखने का गर्व और हर्ष दोनों है। अकासा एयर की समान अनुभूति एवं युवा शख्सियत, कर्मचारी,अनुकूल संस्कृतिए ग्राहक.सेवा दर्शन और तकनीक से लैस नजरिया जैसी खूबियां इसे लाखों ग्राहकों की पसंदीदा एयरलाइन बनाते हैं। अपनी शुरुआत के बाद सेए अकासा एयर ने उद्योग के अब तक के पहले और ग्राहक अनुकूल पेशकशों द्वारा भारत में उड़ान को नए ढंग से परिभषित करने का प्रयास किया है। फ़्लाइट में लजीज भोजन से लेकर पेट.फ्रेंडली यात्रा जैसी अकासा एयर की पहल सर्व समावेशिता और सेवा उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। बेलसन कॉउटिन्होए को.फाउंडर और चीफमार्केटिंग एवं एक्सपीरियंस ऑफिसर अकासा एयर ने कहा अकासा एयर में उच्चकोटि की सेवा हमारे कल्चर का महत्वपूर्ण स्तंभ और डीएनए का हिस्सा है। दो साल पहले हमने एक भरोसेमंद अनुभव का वादा किया था और हमें खुशी है कि अकासा की टीम ने अपने सुखद एवं शानदार उड़ान अनुभव से इस वादे को निभाया है। अकासा एयर में हमारे हर काम के केन्द्र में हमारे ग्राहक होते हैं और हम अकासा अनुभव का मजबूत आधार तैयार करने के लिए ग्राहकों के फीडबैक का निरंतर उपयोग करते हैं।

चीनी लड़ाकू विमानों ने संवेदनशील ताइवान जलडमरूमध्य में अमेरिकी विमान का पीछा किया

ताइपे (ताइवान)। चीन ने मंगलवार को संवेदनशील ताइवान जलडमरूमध्य से गुजर रहे अमेरिकी नौसेना के विमान की निगरानी के लिए सैन्य विमान और जहाज तैनात किए। चीन की सेना ने यह जानकारी दी। स्वशासित ताइवान को लेकर अमेरिका और चीन के बीच अक्सर तनातनी देखने को मिलती है। अमेरिकी नौसेना के 7वें बेड़े ने एक बयान में कहा कि पी-8ए पोसाइडन समुद्री गश्ती विमान ने अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार जलडमरूमध्य के अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र से उड़ान भरी। इसमें कहा गया कि यह स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत के प्रति अमेरिका की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। अमेरिका ताइवान का सबसे महत्वपूर्ण समर्थक और हथियार प्रदाता है। अमेरिकी सैन्य जहाज और विमान नियमित रूप से चीन को स्वशासित ताइवान से अलग करने वाले जलमार्ग से गुजरते है। बीजिंग इस पूर्वी एशियाई द्वीप को अपना क्षेत्र होने का दावा करता है। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की पूर्वी थिएटर कमान (वायुसेना) के प्रवक्ता कर्नल काओ जुन ने एक बयान में अमेरिकी मिशन की आलोचना की और कहा कि इससे क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता को खतरा पैदा हो गया।

स्वच्छ जलवायु के लिए लंदन, दिल्ली सर्वोत्तम उपायों को कर सकते हैं साझा : ब्रिटेन की मंत्री

लंदन। खराब वायु गुणवत्ता से जूझ रही नई दिल्ली का हाल में दौरा करने वाली ब्रिटेन की हिंद-प्रशांत मामलों की मंत्री कैथरीन वेस्ट ने स्वच्छ जलवायु की ओर बढ़ने में दोनों देशों के बीच सर्वोत्तम उपायों को साझा किए जाने पर जोर दिया है। वह जलवायु, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास जैसे पहलुओं पर चर्चा के लिए पिछले सप्ताह भारत की यात्रा पर थी। उन्होंने (ब्रिटेन के) प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर और नरेन्द्र मोदी द्वारा नए वर्ष में मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) वार्ता फिर से शुरू करने की घोषणा का स्वागत किया। वेस्ट ने सोमवार को लंदन मं दूसरे वार्षिक हिंद-प्रशांत सम्मेलन में अपने मुख्य संबोधन में कहा कि दुनिया की सर्वाधिक आबादी वाले देश के रूप में, भारत के पास जलवायु और सतत विकास पर प्रगति को आगे बढ़ाने का एक अद्वितीय अवसर है। उन्होंने कहा, जब मै पिछले सप्ताह भारत गई थी, तो सभी ने आपसी सहयोग और वैश्विक समस्याओं से मिलकर निपटने के प्रति उत्साह दिखाया था।

रूस : पत्रकार को चार साल के कारावास की सजा सुनाई

मॉस्को। रूस की एक अदालत ने मंगलवार को एक पत्रकार को विदेशी संगठन के साथ सहयोग करने का दोषी ठहराते हुए चार साल के कारावास की सजा सुनाई। सुदूर पूर्वी रूस में जबाइकल्स्की क्षेत्रीय न्यायालय ने कहा कि 24 वर्षीय नीका नोवाक को एक विदेशी मीडिया संस्था के प्रतिनिधि के साथ सहयोग करने का दोषी पाया गया है, जिसके निर्देश पर, आर्थिक लाभ के लिए, पत्रकार ने रूसी सशस्त्र बलों और सरकारी एजेंसियो को बदनाम करने वाली झूठी सामग्री तैयार करने में सहायता की। अदालत ने कहा कि नोवाक के कृत्यों का उद्देश्य रूस की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाना और देश को अस्थिर करना था। मानवाधिकार संगठनों ने नोवाक को राजनीतिक कैदी बताया है।

पूर्वी इंग्लैंड में सैन्य ठिकानों के ऊपर कुछ ड्रोन उड़ते देखे गए : अमेरिकी सेना

लंदन। अमेरिकी वायु सेना का कहना है कि पूर्वी इंग्लैंड में उन तीन सैन्य ठिकानों के पास कई छोटे ड्रोन देखे गए है, जिनका इस्तेमाल अमेरिकी सेना करती है। मंगलवार की घटना आरएएफ लैकेन्हीथ, आरएएफ मिल्डेनहॉल और आरएएफ फेल्टवेल के पास ड्रोन देखे जाने के कुछ ही दिनों बाद हुई है। अमेरिकी वायु सेना-यूरोप ने एक बयान में कहा कि तीनों सैन्य ठिकानो के आसपास और ऊपर ड्रोन देखे जाने के बाद उन पर सक्रिय रूप से नजर रखी गई। वायुसेना ने अभी तक यह नही बताया है कि इस घुसपैठ के पीछे कौन है। लैकेन्हीथ को अमेरिकी वायु सेना यूरोप में अपनी लड़ाकू क्षमता की नीव के रूप मे वर्णित करती है। मिल्डेनहॉल में 100वी एयर रिफ्यूलिंग विंग है, जबकि फेल्टवेल सैन्य ठिकाना आवास, स्कूलों और अन्य सेवाओं का केंद्र है।

पाकिस्तान और बेलारूस सहयोग करने को सहमत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान और बेलारूस ने मंगलवार को कृषि, खान एवं खनिज, सूचना प्रौद्योगिकी और भारी मशीनरी विनिर्माण सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करने के लिए एक मसौदे को अंतिम रूप देने पर सहमति जताई। यहां एक आधिकारिक विज्ञप्ति के मुताबिक इस्लामाबाद मे प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको के बीच बैठक के दौरान यह सहमति बनी।बाद में संयुक्त प्रेस वार्ता मे प्रधानमंत्री शरीफ ने कहा, दोनो पक्ष इन चर्चाओ को अंतिम रूप देने और उन्हे व्यावहारिक कदमों में बदलने के लिए दो सप्ताह मे फिर मिलेंगे। उन्होने कहा कि इसके बाद अगले साल फरवरी मे समझौतो पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।बेलारूस के राष्ट्रपति लुकाशेंको ने अपने संबोधन मे कहा कि पाकिस्तान उनके लिए कभी भी दूर नही रहा है, बल्कि यह एक बहुत करीबी और मित्रवत देश है। उन्होने कहा, हम पाकिस्तान के साथ अपनी प्रौद्योगिकी साझा करने के लिए तैयार है। इससे पहले, प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता के दौरान दोनो पक्षो ने द्विपक्षीय संबंधो के पूर्ण आयाम के साथ-साथ महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और वैश्विक घटनाक्रमो पर चर्चा की।राष्ट्रपति लुकाशेंको सोमवार को तीन दिवसीय यात्रा पर इस्लामाबाद पहुंचे।

भारत की प्रस्तावित आधिकारिक यात्रा के बाद चीन जाएंगे दिसानायके : अधिकारी

कोलंबो। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके भारत की अपनी प्रस्तावित आधिकारिक यात्रा के बाद चीन का दौरा करने की योजना बना रहे है। कैबिनेट प्रवक्ता नलिंदा जयतिस्सा ने मंगलवार को यह जानकारी दी। जयतिस्सा ने बताया कि कोलंबो मे चीन के राजदूत ने दिसानायके को आधिकारिक निमंत्रण सौपा है। उन्होने कहा कि दिसानायके अपनी पहली आधिकारिक विदेश यात्रा के तहत दिसंबर के तीसरे हफ्ते मे भारत जाएंगे, लेकिन इसकी तिथि अभी तय नही की गई है।

इजराइली लड़ाकू विमानों ने मध्य बेरूत पर बमबारी की

भाषा। बेरूत

इजराइली लड़ाकू विमानों ने मंगलवार को मध्य बेरूत और शहर के दक्षिणी उपनगरों पर हमला किया, जिससे लेबनान की राजधानी पर धुएं का गुबार छा गया। यह हमला ऐसे समय हुआ है, जब इजराइल नेतृत्व हिजबुल्ला के साथ एक साल से अधिक समय से जारी संघर्ष को समाप्त करने के उद्देश्य से अमेरिका की मध्यस्थता वाले युद्धविराम को स्वीकार करने या न करने पर निर्णय करने वाला है। इजराइली सेना ने बेरूत के उपनगरों में 20 और इमारतों को भी खाली करने की चेतावनी जारी की, इससे पहले कि उन पर भी हमला हो। यह इसका संकेत है कि इजराइल किसी भी युद्धविराम के प्रभावी होने से पहले हिजबुल्ला को अंतिम समय तक सजा देने का लक्ष्य बना रहा है। इजराइली जमीनी सैनिक संघर्ष में पहली बार लेबनान की लिटानी नदी के कुछ हिस्सों में भी पहुंचे, जो उभरते युद्धविराम का केंद्र बिंदु है। युद्धविराम अब भी पक्का नहीं है, लेकिन मंगलवार दोपहर को होने वाली इजराइल की सुरक्षा कैबिनेट की बैठक में अमेरिका समर्थित प्रस्ताव को मंजूरी मिलने की उम्मीद थी। लेबनानी अधिकारियों ने कहा है कि हिजबुल्ला भी इस समझौते का समर्थन करता है और अगर सभी पक्षों द्वारा इसे मंजूरी दे दी जाती है, तो यह समझौता इजराइल-हिजबुल्ला युद्ध को समाप्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा, जिसने पूरे क्षेत्र में तनाव बढ़ा दिया है। इस युद्ध ने इसके साथ ही इजराइल और हिजबुल्ला के संरक्षक ईरान के बीच और व्यापक संघर्ष की आशंकाओं को भी बढ़ा दिया है। इस समझौते में लड़ाई को दो महीने के लिए रोकने का आह्वान किया गया है। इसके तहत हिजबुल्ला को दक्षिणी लेबनान के एक बड़े हिस्से में अपनी सशस्त्र उपस्थिति समाप्त करनी होगी, जबकि इजराइली सैनिक सीमा के अपने हिस्से में लौट जाएंगे। हजारों लेबनानी सैनिक और संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिक दक्षिण में तैनात होंगे और अमेरिका के नेतृत्व वाला एक अंतरराष्ट्रीय पैनल सभी पक्षों के अनुपालन की निगरानी करेगा। हालांकि, इसके क्रियान्वयन पर अब भी सवालिया निशान लगा हुआ है। इजराइल ने मांग की है कि यदि हिजबुल्ला अपने दायित्वों का उल्लंघन करता है तो उसे कार्वाई करने का अधिकार हो। लेबनानी अधिकारियों ने प्रस्ताव में इसका उल्लेख करने से इनकार कर दिया है।

इजराइल के पास हिजबुल्लाह के साथ युद्ध विराम से इनकार करने का कोई बहाना नहीं: ईयू की शीर्ष राजनयिक

फ्यूजी (इटली)। यूरोपीय संघ के शीर्ष राजनयिक ने मंगलवार को कहा कि लेबनानी उग्रवादी समूह हिजबुल्लाह के साथ युद्ध विराम को अस्वीकार करने के लिए इजराइल के पास कोई बहाना नही है। उन्होंने कहा कि अमेरिका-फ्रांस की मध्यस्थता वाले समझौते मे उसकी सभी सुरक्षा चिंताओं का समाधान कर दिया गया है।यूरोपीय संघ के निवर्तमान विदेश नीति प्रमुख जोसेफ बोरेल ने सरकार मे चरमपंथियो पर अंकुश लगाने के लिए इजराइल पर दबाव बढ़ाने का आह्वान किया, जो समझौते को स्वीकार करने से इनकार कर रहे हैं। इटली में ग्रुप ऑफ सेवेन (जी7) की बैठक के अवसर पर बोरेल ने चेतावनी दी कि यदि युद्ध विराम लागू नही किया गया तो लेबनान बिखर जाएगा। इजराइली अधिकारियो ने कहा कि प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की सुरक्षा कैबिनेट मंगलवार को प्रस्तावित युद्ध विराम पर चर्चा करने के लिए बुलाई गई थी। जो मुद्दे बचे है उनमें इजराइली की यह मांग भी है कि अगर हिजबुल्लाह हो रहे समझौते के तहत अपने दायित्वो का उल्लंघन करता है तो कार्वाई करने का अधिकार सुरक्षित रखा जाए।बोरेल ने कहा कि प्रस्तावित समझौते के तहत, अमेरिका युद्धविराम कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करेगा, जिसमें लेबनान के अनुरोध पर फ्रांस भी भाग लेगा। अमेरिका और फ्रांस द्वारा प्रस्तावित समझौते पर इजराइल की सभी सुरक्षा चिंताओ का समाधान कर दिया गया है।

जापानः नए छोटे रॉकेट के इंजन में परीक्षण के दौरान दूसरी बार धमाका

तोक्यो। जापान के एक प्रमुख छोटे नए रॉकेट के इंजन में मंगलवार को दहन परीक्षण के दौरान आग लग गई। हालांकि आग लगने से इसके बाहरी हिस्से में कोई क्षति नहीं पहुंची। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। एप्सिलॉन एस रॉकेट के लगातार दूसरी बार विफल होने से इसकी प्रगति को लेकर चिंता गहरा गई है क्योंकि इसे अगले साल लांच किए जाने की उम्मीद की जा रही थी। कैबिनेट के मुख्य सचिव योशिमासा हयाशी ने पत्रकारों को बताया कि यह परीक्षण दक्षिण-पश्चिमी जापान में स्थित तानेगाशिमा अंतरिक्ष केंद्र के प्रतिबंधित क्षेत्र के अंदर किया गया था और जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (जेएएक्सए) इसकी जांच कर रही है। जेएएक्सए के अनुसार, आग लगने के बाद धमाका हुआ और सफेद धुंए का गुबार उठने लगा। मंगलवार की इस ताजा विफलता से पहले साल परीक्षण के दौरान भी इसी एप्सिलॉन एस इंजन में धमाका हुआ था। एजेंसी ने कहा है कि पिछले वर्ष का हुआ धमाका इंजन के दहन प्रणाली को हुए नुकसान से संबंधित था और जेएएक्सए ने आवश्यक कदम उठाए हैं।

अडानी पर लगे आरोप ट्रंप के राष्ट्रपति बनने पर दोषपूर्ण पाए गए, तो वापस लिए जा सकते हैं

भाषा। न्यूयॉर्क

जाने माने भारतीय-अमेरिकी वकील रवि बत्रा ने कहा है कि अरबपति गौतम अदाणी पर लगे आरोपों को डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिका के राष्ट्रपति बनने के बाद यदि बेबुनियाद या दोषपूर्ण पाया जाता है तो भारतीय कारोबारी के खिलाफ 26.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रिश्वत मामले को वापस लिए जाने की संभावना बरकरार है। अटॉर्नी रवि बत्रा ने पीटीआई से कहा कि हर नए राष्ट्रपति के पास एक नई टीम होती है। उन्होंने कहा कि ट्रंप अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित होने पर किसी भी ऐसे अभियोजन को निष्प्रभावी कर देंगे जो सद्‌भावना के विपरीत विरोधी को निशाना बनाने के लिए कानून का सहारा लेने पर आधारित है। बत्रा ने कहा, कानून का अपने विरोधियों को निशाना बनाने के लिए चुनिंदा रूप से इस्तेमाल करना हमारे संघीय संविधान द्वारा दी गई कानून के समान संरक्षण की गारंटी के लक्ष्य को स्वाभाविक रूप से नकारता है। उन्होंने कहा, यह एक ऐसा मुद्दा है जिसे गौतम अदाणी अपनी सरकार के साथ उठा सकते हैं और उससे अनुरोध कर सकते हैं कि वह इसे आगामी ट्रंप प्रशासन के साथ द्विपक्षीय रूप से उठाएं। ट्रंप 20 जनवरी, 2025 को 47वें अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे। मंत्रालय और एसईसी (प्रतिभूति और विनिमय आयोग) आपराधिक और दीवानी मामलों को वापस ले सकते हैं।

द्रोह के आरोप में गिरफ्तार हिंदू नेता को जमानत देने से बांग्लादेश की अदालत का इनकार

ढाका। बांग्लादेश की एक अदालत ने मंगलवार को प्रमुख हिंदू नेता चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी को जमानत देने से इनकार कर दिया जिन्हें राजद्रोह के आरोपों में गिरफ्तार किया गया है। ढाका और चटगांव समेत अनेक स्थानों पर हिंदू समुदाय के सदस्यों के विरोध प्रदर्शनों के बीच ब्रह्मचारी को जेल भेज दिया गया। बांग्लादेश पुलिस ने हिंदू संगठन सम्मिलित सनातनी जोत के नेता चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी को ढाका में हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे से सोमवार को गिरफ्तार किया था, जब वह चटगांव जा रहे थे। उन्हें चटगांव लाया गया।अधिकारियों ने कहा कि

दास को कड़ी सुरक्षा के बीच अदालत ले जाया गया, जहां वकीलों सहित उनके कई समर्थक उनकी गिरफ्तारी के विरोध में नारे लगा रहे थे। चश्मदीदों के अनुसार अदालत परिसर में जमा समर्थकों का दास ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया। दास के समर्थक नारे लगा रहे थे। दास ने उनसे धार्मिक नारे नहीं लगाने की अपील की। दास के वकीलों ने सुनवाई के दौरान चटगांव के छठे मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट काजी शरीफुल इस्लाम से अनुरोध किया कि उनके लिए भी गिरफ्तारी वारंट जारी किए जाएं। न्यायाधीश ने कहा, मैं उनके प्रति आपकी भावनाओं का सम्मान करता हूं। इसके बाद इस्लाम ने कुछ देर के लिए कार्यवाही स्थगित कर दी। कार्यवाही फिर शुरू होने पर उन्होंने वकीलों से जमानत अर्जी पेश करने को कहा। इस दौरान दास ने एक बयान भी दिया। दलीलें समाप्त होने के बाद इस्लाम ने दास की जमानत याचिका खारिज कर दी।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने मधुमेह रोकथाम के लिए कॉल टू एक्शन अंगीकार किया

कोलंबो (श्रीलंका)। दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में मधुमेह की रोकथाम और नियंत्रण उपायों को मजबूत करने के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञों एवं अधिकारियों ने कोलंबो कॉल टू एक्शन अंगीकार किया है। कॉल टू एक्शन (कार्वाई का आह्वान) विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के ग्लोबल डायबिटीज कॉम्पैक्ट के प्रमुख कारकों- एकजुट करने, एकीकृत करने, नवाचार, उपचार, पता लगाने और शिक्षित करने के प्रयासों में तेजी लाने के लिए सदस्य देशों की उत्प्रेरक कार्वाइयों और सामूहिक प्रतिबद्धताओं को रेखांकित करता है। डब्ल्यूएचओ के एक बयान में कहा गया है कि इसका उद्देश्य मधुमेह के जोखिम को कम करना और गुणवत्तापूर्ण उपचार एवं देखभाल तक पहुंच सुनिश्चित करना है। यह मोटापे, अस्वास्थ्यकर आहार और शारीरिक निष्क्रियता से टाइप-2 मधुमेह की रोकथाम का भी समर्थन करता है। बयान में कहा गया है कि दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र में हर साल मधुमेह से संबंधित 4,82,000 से अधिक मौतें होती हैं। मधुमेह और इसकी जटिलताएं-दृष्टीहीनता, गुर्दे में गड़बड़ी, दिल का दौरा, स्ट्रोक और निचले अंग का विच्छेदन- मधुमेह रोगियों, उनके परिवारों, स्वास्थ्य प्रणालियोंऔर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए अनगिनत कठिनाइयों और आर्थिक नुकसान का कारण बनती हैं। डब्ल्यूएचओ दक्षिण-पूर्व एशिया की क्षेत्रीय निदेशक साइमा वाजेद ने विश्व मधुमेह दिवस 2024 के दो दिवसीय क्षेत्रीय स्मरणोत्सव को संबोधित करते हुए कहा, मधुमेह देखभाल तक समय पर पहुंच सुनिश्चित करके जीवन को बचाया जा सकता है। देखभाल सेवाओं को न्यायसंगत, व्यापक, सुलभ और सस्ता होना चाहिए। डब्ल्यूएचओ दक्षिण-पूर्व एशिया, पश्चिमी प्रशांत और अफ्रीका क्षेत्रों के स्वास्थ्य मंत्रालयों के प्रतिनिधियों, शैक्षणिक संस्थानों, पेशेवर निकायों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों और विकास भागीदारों सहित 100 से अधिक विशेषज्ञों और अधिकारियों ने 21-22 नवंबर को स्वास्थ्य मंत्रालय, श्रीलंका सरकार और डब्ल्यूएचओ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

एप से ले सकते हैं वेलनेस सेवाएं

टाटा एआईए ने घोषणा की है कि उसके ग्राहक ऐप डाउनलोड ने 1 मिलियन 10 लाख का स्तर पार कर लिया है। यह उपलब्धिए टाटा एआई के ग्राहकों के अपने डिजिटल समाधानों पर बढ़ते भरोसे और निर्भरता का एक और प्रमाण है जिसमें मोबाइल ऐप उपभोक्ता पोर्टल, व्हाट्सएप एनेबल्ड सेवा आदि शामिल हैं। ये समाधान टाटा एआईए उपभोक्ता को ब्रांड के साथ अपने जीवन बीमा यात्रा को प्रबंधित करने के सुविधाजनक और सहज तरीकों का अनुभव करने के लिए सशक्त बनाने वाले डू.इट.योरसेल्फश् के विचार को प्रोत्साहित करते हैं। इस अत्याधुनिक ऐप के साथए उपभोक्ता किसी भी समय कहीं से भी अपनी बीमा पॉलिसियों का प्रबंधन कर सकते हैं। ऐप 12 से ज़्यादा स्वास्थ्य और वेलनेस सेवाएं प्रदान करता है जो उपयोगकर्ताओं के बीच समग्र वेलनेस को बढ़ावा देता है। इनमें आउटपेशेंट परामर्श, डायग्नोस्टिक्स, वर्चुअल,ऑनलाइन परामर्श, आपातकालीन देखभाल, भावनात्मक कल्याण, पोषण प्रबंधन आदि शामिल हैं। कार्यकारी उपाध्यक्ष और मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी सौम्य घोष ने कहा कि हम अपनी डिजिटल पेशकश में लगातार नवोन्मेष के साथ इनका विस्तार कर अपने ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

लाल सागर में पर्यटकों की नौका डूबने से 16 लोग लापताः मिस्र के अधिकारी

काहिरा। लाल सागर में पर्यटकों की एक नौका के डूबने से कम से कम 16 लोग लापता हो गए हैं। मिस्र के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। लाल सागर क्षेत्र के गवर्नर अम्र हनाफी ने बताया कि बचावकर्मियों ने तटीय शहर मार्सा आलम के दक्षिण में नौका से 28 लोगों को बचाया तथा कुछ लोगों को चिकित्सकीय उपचार के लिए हवाई मार्ग से ले जाया गया। फेसबुक पर लाल सागर गवर्नरेट की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार, हनाफी ने उस स्थान का दौरा किया जहां नौका डूबी थी। हनाफी ने बताया कि नौका पर कुल 44 लोग सवार थे, जिनमें चालक दल के सदस्यों समेत मिस्र के 13 लोग शामिल थे। नौका पर अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, पोलैंड, बेल्जियम, स्विट्जरलैंड, फिनलैंड, चीन, स्लोवाकिया, स्पेन और आयरलैंड के 31 विदेशी नागरिक सवार थे। सी स्टोरी नामक इस नौका में कोई तकनीकी समस्या नहीं थी और उसने यात्रा से पहले सभी आवश्यक परमिट प्राप्त गवर्नरेट द्वारा दी गई ताजा जानकारी के अनुसार, नौका के चालक दल और पर्यटकों के बयानों के आधार पर प्रारंभिक रिपोर्ट में कहा गया है कि एक बड़ी लहर नौका से टकराई जिससे वह पलट गई।

यूनान में समोस तट के समीप समुद्र में एक नौका डूबी, छह बच्चों एवं दो महिलाओं की मौत

समोस (यूनान)। यूनान के समोस द्वीप से सटे समुद्र में प्रवासियों को ला रही एक नौका के डूब जाने से छह बच्चों समेत आठ लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। तटरक्षक बल ने बताया कि एक अन्य द्वीप पर एक अलग दुर्घटना में, 27 प्रवासियों के एक छोटी नाव में चढ़ने के दौरान एक बुजुर्ग व्यक्ति की मौत हो गई। किसी के लापता होने की सूचना नहीं है। तटरक्षक बल ने बताया कि पहली दुर्घटना में बाल -बाल बच गए 36 लोग समोस में एक तट पर पाए गए जबकि तीन अन्य को पहले ही बचा लिया गया था। उसके अनुसार यह तुरंत स्पष्ट नहीं हो पाया कि क्या कोई और अब भी लापता है। नाव पर सवार लोगों की राष्ट्रीयता का पता नहीं चल पाया है। तटरक्षक बल ने कहा कि एक गश्ती जहाज, एक जीवनरक्षक नौका, एक नौसेना जहाज, एक हेलीकॉप्टर और अन्य बचावकर्मी संभावित रूप से लापता लोगों की तलाश करने में जुटे हैं क्योंकि जो लोग बच गए हैं, वे बता नहीं पा रहे हैं कि नौका में कुल कितने लोग सवार थे।

दूसरा टेस्टः क्या रोहित मध्यक्रम में बल्लेबाजी करेंगे

राहुल से पारी का आगाज करना जारी रखेंगे!

भाषा। नई दिल्ली

नियमित कप्तान रोहित शर्मा की एडीलेड में अगले टेस्ट में भारतीय टीम में वापसी होगी लिहाजा इससे पहले कैनबरा में 30 नवंबर से होने वाले अभ्यास मैच में यह देखना दिलचस्प होगा कि वह खुद पारी का आगाज करते हैं या लोकेश राहुल से कराते हैं। रोहित या राहुल में किसी का तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी करना इस पर भी निर्भर करेगा कि शुभमन गिल फिट होते हैं या नहीं। गिल अगर मैच के लिए फिट नहीं हुए तो राहुल या रोहित में कोई इस मैच में तीसरे क्रम पर खेलेगा। भारतीय क्रिकेट जगत में हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि इस दौरे पर रोहित अगर मध्यक्रम (पांचवें या छठे क्रम पर) में बल्लेबाजी करें तो यह टीम के लिए ज्यादा कारगर होगा। पर्थ में पहले टेस्ट में रोहित की अनुपस्थिति के कारण राहुल का इस्तेमाल एक अस्थाई सलामी बल्लेबाज के तौर पर हुआ था। वह हालांकि ऑप्टस स्टेडियम में दोनों पारियों में 26 और 77 रन बनाकर वह सभी भारतीय बल्लेबाजों में तकनीकी रूप से सबसे मजबूत दिखे। इस मैच से पहले उन्होंने एमसीजी में भारत ए के लिए भी एक मैच में सलामी बल्लेबाजी की भूमिका निभाई थी। पिछले पांच साल से टेस्ट में पारी का आगाज कर रहे रोहित अपनी सर्वश्रेष्ठ लय में नहीं है। भारत में हाल ही खेले गए पांच टेस्ट मैचों में उनका प्रदर्शन उत्साहजनक नहीं रहा था। यह सभी मैच हालांकि बल्लेबाजी के लिए मुश्किल पिचों पर खेले गए थे। गिल को वाका में अभ्यास मैच के दौरान अंगुली में हेयरलाइन फ्रैक्चर का सामना करना पड़ा था और वह शुरुआती टेस्ट मैच से बाहर हो गए थे। उन्होंने अभी तब नेट सत्र में बल्लेबाजी अभ्यास शुरू नहीं की है। वह अगर मैच के लिए फिट होते है तो ध्रुव जुरेल को एकादश से बाहर होना पड़ेगा। इस मैच में यह भी देखना होगा कि क्या टीम प्रबंधन स्पिन गेंदबाजी विभाग में कोई बदलाव करती है या नही। पर्थ में रविचंद्रन अश्विन और रविंद्र जडेजा जैसे अनुभवी स्पिन गेंदबाजों की जगह वाशिंगटन सुंदर को खेलने का मौका मिला था। अश्विन ने 2021 में एडीलेड में गुलाबी गेंद से खेले गए टेस्ट की पहली पारी में 45 रन पर चार विकेट लिए थे। इसमें शानदार गेंद पर स्टीव स्मिथ का विकेट भी शामिल था। मौजूदा परिस्थितियों को देखे में एडीलेड में भी पिच से स्पिनरों के लिए ज्यादा मदद नहीं होगी। जडेजा को विदेशों में बेहतर बल्लेबाजी के दम पर अश्विन के ऊपर तरजीह मिलती रही है लेकिन वाशिंगटन को तकनीकी तौर पर उनसे बेहतर माना जाता है। इस बाएं हाथ के बल्लेबाज ने पर्थ में विराट कोहली के साथ 89 रन की साझेदारी कर टीम की बढ़त को 500 से अधिक तक पहुंचाने में अहम योगदान दिया था। एडीलेड टेस्ट में भारतीय टीम को एकादश तय करने से ज्यादा ध्यान बल्लेबाजी क्रम तय करने पर देना होगा।

निजी आपात स्थिति के कारण स्वदेश लौटे गंभीर, एडीलेड में टीम से जुड़ेंगे

पर्थ। भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर निजी आपात स्थिति के कारण स्वदेश अपने परिवार के पास लौट आए है और छह दिसंबर से एडीलेड मे होने वाले गुलाबी गेंद के टेस्ट से पहले उनके टीम से जुड़ने की संभावना नही है। गंभीर कैनबरा मे 30 नवंबर से होने वाले दो दिवसीय दिन रात के अभ्यास मैच मे भी नही होगे। बोर्ड के एक अधिकारी ने बताया , वह मंगलवार की सुबह भारत के लिए रवाना हो गए। यह एक निजी इमरजेंसी थी। वह एडीलेड में दूसरे टेस्ट से पूर्व लौट आएंगे। भारतीय टीम 27 नवंबर को कैनबरा रवाना होगा जहां पूरी टीम आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बानीस द्वारा उनके सम्मान मे दिए जाने वाले समारोह में भाग लेगी। दो दिवसीय मैच दिन रात के दूसरे टेस्ट की तैयारी के लिए काफी अहम है। इसके लिए गुलाबी कूकाबूरा गेंद का इस्तेमाल होगा। प्रधानमंत्री एकादश की कप्तानी हरफनमौला जैक एडवर्डस करेंगे। टीम मे कई युवा खिलाड़ियों के साथ स्कॉट बोलैंड और मैथ्यू रेनशॉ जैसे अनुभवी खिलाड़ी भी है।मैच के नियम दोनो टीमें तय करेंगे और ऐसी उम्मीद है कि सभी को बल्लेबाजी और गेंदबाजी का मौका मिलेगा क्योकि इस मैच को आधिकारिक दर्जा हासिल नही है।

मुझे लगा कि सूर्यवंशी को निखरने के लिए रॉयल्स में अच्छा माहौल मिलेगा : द्रविड़

जेद्दा। राजस्थान रॉयल्स के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ का मानना है कि इंडियन प्रीमियर लीग के आगामी सत्र मे उनकी टीम 13 वर्ष के वैभव रघुवंशी को निखरने के लिए अच्छा माहौल दे सकती है। बिहार के समस्तीपुर जिले के आठवी कक्षा के छात्र सूर्यवंशी को रॉयल्स ने एक करोड़ 10 लाख रूपए मे खरीदा और वह आईपीएल करार पाने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बने। द्रविड़ ने आईपीएल द्वारा जारी वीडियो मे कहा , मुझे लगता है कि उसमे अच्छा कौशल है और हमें लगा कि उसके विकास के लिए हम अच्छा माहौल दे सकते है। वह हमारे ट्रायल के लिए आया था और उसे देखकर हमे बहुत खुशी हुई। नीलामी मे सूर्यवंशी का बेसप्राइज 30 लाख रूपए था और दिल्ली कैपिटल्स ने पहली बोली लगाई। राजस्थान ने दिल्ली को पछाड़कर इस खिलाड़ी को खरीदा। सूर्यवंशी ने हाल ही मे चेन्नई मे आस्ट्रेलिया अंडर 19 टीम के खिलाफ भारत अंडर 19 टीम के लिए युवा टेस्ट मे शतक जमाया था और वह यह श्रेय हासिल करने वाले सबसे युवा खिलाड़ी भी बने। सूर्यवंशी ने उस मैच मे 62 गेंद मे 104 रन बनाए थे। उन्होंने राजस्थान के खिलाफ सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी मे शनिवार को बिहार के लिए टी20 क्रिकेट मे पदार्पण करके छह गेंद में 13 रन बनाए। जूनियर सर्किट पर चर्चा मे रहे सूर्यवंशी ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट मे कोई बड़ी पारी नही खेली है। उन्होंने पांच मैचों मे 10 की औसत से रन बनाए है।

चैंपियन्स ट्रॉफी कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए 29 को बैठक करेगा आईसीसी

भाषा। दुबई

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) का बोर्ड अगले साल फरवरी-मार्च में पाकिस्तान में होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी के कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए 29 नवंबर को वर्चुअल (ऑनलाइन) बैठक करेगा। टूर्नामेंट का कार्यक्रम घोषित करने में काफी विलंब हो चुका है। देरी का कारण भारत द्वारा दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण संबंधों को देखते हुए पाकिस्तान में खेलने से इनकार करना है। भारत ने 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों के बाद से पाकिस्तान का दौरा नहीं किया है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) चाहता है कि टूर्नामेंट हाइब्रिड मॉडल में खेला जाए जिसमें भारत के मुकाबले किसी तीसरे देश में आयोजित किए जाएं। भारत की पसंद यूएई है। इस पर अब तक पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने सहमति नहीं जताई है। आईसीसी के एक प्रवक्ता ने मंगलवार को पीटीआई को बताया, आईसीसी बोर्ड चैंपियंस ट्रॉफी के कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए 29 नवंबर को बैठक करेगा। यह महत्वपूर्ण वर्चुअल बैठक बीसीसीआई सचिव जय शाह के एक दिसंबर को आईसीसी अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने से दो दिन पहले हो रही है। वह और बोर्ड के अन्य सदस्य नए पदाधिकारियों के कार्यभार संभालने से पहले मामले को सुलझाने के इच्छुक होंगे। कार्यक्रम और स्थल को लेकर गतिरोध नहीं टूटने के कारण आईसीसी के अध्यक्ष ग्रेग बार्क्ले और सीईओ ज्योफ अलार्डिस सहित मौजूदा पदाधिकारियों पर सवाल उठ रहे हैं कि उन्होंने आखिर क्यों इस मुद्दे का पहले हल नहीं निकाला और इसे अंतिम समय के लिए छोड़ दिया। भारत सरकार ने कड़ा रुख अपनाते हुए यथास्थिति बरकरार रखी है जिससे चैंपियन्स ट्रॉफी का आयोजन हाइब्रिड मॉडल के तहत कराना ही सबसे व्यावहारिक विकल्प नजर आ रहा है। ऐसी स्थिति में भारत के मुकाबले पाकिस्तान के बाहर होंगे। सूत्रों ने कहा है कि पीसीबी अगर हाइब्रिड मॉडल पर राजी होता है तो उसे सात करोड़ डॉलर की मेजबानी फीस के अलावा वित्तीय प्रोत्साहन की पेशकश की जाएगी।

अयूब के पहले वनडे शतक से पाकिस्तान ने जिंबाब्वे के 10 विकेट से रौंदा

बुलावायो (जिंबाब्वे)। साईम अयूब ने 53 गेंद में करियर का पहला एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय शतक जड़ा जिससे पाकिस्तान ने मंगलवार को यहां दूसरे एकदिवसीय मैच में जिंबाब्वे को 10 विकेट से रौंद दिया।जिंबाब्वे के 146 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान ने बाएं हाथ के बल्लेबाज अयूब की 62 गेंद में 17 चौकों और तीन छक्कों से नाबाद 113 रन की पारी की बदौलत सिर्फ 18.2 ओवर में बिना विकेट खोए 148 रन बनाकर जीत दर्ज की। यह पाकिस्तान की ओर से एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में तीसरा सबसे तेज शतक है।अब्दुल्लाह शफीक 48 गेंद में चार चौकों की मदद से 32 रन बनाकर नाबाद रहे।

बोपन्ना, नागल पीएसपीबी इंटर-यूनिट टेनिस प्रतियोगिता में लेंगे भाग

पुणे। रोहन बोपन्ना और सुमित नागल 27-30 नवंबर तक यहां डेक्कन जिमखाना टेनिस कोर्ट में होने वाले 43वें पीएसपीबी इंटर-यूनिट लॉन टेनिस टूर्नामेंट में स्टार आकर्षण होंगे।टूर्नामेंट में प्रार्थना थोम्बरे, अंकिता रैना, युकी भांबरी और विष्णु वर्धन जैसे शीर्ष भारतीय खिलाड़ी भी हिस्सा लेंगे। टूर्नामेंट में पुरुष, महिला और वेटरन्स वर्ग में व्यक्तिगत एवं टीम प्रतियोगिताएं होंगी। इसके मुकाबले आईटीएफ नियमों के अनुसार खेले जाएंगे।

चुनावों से पहले पांच राज्य गोल्फ संघ निलंबित

नई दिल्ली। भारतीय गोल्फ यूनियन (आईजीयू) के पांच राज्य संघों को आगामी चुनावों से पहले निर्वाचन अधिकारी ओपी गर्ग ने निलंबित कर दिया है। इन संघों पर लगभग अस्तित्वहीन होने और संचालन संस्था के दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने का आरोप है। हिमाचल प्रदेश प्रोऐम गोल्फ संघ, अरुणाचल प्रदेश गोल्फ संघ, मध्य प्रदेश गोल्फ संघ, नागालैंड गोल्फ संघ और सिक्किम राज्य गोल्फ संघ वे पांच संघ है जिन्हें 15 दिसंबर को होने वाले चुनाव से प्रतिबंधित किया गया है।

महान हॉकी खिलाड़ी अशोक कुमार की हालत स्थिर

नई दिल्ली। भारत के पूर्व हॉकी खिलाड़ी और मेजर ध्यानचंद के बेटे अशोक कुमार की शहर के एक अस्पताल में एंजियोप्लास्टी हुई और अब उनकी हालत स्थिर है। उनके पारवारिक सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उनकी एंजियोप्लास्टी सोमवार को हुई। अशोक कुमार को रविवार को छाती में दर्द की शिकायत पर अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उन्हें दिल का दौरा पड़ा। सूत्र ने कहा , उनकी सफल एंजियोप्लास्टी एस्कॉर्ट्स अस्पताल में हुई। डॉक्टरों ने कुछ स्टेंट डाले है चूंकि उनकी धमनी में ब्लॉकेज पाई गई थी। उन्होने कहा , वह खतरे से बाहर है और उनकी हालत स्थिर है।

वेस्टइंडीज जीत के करीब, चौथे दिन गिरे 17 विकेट

नॉर्थ साउंड। बांग्लादेश की टीम पहले क्रिकेट टेस्ट के चौथे दिन वेस्टइंडीज से 224 रन पीछे है और दूसरी पारी के उसके तीन ही विकेट बाकी है। जीत के लिए 333 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए बांग्लादेश ने चौथे दिन के आखिर में सात विकेट 109 रन पर गंवा दिए थे। चौथे दिन 17 विकेट गिरे जिनमें से 14 तेज गेंदबाजों ने लिए। खराब रोशनी के कारण लगातार तीसरे दिन खेल रोके जाने के समय जाकिर अली 15 रन बनाकर खेल रहे थे। उन्होंने मेहदी हसन मिराज (45) के साथ 43 रन की साझेदारी की। खेल समाप्त होने से चार ओवर पहले मेहदी आउट हो गए।

संघर्षों ने हर हालात का सामना करने का आत्मविश्वास दिया : यशस्वी

भाषा। पर्थ

क्रिकेट खेलने का सपना पूरा करने के लिए उत्तर प्रदेश से 11 बरस की उम्र में ट्रेन पकड़कर मुंबई पहुंचे यशस्वी जायसवाल मैदानकर्मियों के साथ टेंट में रहे और रात को पानी पुरी बेचकर अपना गुजारा चलाया लेकिन अतीत के इन संघर्षों ने उन्हें मैदान के भीतर और बाहर हर लड़ाई के लिए तैयार कर दिया। कारपेट बनाने के लिए मशहूर भदोही से आस्ट्रेलिया के पर्थ तक जायसवाल का सफर उनकी लगन, प्रतिबद्धता और जिजीविषा की कहानी कहता है। इन संघर्षों से मिले अनुभव का इस्तेमाल वह मैदान के भीतर और बाहर की हर लड़ाई जीतने के लिए कर रहे हैं। आस्ट्रेलिया के खिलाफ यहां पहले टेस्ट में शानदार शतक जमाने वाले जायसवाल को विराट कोहली के बाद भारतीय बल्लेबाजी का अगला सितारा माना जा रहा है। जायसवाल ने आस्ट्रेलियाई टीवी प्रसारक मार्क हॉवर्ड से कहा , यह ऐसी चीज है (अपनी कहानी) जो मुझे आत्मविश्वास देती है कि मैं किसी भी स्थिति से बाहर निकल सकता है। मैं हमेशा संघर्ष का सामना करने को तैयार रहता हूं। मुझे चुनौतियों का सामना करने में मजा आता है और मैं हर लड़ाई जीतना चाहता हूं। बाईस वर्ष के इस बल्लेबाज ने कहा , इससे मैं यही सीखता हूं और मुझे लगता है कि मैं खुशकिस्मत हूं कि ऐसी जिंदगी मिली जिससे मुझे खुद के बारे में सीखने का मौका और आत्मविश्वास मिला। जीवन में अलग अलग तरह की चुनौतियों का सामना करने का हौसला मिला। उन्होंने कहा , यह अद्भुत है और मैं जो कुछ भी कर रहा हूं , उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं वही कर रहा हूं जिससे मुझे प्यार है। मैं हर गेंद का मजा लेना चाहता हूं। पर्थ में पहली पारी में खाता भी नहीं खोल पाने के बाद दूसरी पारी में शतक पूरा होने के बाद अलग अंदाज में जश्न के बारे में पूछने पर जायसवाल ने कहा , मैने अलग अंदाज में शतक पूरा किया। मैं दिमाग में कुछ और सोच रहा था और अचानक कुछ और हो गया , जिसके बाद मैं सोच रहा था कि अब क्या क-रूं। मैंने फिर सोचा , चलो ठीक है। मैं इस पल का मजा लेता हूं। मैं भाग्यशाली हूं और यह अनुभव मेरे साथ हमेशा रहेगा। मैंने अपने सभी प्रियजनों और प्रशंसकों को चुंबन दिया। मैं इसके जरिए अपना प्यार उन तक पहुंचाना चाहता था। उन्होंने कहा , मैंने वाट्सअप पर अपने परिवार को कॉल किया और उनके साथ भी जश्न का हिस्सा बना।

तेंदुलकर और कोहली की विरासत को आगे बढा सकता है जायसवाल : ग्रेग चैपल

पर्थ। भारत के पूर्व कोच ग्रेग चैपल का मानना है कि यशस्वी जायसवाल मे सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली की बल्लेबाजी में उत्कृष्टता की परंपरा को आगे ले जाने का माद्दा है। सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड के लिए अपने कॉलम में चैपल ने कहा कि वह आस्ट्रेलिया के खिलाफ यहां पहले टेस्ट मे 161 रन की पारी खेलने वाले जायसवाल से काफी प्रभावित है। भारत ने पहला टेस्ट 295 रन से जीता। चैपल ने लिखा , यह युवा सलामी बल्लेबाज निर्भीक है और सचिन तेंदुलकर तथा विराट कोहली की तरह उत्कृष्ट बल्लेबाजी की विरासत को आगे ले जा सकता है। वर्ष 2005 से 2007 के बीच भारत के कोच रहे चैपल ने पारंपरिक प्रारूप मे युवाओ को तैयार करने में भारतीय और आस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड की रणनीति में भारी अंतर को भी रेखांकित किया। उन्होंने लिखा , जायसवाल का सफर दिखाता है कि भारत की रणनीति और बुनियादी ढांचे ने कैसे विश्व क्रिकेट में उसका दबदबा बनाया है। भारत के लिए खेलने का सपना पूरा करने के लिए उसे सर्वश्रेष्ठ प्रतिस्पर्धाओ की तलाश में दस वर्ष की उम्र में यह युवा बल्लेबाज मुंबई आया था। चैपल ने लिखा , भारतीय अंतिम एकादश में जगह बनाना कितना मुश्किल है , यह देखते हुए उसकी प्रतिबद्धता गजब की है।

एडीलेड टेस्ट के लिए टीम में बदलाव नहीं करेगा आस्ट्रेलिया : मैक्डोनाल्ड

पर्थ। आस्ट्रेलिया के कोच और चयनकर्ता एंड्रयू मैक्डोनाल्ड ने कहा है कि पहले टेस्ट में भारत के हाथों 295 रन से हारने वाली टीम में कोई बदलाव नही किया जाएगा हालांकि हरफनमौला मिचेल मार्श की फिटनेस को लेकर चिंताएं है। मैक्डोनाल्ड ने बताया कि उनकी टीम छह दिसंबर से शुरू हो रहे दिन रात के टेस्ट के लिए पूर्व निर्धारित कार्यक्रम से पहले ही एडीलेड पहुंचेगी ताकि अतिरिक्त अभ्यास कर सके। उन्होने क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू से कहा , पर्थ टेस्ट के लिए जो लोग चेंज रूम मे थे, वही एडीलेड में भी होंगे। बदलाव करने पर हमेशा विचार होता है लेकिन हालात के अनुसार टीम चुनी जाती है।

गुकेश ने दूसरी बाजी में लिरेन से ड्रा खेला

भाषा। सिंगापुर

भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने मंगलवार को यहां विश्व शतरंज चैम्पियनशिप की दूसरी बाजी में गत चैंपियन डिंग लिरेन से ड्रा खेला। चौदह बाजियों के इस मैच के शुरुआती मुकाबले को सोमवार को गंवाने वाले गुकेश ने काले मोहरों से खेलते हुए चीन के अनुभवी खिलाड़ी को ड्रा पर रोककर अच्छी वापसी की। पहला मुकाबला जीतने वाले लिरेन के पास अब 1.5-0.5 की बढ़त है। चेन्नई के खिलाड़ी ने मुकाबला ड्रॉ होने के बाद कहा, विश्व चैम्पियनशिप मैच में काले मोहरों के साथ ड्रा हमेशा अच्छा होता है। यह मैच अभी शुरुआती चरण में है और हमारे पास अभी काफी समय है। अठारह वर्षीय गुकेश विश्व खिताब के लिए सबसे कम उम्र के दावेदार हैं और वह विश्वनाथन आनंद के बाद यह खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बनने की कोशिश कर रहे हैं। आनंद ने अपने शानदार करियर में पांच बार यह खिताब अपने नाम किया है। गुकेश ने कहा, विश्व चैम्पियनशिप में खेलने वाले किसी भी खिलाड़ी पर दबाव होना लाजमी है। यहां बहुत दबाव है। मैं हालांकि इसे एक चुनौती के तौर पर देख रहा हूं कि मैं इतने सारे लोगों और अपने देश का प्रतिनिधित्व कर सकता हूं। उन्होंने कहा, मैं एक समय में एक मैच पर ध्यान दे रहा हूं। उम्मीद है कि चीजों को अपने पक्ष में कर पाउंगा। इस चैम्पियनशिप में 7.5 अंक तक पहुंचने वाला खिलाड़ी विजेता बनेगा। इसकी पुरस्कार राशि 2.5 मिलियन डॉलर है। चीन के 32 साल के लिरेन ने कहा कि वह दूसरे मुकाबले को ड्रॉ करके संतुष्ट है। उन्होंने कहा, शुरुआती मुकाबले में मैंने कुछ नया आजमाया था और जाहिर है ऐसा करने के लिए आपको काफी याददाश्त की जरूरत होती है। मैंने आज भी लीक से हटकर कुछ प्रयास किया।

जूनियर पुरूष एशिया कप हॉकी : आत्मविश्वास से भरी भारतीय टीम का सामना थाईलैंड से

मस्कट (ओमान)। कोच पी आर श्रीजेश की आत्मविश्वास से भरी भारतीय टीम जूनियर एशिया कप पुरूष हॉकी टूर्नामेंट के पहले मैच में बुधवार को थाईलैंड से खेलेगी तो उसका पलड़ा भारी होगा। भारत को पूल ए में कोरिया, जापान, चीनी ताइपै और थाईलैंड के साथ रखा गया है। टूर्नामेंट में इस बार दस टीमें भाग ले रही हैं। बाकी पांच टीमें पाकिस्तान, मलेशिया, बांग्लादेश, ओमान और चीन पूल बी में हैं। भारत ने रिकॉर्ड चार बार 2004, 2008, 2015 और 2023 में खिताब जीता था। पिछले साल फाइनल में भारत ने चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 2 .। से हराया। कप्तान आमिर ने कहा , हमारी टीम काफी मेहनत कर रही है और हमें अच्छे प्रदर्शन का यकीन है।

सुमित-सिकी, ध्रुव व तनीषा मिश्रित युगल के प्री क्वार्टर फाइनल में

- सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल एचएसबीसी वर्ल्ड टूर सुपर 300 बैडमिंटन चैंपियनशिप-2024
- आज से होगी मुख्य ड्रा के अन्य मुकाबलों की शुरुआत

लखनऊ। भारत के बी.सुमित रेड्डी व सिकी रेड्डी की शीर्ष वरीय भारतीय जोड़ी ने सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल एचएसबीसी वर्ल्ड टूर सुपर 300 बैडमिंटन चैंपियनशिप 2024 में मिश्रित युगल में शानदार जीत से अपना अभियान शुरू करते हुए प्री क्वार्टर फइनल में स्थान सुरक्षित किया। योनेक्स सनराइज बाबू बनारसी दास बैडमिंटन अकादमी में मंगलवार को पहले दिन मुख्य ड्रा में मिश्रित युगल के पहले दौर के मुकाबले खेले गए। चैंपियनशिप में बुधवार को मुख्य ड्रा के अन्य वर्गो के मुकाबलों की शुरुआत होगी। आज खेले गए मिश्रित युगल के मुकाबलों में भारत के पांचवी वरीय ध्रुव कपिला व तनीषा क्रैस्टोए सातवीं वरीय रोहन कपूर व रूत्विका शिवानी गड्डे ने भी अंतिम 16 में जगह बना ली। पहले दौर में भारत की आठवीं वरीय असिथ सूर्या व अमृता पीण्की जोड़ी को उलटफेर का सामना करना पड़ा। आज खेले गए मुकाबले में बीण्सुमित रेड्डी व सिकी रेड्डी की शीर्ष वरीय जोड़ी ने भारत के ही एसण्संजीथ व गौरी कृष्णा टीआर की जोड़ी को सीधे गेम में 21-10, 21-18 से हराया। इस जोड़ी ने उम्दा कोर्ट कवरेज के सहारे जीत अपने नाम की। भारत के पांचवी वरीय ध्रुव कपिला व तनीषा क्रैस्टो ने चीन के झांग हान यू व बाओ ली जिंग को 12-21, 21-15, 21-17 से हराया। चीनी जोड़ी ने पहले गेम में जीत दर्ज की। इसके बाद भारतीय जोड़ी ने कोर्ट पर शानदार जुगलबंदी का प्रदर्शन किया और दूसरे व तीसरे गेम में जीत अपने नाम कर ली। मिश्रित युगल के पहले दौर के अन्य मुकाबलों में भारत के सातवीं वरीय रोहन कपूर व रूत्विका शिवानी गड्डे ने भारत के नितिन एचवी व अनघा अरविंदा पी को 21-14, 21-12 से हराया। इंग्लैंड के रोरी ईस्टन व लिज्जी टालमैन ने मलेशिया के लियू झून व जू पेई की को 21-11, 18-21, 21-14 से हराया। चीन के झोऊ जी हांग व यांग जिया यी ने भारत के सात्विक रेड्डी कनापुरम व वैष्णवी खडेकर को 21-9, 21-12 से हराया।

सात्विक-चिराग की जोड़ी ने नाम वापस लिया

लखनऊ। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारत की स्टार पुरुष युगल जोड़ी ने मंगलवार को सैयद मोदी इंटरनेशनल सुपर 300 बैडमिंटन टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया। विश्व की पूर्व नंबर एक जोड़ी को यहां खिताब जीतने का प्रबल दावेदार माना जा रहा था लेकिन सात्विक की चोट की स्थिति ठीक नही होने के कारण उन्हें नाम वापस लेना पड़ा। सात्विक कंधे की चोट के कारण पेरिस ओलंपिक के बाद लंबे समय तक प्रतिस्पर्धा से दूर रहे।उन्होने पिछले सप्ताह चीन मास्टर्स सुपर 750 टूर्नामेंट मे वापसी की और सेमीफाइनल में पहुंचे।चीन मास्टर्स के पहले से इस भारतीय जोड़ी को प्रशिक्षण दे रहे बी सुमित रेड्डी ने कहा कि सात्विक को पूरी तरह से उबरने मे परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उन्होने कहा, सात्विक ने हाल ही मे चोट से वापसी की है। वे लंबे समय के बाद एक साथ खेल रहे है। शेनजेन मे सेमीफाइनल तक के अभियान में उन्हे आराम करने का मौका नही मिला। कई बार चोट से पूरी तरह से उबरना मुश्किल होता है। उन्होंने अपने शरीर और आगामी सत्र को ध्यान मे रखते हुए टूर्नामेंट से हटने का फैसला किया।

यूपी की मानसी सिंह महिला एकल के मुख्य ड्रा में

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की प्रतिभाशाली शटलर मानसी सिंह ने सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल एचएसबीसी वर्ल्ड टूर सुपर 300 बैडमिंटन चैंपियनशिप 2024 में दमदार प्रदर्शन के साथ महिला एकल के मुख्य ड्रा मे जगह बना ली। मानसी सिंह ने क्वालीफायर में भारत की ही प्रशंसा बोनम को तीन गेम तक चले मैच में 21.11ए 22.24ए 21.12 से हराया। मानसी सिंह का अब महिला एकल के मुख्य ड्रा के पहले दौर में थाईलैंड की चौथी वरीय पोर्नपिचा चोइइकेवोंग से मुकाबला होगा। मानसी सिंह ने इस जीत के बाद खुशी जताते हुए कहा कि अपने घरेलू कोर्ट मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की पूरी कोशिश करुंगी।टूर्नामेंट में क्वालीफायर मुकाबलों के खत्म होने के बाद महिला एकल में मानसी सिंह के साथ चीन की हान कियान शीए भारत की तन्वी शर्मा व भारत की ही नव्या कंडेरी भी मुख्य ड्रा के पहले दौर में पहुंच गई। पुरुष एकल में भारत के सिद्धार्थ प्रताप सिंहए सनीथ दयानंदए आरएस संजीवी कुमार और मलेशिया के शोलेह ऐदिल भी मुख्य ड्रा में पहुंच गए।

क्विक न्यूज

उम्मीद है कि कभी फिर साथ होंगे, दिल्ली कैपिटल्स के सह मालिक जिंदल ने पंत से कहा

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स के सह मालिक पार्थ जिंदल ने मंगलवार को ऋषभ पंत के टीम से अलग होने पर दुख जताने के साथ उम्मीद भी व्यक्त की कि भविष्य में वे फिर कभी साथ आएंगे। दिल्ली ने आईपीएल की मेगा नीलामी से पहले कप्तान पंत को रिलीज (अपने साथ बरकरार नही रखना) कर दिया था। पंत को रिकॉर्ड 27 करोड़ रूपए में लखनऊसुपर जाइंट्स ने खरीदा। दिल्ली ने राइट टू मैच का प्रयोग करके पंत को वापिस लेने की कोशिश भी की लेकिन लखनऊ की आखिरी बोली का मुकाबला नही कर सका। जिंदल ने एक्स पर भावुक पोस्ट में लिखा , ऋषभ तुम मेरे छोटे भाई हो और हमेशा रहोगे। मै तहेदिल से तुम्हे प्यार करता हूं। मैने हमेशा कोशिश की कि यह सुनिश्चित करूं कि तुम खुश हो और तुम्हारे साथ अपने परिवार की तरह रहा।

वेंकटेश को टीम में रखना हमारी प्राथमिकता में शामिल था इसलिए पूरा जोर लगा दियाः ब्रावो

जेद्दा। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के मेंटर (मार्गदर्शक) और वेस्टइंडीज के पूर्व ऑलराउंडर ड्वेन ब्रावो ने आईपीएल खिताब जीतने वाली टीम के मुख्य खिलाड़ियों को बरकरार रखने के इरादे से वेंकटेश अय्यर को अपने साथ जोड़ने के लिए पूरी ताकत लगाने की टीम की रणनीति का बचाव किया है। केकेआर के लिए कप्तानी के संभावित दावेदार के रूप में देखे जाने वाले वेंकटेश को टीम के साथ जोड़ने ने आलोचनाओं को जन्म दिया है कि अगर उन्हे नेतृत्व दिया जाना टीम प्रबंधन की योजना का हिस्सा था तो उन्हें रिटेन (टीम के साथ बरकरार रखना) क्यों नही किया गया।चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) के साथ चार आईपीएल खिताब जीतने वाले ब्रावो ने कहा, वैंकी (वेंकटेश अय्यर) को जोड़ना हमारे लिए मुख्य प्राथमिकताओ में से एक था, जैसा कि आप देख सकते है हमने उसके लिए पूरा जोर लगा दिया।

आईपीएल मेगा नीलामी में मुंबई इंडियन्स का ध्यान गेंदबाजी संयोजन सही बनाने पर थाः अंबानी

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मेगा नीलामी में अपने गेंदबाजी संयोजन को ठीक करने की रणनीति से उतरी मुंबई इंडियन्स (एमआई) के मालिक आकाश अंबानी ने कहा कि पांच बार की चैम्पियन टीम बाएं हाथ के दो विदेशी तेज गेंदबाजों और दो विदेशी स्पिनरों को अपने साथ जोड़कर उत्साहित है। मुंबई इंडियन्स न्यूजीलैंड के अनुभवी तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट को वापस अपने पाले में लाने में सफल रही। इसके साथ ही उसने इंग्लैंड के बाएं हाथ के गेंदबाज रीस टॉपले, भारत के दीपक चाहर और अफगानिस्तान के युवा गेंदबाज अल्लाह गजांफर के साथ-साथ न्यूजीलैंड के स्पिन गेंदबाजी हरफनमौला मिचेल सेंटनर को टीम में शामिल किया। अंबानी ने जियो सिनेमा से कहा, बल्लेबाजी क्रम में शीर्ष सात स्थान में से हमारे चार स्थान पहले से ही तय थे हमें इस मामले में कुछ ही खिलाड़ियों (बल्लेबाजों) की जरूरत थी।

विश्व मुक्केबाजी ने नए एशियाई परिसंघ का समर्थन किया

बैंकॉक। विश्व मुक्केबाजी (वर्ल्ड बॉक्सिंग) ने एक नए स्थापित पृथक एशियाई मुक्केबाजी परिसंघ के गठन का समर्थन किया है जिसका उद्देश्य पूरे महाद्वीप मे मुक्केबाजी का प्रतिनिधित्व और प्रचार करना है।यह घोषणा मौजूदा एशियाई मुक्केबाजी परिसंघ (एएसबीसी) के अधिकांश सदस्य संघो (36 में से 25) द्वारा शनिवार को बैंकॉक मे एक बैठक के दौरान निलंबित अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ (आईबीए) को छोड़कर विश्व मुक्केबाजी मे शामिल होने के खिलाफ मतदान करने के बाद की गई है।इस मतदान के बाद एएसबीसी के अध्यक्ष पिचाई चुन्हावाजिरा और महासचिव अली सलामेह ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया।थाईलैंड के चुन्हावाजिरा ने जल्द ही विश्व मुक्केबाजी के तत्वावधान में एक नई एशियाई मुक्केबाजी संचालन संस्था बनाने की योजना का खुलासा किया।विश्व मुक्केबाजी ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर अपना समर्थन व्यक्त करते हुए कहा, हम इस खबर का स्वागत करते है कि एशिया मे राष्ट्रीय महासंघों का एक समूह विश्व मुक्केबाजी से जुड़ा एक नया परिसंघ स्थापित करेगा। हम इस मुद्दे पर मजबूत नेतृत्व और ओलंपिक मुक्केबाजी के प्रति प्रतिबद्धता के लिए थाईलैंड मुक्केबाजी संघ के पिचाई चुन्हावाजिरा को धन्यवाद देते है।

आईपीएल नीलामी में नहीं चुने जाने के बाद कमियों को दूर करना होगा पृथ्वी साव को

नई दिल्ली। भारतीय बल्लेबाजी पृथ्वी साव दो दिन पहले एक यूट्यूब व्लॉग पर दिखाई दिए जहां उन्होने सचिन तेंदुलकर से मिली सबसे अच्छी एक पंक्ति की सलाह के बारे में बात की। पच्चीस वर्षीय पृथ्वी ने सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर करण सोनावणे को उनके यूट्यूब चैनल फोकस्ड इंडियन पर बताया कि इस महान बल्लेबाज ने उन्हे सलाह दी थी कि अनुशासन प्रतिभा को मात देता है।पृथ्वी के लिए सोमवार का दिन मुश्किल रहा होगा क्योकि जेद्दा में आईपीएल की बड़ी नीलामी मे उन्हें कोई खरीदार नही मिला। भारत की 2018 अंडर-19 विश्व कप विजेता टीम के कप्तान पृथ्वी को भारतीय क्रिकेट के अगले स्टार के रूप मे देखा जा रहा था और छह सत्र पहले टेस्ट पदार्पण पर शतक लगाने के बाद उनसे उम्मीदे बढ़ गई थी। शायद अब वह समय आ गया है जब उन्हें तेंदुलकर की सलाह को महज शब्दो तक सीमित नही रहने देना चाहिए और उस पर अमल करना चाहिए। नीलामी मे दो बार उनका नाम आया और 75 लाख रुपए के आधार मूल्य के बावजूद उनके लिए एक भी बोली नही लगी। एक टेबल पर सौरव गांगुली थे, दूसरी पर राहुल द्रविड़। आशीष नेहरा, पार्थिव पटेल, जस्टिन लैंगर, रिकी पोंटिंग, स्टीफन फ्लेमिंग और डेनियल विटोरी भी बोली लगाने के लिए सलाल दे रहे थे लेकिन पृथ्वी मे किसी की भी दिलचस्पी नही थी। छह साल लंबा समय है और आईपीएल मे नही बिकने के बाद पृथ्वी अब दोहरे पर खड़े है।

लोरेंजो ने जेसीबी पुरस्कार जीता

लखनऊ। स्पीकिंग टाइगर बुक्स द्वारा प्रकाशित उपमन्यु चटर्जी द्वारा लिखित लोरेंजो सर्चेस फॉर द मीनिंग ऑफ लाइफ को साहित्य के लिए 2024 जेसीबी पुरस्कार के विजेता के रूप में घोषित किया गया है, और 25 लाख रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह कार्यक्रम जेसीबी इंडिया मुख्यालय, बल्लभगढ़ में आयोजित किया गया था। प्रतिष्ठित ट्रॉफी, जो दिल्ली के कलाकार जोड़ी, ठुकराल और टैगरा द्वारा बनाई गई एक मूर्ति है, जिसका शीर्षक श्मिरर मेल्टिंगश् है, उपमन्यु चटर्जी को प्रदान की गई। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार जेसीबी के चेयरमैन लॉर्ड बैमफोर्ड की ओर से जेसीबी इंडिया के सीईओ और एमडी दीपक शेट्टी द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए, श्री शेट्टी ने कहा, साहित्य के लिए जेसीबी पुरस्कार की परिकल्पना लॉर्ड बैमफोर्ड द्वारा भारतीय साहित्य की भारतीयता का जश्न मनाने के लिए की गई थी। पिछले कुछ वर्षों में इस पुरस्कार ने कुछ सबसे विविध कार्यों को आकर्षित किया है और यह वर्ष भी कुछ अलग नहीं है। उन्होंने इस मौके पर पूरे जेसीबी परिवार की ओर से उपमन्यु चटर्जी की लोरेंजो सर्चेस फॉर द मीनिंग ऑफ लाइफ को बधाई दी।श्री शेट्टी ने कहा की क्षेत्रीय भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य में पाठकों को देने के लिए बहुत कुछ है। प्रकाशक उच्च-गुणवत्ता वाले अनुवादों का समर्थन करने और उन्हें ब?ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ताकि ये कार्य पुराने और युवा दोनों पाठकों के लिए उनकी प्राथमिकताओं के अनुरूप प्लेटफार्मों के माध्यम से पहुंच योग्य हों।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाषः 011-40110455 से प्रकाशित तथा जागरण प्रकाशन लिमिटेड, डी-210, 211 सेक्टर 63 नोएडा फोन नंबर 01204615800 एक्सटेंशन 142, से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाषः011-693425001